प्रकाशक एवं लेखक :
महेन्द्र सिंह जागलान
आबकारी निरीक्षक (से.नि.)
मकान नं. 2569, अर्बन इस्टेट,
जीन्द (हरियाणा)-126102
गांव जलालपुर कलां (छाना)
मोबाइल : 09255443803
दूरभाष : 01681-245769
ई-मेल : msjaglan2569@gmail.com

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित है।

प्रथम संस्करण : दीपावली 2017 ई०

प्रथम बार : 500 प्रतियाँ

टाईपिंग एवं साज-सज्जा
देवेन्द्र गर्ग, रोहतक
मोबाइल : 9034142810

सहयोग राशि : 300 रुपये

मुद्रक : **सुवीरा मुद्रणालय**
132 के.वी. पावर हाउस के सामने,
सुखपुरा बाईपास, रोहतक-124001
मो. : 07027242111, 09729090111
ई-मेल : suvirapress@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पेज सं.
1.	शुभ-संदेश : डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक	3
2.	शुभ-संदेश : आजाद सिंह लाकड़ा	5
3.	शुभ-संदेश : राजेन्द्र सिंह शास्त्री	7
4.	लेखक का आत्मकथ्य	9
5.	खाप-पंचायतों के विषय में जानकारी	13
6.	नौगामा खाप के गठन की जरूरत क्यों हुई?	18
7.	हमारा पुराना खानपान एवं दिनचर्या	23
8.	रामराय गांव	27
9.	गांव ईगराह	35
10.	गांव बीबीपुर	40
11.	गांव राजपुरा (भैण)	46
12.	गांव घिमाना	55
13.	गांव जाजवान	58
14.	गांव पोकरी खेड़ी	62
15.	गाँव ईटल (जीन्द)	66
16.	गांव जलालपुर कलां (जीन्द)	70
17.	गांव जलालपुर खुर्द	90
18.	गांव बहबलपुर	95
19.	गांव ईक्कस	104
20.	गांव गुलकनी	116
21.	गांव रामगढ़	123
22.	गांव ईटल खुर्द (सिसर)	125
23.	गांव गोबिन्दपुरा (शादीपुरा)	132
24.	गांव रामराय खेड़ा	135
25.	गांव ढाणी (रामगढ़)	136

26.	गांव बागनवाला	138
27.	गांव कर्मगढ़	139
28.	बस्ती सिरसाखेड़ी	140
29.	जेलाखेड़ा (थेह)	141
30.	नौगामा खाप के वीर शहीदों की सूची	143
31.	नौगामा खाप के वर्तमान सरपंचों की सूची	144
32.	नौगामा खाप की प्राईवेट शिक्षण संस्थाएँ	145
33.	चितंग, हाँसी शाखा, उगलखानी नहर	146
34.	खाप के सज्जनों के सम्पर्कसूत्र नाम सहित	149
35.	नौगामा खाप पर गीत	155
36.	बदलते समाज की रागनी	157
37.	नौगामा खाप की विभूतियाँ फोटो सहित	
38.	आर्यसमाज के नियम	

❑❑❑

DR. M.S. MALIK, IPS (Retd.)
Former Director General of Police &
Chandigarh / Panchkula
State Vigilence Bureau, Haryana

PRESIDENT JAT SABHA
Chandigarh / Panchkula
C/o Jat Bhawan, 2-B, Sector-27A
Madhya Marg, Chandigarh-160019
Mobile : 9872077609

शुभ सन्देश

प्रिय जागलान,

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आप 'नौगामा खाप का इतिहास' नामक एक ग्रंथ की रचना कर रहे हैं, जिसके लिए बहुत-बहुत हार्दिक बधाई। सबसे पहले आपने मेरे गाँव 'जलालपुर कलां की कहानी' एवं 'जागलान गोत्र का इतिहास' नामक पुस्तक लिखकर हरियाणा के सभी पुस्तकालयों, धर्मशालाओं व अन्य समाज के बुद्धिजीवी लोगों के पास नि:शुल्क वितरण की है। आप द्वारा लिखित पुस्तक से आपकी खाप का अतीत वर्तमान का दस्तावेज सिद्ध होगा। आपने अपनी खाप के सभी छोटे-बड़े 21 गांवों में घूमकर प्रत्येक गांव की जानकारी जैसे गांव का नामकरण, गांव कब बसा, इनका वरिष्ठ पुरुष किस गांव से आया, खाप का अर्थ नौगामा खाप (जिसमें पहले नौ गांव होते थे) खाप का गठन कब हुआ, इसकी आवश्यकता क्यों पड़ी, प्रत्येक गांव की बारीकी से जानकारी, वर्ष 1952 से नवगठित पंचायतों के सरपंचों एवं मुखिया के नाम, गांव के प्रमुख एवं राजपत्रित अधिकारियों की सूची, खाप के आज तक के 26 शहीद वीरों की सूची, गांव के ऐतिहासिक स्थलों एवं महान विभूतियों के चित्रों के साथ 21 गांवों के ऊपर गीत से प्रत्येक गांव की विशेषता दशाई गई है। खाप के लोगों से सम्पर्क साधने हेतू प्रत्येक गांव के मौजिज, भद्र पुरुषों के सम्पर्क नम्बरों की लिस्ट भी छापी गई है ताकि विशेष अवसरों पर जब खाप हो तो निमन्त्रण भेजा जा सके।

इस पुस्तक की एक-एक कापी सभी भाइयों तक पहुंचे ताकि आने वाली पीढ़ियां अपने इतिहास को पढ़कर गौरवान्वित महसूस करें। अपने इतिहास के नक्शे कदम पर चलते हुए इतिहास के अनुरूप ही समाज के लिए भविष्य में अच्छे कार्य करें।

मैं नौगामा खाप के इतिहास के लेखक श्री महेन्द्र सिंह जागलान को पुनः हार्दिक बधाई देता हूं तथा परमपिता परमात्मा से इनके स्वास्थ्य लाभ, सुखमय जीवन व निरन्तर कामयाबी की प्रार्थना करता हूं कि वे अपने लेखनी से आने वाले समय में समाज की मार्गदर्शन करते रहें।

अपका

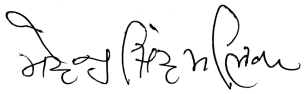

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस. (सेवानिवृत्त)

❑❑❑

आजाद सिंह लाकड़ा
प्रधान-दीनबन्धु छोटूराम भवन, केशवपुरम
एवं जाट मित्र मण्डल, दिल्ली-११००३५
मो० 09811449292

शुभ सन्देश

आदरणीय श्री जागलान जी,

मुझे यह जानकर असीम प्रसन्नता हो रही है कि श्री महेन्द्र सिंह जागलान द्वारा नौगामा खाप का इतिहास नामक पुस्तक लिखी जा रही है जो अब पूर्ण हो चुकी है और प्रकाशित होने जा रही है। इससे पूर्व आपके द्वारा रचित दो पुस्तकें 'मेरे गाँव जलालपुर कलां की कहानी' व 'जागलान गोत्र का इतिहास' जो अतीत-वर्तमान का दस्तावेज सिद्ध हुआ है। किसी भी जाति, खाप, तपा, वंश का इतिहास उसकी शक्ति, गौरव-गाथा तथा गरिमा का लेखा-जोखा होता है। इसी प्रक्रिया में महेन्द्र सिंह जागलान ने खाप का इतिहास परक वृत्तान्त का लेखन किया है। इस पुस्तक में इन्होंने खाप का अर्थ, पंचायत का अर्थ, नौगामा खाप के गठन की क्यों जरूरत पड़ी, नौगामा खाप का नामकरण, नौगामा खाप का गठन, हमारा पुराना खानपान एवं दिनचर्या के साथ आज के 21 गाँवों की सूची, लोगों का रहन-सहन, कार्य व्यवहार के साथ-साथ प्रत्येक गाँव का नामकरण, किस वर्ष गाँव बसा, वर्ष 1952 से आज तक की पंचायतों के सरपंचों के नाम, गाँवों के गणमान्य व्यक्तियों, राजपत्रित अधिकारियों के नाम, प्रत्येक गाँव की अन्य जानकारी, इसके अतिरिक्त गाँवों के ऐतिहासिक स्थलों, महान विभूतियों के चित्र, खाप के मौजिज लोगों की जीवनियाँ लिखी हैं। नौगामा खाप की नवगठित सरपंचों के चित्रों के साथ 21 गाँवों के ऊपर लिखा गीत से प्रत्येक गाँव के नामकरण की झलक मिलती है। इसमें आज तक विभिन्न क्षेत्रों में हुए 26 वीर शहीदों को भी पंक्तिबद्ध करके उनको याद किया गया है ताकि आने वाली पीढ़ियां उन्हें नतमस्तक होकर याद करती रहें।

आशा ही नहीं अपितु विश्वास भी है कि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी खाप के इतिहास को पढ़कर गौरवान्वित होगी। इस पुस्तक से समाज के नव निर्माण पर भी भविष्य चिन्तन कर सकेगा।

मैं नौगामा खाप के इतिहास के प्रकाशन पर लेखक महेन्द्र सिंह जागलान जी को हार्दिक बधाई देता हूँ। इनकी लेखनी भविष्य में भी गतिमान रहे, इसके लिए ईश्वर से उनके स्वस्थ रहकर, शतायु होने की कामना करता हूँ। पुनः साधुवाद।

शुभेच्छु

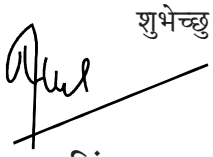

आजाद सिंह लाकड़ा

❑❑❑

राजेन्द्र सिंह शास्त्री
प्राध्यपक (से.नि.) हिन्दी स्कूल, गांव रामकली
म.नं. 1593, अर्बन इस्टेट, जीन्द
मो० 9416557122

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि महेन्द्र सिंह जागलान नौगामा खाप का इहिास नामक अपने अथक परिश्रम से लिख कर भेंट की है। इन्होंने इससे पहले दो पुस्तकें भी लिखे हैं। इससे प्रतीत होता है कि साहित्यिक व्यक्तित्व न होते हुए भी इन्होंने कितना प्रयास किया होगा। यद्यपि इनके द्वारा प्रस्तुत कृयिां साहित्य की दृष्टि से इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। संसार में जो भी व्यक्ति महान हुए हैं वे साधारण कार्यों को गरिमापूर्ण ढंग से करके ही महानता की पदवी को प्राप्त हुए हैं। कुछ लोग जो मेहनत नहीं कर सकते, संयमी नहीं हैं, कुछ करने का जज्बा नहीं है ऐसे व्यक्ति इनके आलोचक हो सकते हैं परन्तु **'न्यायात् पदं न विचलन्ति'** के मार्ग पर चलकर अपने विचारों को सुदृढ़ बनाकर कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ होकर पीछे मुड़कर नहीं देखता वह सफलता प्राप्त करता है। महेन्द्र सिंह जागलान उसी लगन और मेहनत से इस काम में लगे हुए हैं। तीन प्रकार की प्रवृत्त वाले लोग माने गए हैं :-

अधमा, अधनम्, रच्छन्ति, धनं मानं चमध्यमाः।
उत्तमः मानस् इच्छन्तिः मानो हि महताम् धनम्।।

अधम प्रवृत्ति वाले केवल धन चाहते हैं, मध्यम धन और मान दोनों चीजे चाहते हैं जबकि श्रेष्ठ व्यक्ति केवल मान चाहतेहैं। महेन्द्र सिंह जागलान का इस दिशा में यही प्रयास है और यह इन्हें उत्तमता की ओर ले जा रहा है। यह कृति सामाजिक परिवेश पर आधारित है। इसमें अपनी परम्पराओं का बड़ी सादग्री से चित्रण किया है। यद्यपि भाषिक दृष्टि से न्यूनता अवश्य दिखाई देगी। इनकी मान्यता है कि समाज विशेषकर युवाओं को अपनी संस्कृति, आचार-विचार, रहन-सहन तथा जीवन-पद्धति का ज्ञान

हो सके ।

मनुष्य अपने पुरखों व सामाजिक परिवेश पहचानकर अपना जीवन पथ निर्धारित करता है ताकि एक सामान्य व्यक्ति भी अपने समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से प्रेरणा पाकर उनके आदर्श, सूझबूझ वले व्यक्ति का अनुकरण करके सद्भावना, सद्बुद्धि निष्काम कर्म अनथक परिश्रम और संयम के सहारे जीवन पथ के शिखर पर आरूढ़ हो सके। इनका यह प्रयास अपनी युवा पीढ़ी को मार्गदर्शन में सहायक होगा साथ ही जन जागृति का कार्य करेगा। जिन बातों की कमी रह गई होगी लोग स्वयं परामर्श देने आएंगे। कुछ महापुरुष त्यागी, वीर, दानी छुट गए होंगे उनका जीवन परिचय भी जुड़ सकता है। मैं अन्त में जन साधारण के साथ ही बुद्धिजीवियों से प्रार्थना करूंगा जो भी इसमें कमी रह गई होगी उसकी आलोचना न करके मार्गदर्शन करके अगले संस्करण और परिष्कृत बनाने में सहयोग करें। साथ ही मैं प्रियवर महेन्द्र सिंह जागलान का जिन्होंने इस पावन पुस्तक की सामग्री का बहुत ही कौशल के साथ संकल्प और सम्पादन किया है, को हार्दिक साधुवाद और आशीर्वाद देता हूँ।

शुभेच्छा :

राजेन्द्र सिंह शास्त्री

❑❑❑

लेखक का आत्मकथ्य

वैसे तो हर गाँव, हर शहर, हर गौत्र, हर खाप, हर जिले और राज्य का अपना इतिहास होता है। जिस गाँव और खाप ने अपने इतिहास को भूतकाल से उठाकर भविष्य के सामने रख दिया, आज लोग उस इतिहास के गवाह बने हैं। आज भी बहुत से गोत्र एवं खाप हैं, जिनका इतिहास या तो यादों में हैं या फिर अधूरा सा है। हर किसी को अपने इतिहास को सहेजकर रखने के लिए आगे आना होगा वरना आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए न तो हमारे संस्कार बचेंगे और ना ही रीति रिवाज। नौगामा खाप के 21 गाँवों के इतिहास को पन्नों में दर्ज करने के लिए हाल ही में खाप के मौजिज लोगों ने अपने-अपने गाँवों की जानकारी देने के लिए आश्वासन पर खाप का इतिहास लिखने का प्रयास किया है। इतिहास से जुड़ी जानकारियाँ खाप के वरिष्ठ नागरिकों, बुद्धिजीवियों व अन्य जानकार लोगों से इकट्ठा कर उन्हें पन्नों में दर्ज करने का मैंने प्रयास किया है। आज तक मेरी खाप के किसी भी इतिहासकार बुद्धिजीवी ने इसको लिखने का प्रयास नहीं किया है। इतिहास किसी भी समाज का सही दर्पण होता है। इतिहास से ही किसी गाँव, खाप की उन्नति, अवनति, उत्थान-पतन, मान-सम्मान के बारे में पढ़ने एवं जानने को मिलता है। यदि किसी जाति, गोत्र, खाप को मिटाना हो तो उसकी सभ्यता एवं संस्कृति को मिटा दो। यह पूरे देश में सभी खापों, सभी धर्मों का सर्वमान्य सिद्धान्त है। इतिहास हमें यह बताता है कि हम कौन थे, क्या बन गए। इतिहास से हमें काफी कुछ सीखने को मिलता है। इतिहास से ही हम भविष्य में अपनी उन्नति एवं तरक्की के स्त्रोत्र बनाते हैं। इतिहास का अध्ययन मनुष्य को उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है।

मेरी शिक्षा काल से ही धार्मिक एवं ऐतिहासिक बातें अपने बुजुर्गों से जानने में रूचि रही है। यह रूचि आगे चलकर मेरी सरकारी सेवाकाल में भी रही है। मेरी 35 वर्ष की सरकारी सेवा एक्साईज-इन्स्पैक्टर के तौर पर पूरी करने के बाद पैंशन पर आ गया। मैं वर्ष 1977 से कर्मचारी तालमेल कमेटी, उसके बाद मेरी विभाग की एसोसिएशन सम्बन्धित हरियाणा कर्मचारी महासंघ से जुड़ा रहा तथा एसोसिएशन का जिला प्रधान, प्रदेश महासचिव, प्रेस प्रवक्ता व मुख्य संयोजक के पदों पर रहते हुए प्रेस नोट देने व भाषण देने का अभ्यास हो गया। इससे पहले मैंने एक वर्ष का समय लगाकर जनवरी, 2012 में मेरे गाँव जलालपुर कलां की कहानी नामक पुस्तक लिखी तथा इसके बाद मैंने 20 अगस्त 2013 को जागलान गोत्र का इतिहास (भ्याण गोत्र भी शामिल) नामक पुस्तक लिख कर उसको हरियाणा की सभी जाट धर्मशालाओं, सभी पुस्तकालयों, धार्मिक संस्थाओं व मेरे गोत्र के मुख्य-मुख्य गाँव में इसका विमोचन करवाकर नि:शुल्क भेंट की है। मेरी खाप के प्रमुख बुद्धिजीवियों के अनुरोध करने पर मैंने इस

पुस्तक को लिखने का कार्य दिसम्बर 2014 से शुरू किया। इसके बाद जीन्द जिले की कई खापों के प्रधानों से खापों के बारे व जीन्द क्षेत्र के बारे में जानकारी प्राप्त की। इसके बाद खाप के 21 गांवों में एक सप्ताह लगाकर नौगामा खाप बारे बुजुर्गों व बुद्धिजीवियों से पहले नौगाव कौन-कौन से थे, नौगामा खाप का नामकरण, इसके गठन की जरूरत क्यों पड़ी, नौगामा खाप का विधिवत गठन की तिथि, उस समय हुई बैठक में किस-किस गांव के बुद्धिजीवी, बुजुर्ग इकट्ठे हुए आदि जानकारी के लिए अपनी मोटर साइकिल पर हर रोज बड़े दो गाँव तथा छोटे तीन-तीन गांवों में जाकर जानकारी इकट्ठी की, यह कार्य कठिन था क्योंकि लोगों का मिलना कई बार मुश्किल होता था, कभी पुराना सरपंच नहीं मिलता, कभी नम्बरदार, चौकीदार का ना मिलना। इसके बाद मैंने दो बार अखबारों के माध्यम से लोगों से अपने-अपने गांवों की जानकारियां देने बारे निकलवाया पर कोई जानकारी देने नहीं पहुंचा। इसके बाद समय बीतता गया और मैंने खण्ड विकास अधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर खाप की सभी 1952 से नवनिर्मित पंचायतों का विवरण तथा आंकड़े विभाग से प्रत्येक गांव की हर प्रकार की सूचना के लए प्रर्थना पत्र दिया इसके साथ खाप के सभी गांवों का नक्शा भी उनके नक्शे की मदद से बनवाया गया। सरपंचों व गांवों के आंकड़ें प्राप्त करने में मुझे 6 माह का समय लग गया क्योंकि हर बार पंचायत सचिव को खण्ड विकास कार्यालय में मिलना होता था। पुस्तक लिखने के अलावा मैं तीन चार संगठनों से भी जुड़ा हुआ हूँ और उनकी भी हर महीने मीटिंग होती रहती थी, सो इस पुस्तक को समय कम ही दे पाया। मेरे साथ कुछ घरेलू परेशानियां भी थी जिसमें एक वर्ष से पत्नी को जटिल बीमारी थी तथा कुछ अपरिहार्य कारणों से पुस्तक लिखने में विलम्ब होता चला गया। इस कार्य के लिए मैंने हर गाँव में कम से कम दस-दस बार जाकर गांव की पूरी जानकारी बड़ी मुश्किल से प्राप्त की है तथा हर गांव की चौपालों में इश्तिहार लगाकर गांव की जानकारी देने की अपील भी की है। पुस्तक लिखना कहना आसान है लेकिन इसके लिए दिन भर घूम-घूम कर जानकारियां इकट्ठा करना बहुत ही कठिन कार्य है। जानकारी प्राप्त करने के लिए मैं खाप के करीबन 400 लोगों से मोबाइलों से जुड़ा तथा समय मिलते ही हर रोज के 20-20 फोन करके जानकारी लेता रहा। इसके अतिरिक्त वाट्सएप्प के प्रयोग से भी जानकारी जुटाई। इसके बाद मैं फोटोग्राफर को साथ लेकर हर गांव के एक-एक ऐतिहासिक स्थलों के चित्र जिनसे गांव की पहचान हो, जैसे पुराना कुआँ, मन्दिर, दादा खेड़ा, शहीद स्मारक, चौपाल आदि के लिए तीन-चार दिन लगाए और इनका चित्रण भी पुस्तक में किया है। खाप के 26 वीर शहीद जो वर्ष 1939, 1947, 1957, 1971, 1998, 2002 व 2003 में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में शहीद हुए उनकी जानकारी की सूची बनाई गई, नौगामा खाप के आज 21 गांवों के नामकरण

पर एक गीत भी पुस्तक में शामिल किया गया है। खाप के अलग-अलग गांवों की 18 प्राईवेट शिक्षा संस्थाओं की सूची को जगह दी गई है। खाप के लोगों से सम्पर्क करने हेतु हर गांव के कुछ लोगों के मोबाइल नम्बर के साथ सूची भी बनाई गई है ताकि जब खाप की कोई बैठक हो उन लोगों को मोबाइल से सूचना भेजी जा सके। नवनिर्वाचित पंचायत के सभी सरपंचों के चित्रों के साथ अन्य लोगों के चित्र भी लगाए गए हैं चाहे किसी ने आर्थिक सहयोग दिया हो या न दिया हो, मैं सभी का धन्यवादी हूँ। खाप के कुछ उच्च श्रेणी, राजपत्रित अधिकारी, समाजसेवी पुरुषों के चित्रों एवं जीवनियों के बारे सम्बन्धित परिजनों से बार-बार सम्पर्क करने पर भी उन द्वारा जानकारी न देने के कारण उनको पुस्तक में स्थान नहीं मिल सका, इसका मुझे बड़ा अफसोस है। इस प्रकार के लोगों को उनके गांव के लोगों द्वारा जानकारी देने के बाद उनसे सम्बन्धित गांव के लेख के साथ सूची में शामिल किया गया है।

खाप की नई पंचायतों के सभी सरपंचों की सूची उनके मोबाइल नम्बर के साथ भी लगाई गई है। मैं जितनी बार मेरी खाप के गांवों में गया मेरा हर गांव में स्वागत हुआ। मैं अपनी मातृशक्ति का भी आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे हर प्रकार का खान-पान देने में कोई कमी नहीं छोड़ी। इस पुस्तक लिखने व जानकारी देने में हर युवा, हमउम्र, बुजुर्ग, बुद्धिजीवी भाइयों का भरपूर सहयोग धनराशि से एच्छिक सहयोग मिला है। मैं सभी का विशेष आभार प्रकट करना चाहूँगा। निम्नलिखित महानुभावों का भी सहयोग सराहनीय रहा-

विशेष रूप से श्री सुरेन्द्र ढुल, निदेशक-स्काईलार्क हैचरीज ग्रुप प्रो० लि०, श्री उमेद सिंह ईक्कस, वीरभान ढुल, रणधीर प्रधान, हरपाल ढुल ईक्कस, अजायब सिंह चहल, मा० बलवान सिंह मोर, सुनीता चहल मैनेजर, सतबीर सिंह चहल जाजवान, फूल कुमार शास्त्री, प्रो० नरेन्द्र ढुल रामराय, प्रदीप गिल, सूरजमल पहलवान, विकास बूरा सरपंच, जयप्रकाश बूरा प्रधानाचार्य, धनराज गिल, डॉ० जगदीश जागलान, सुमित्रा जागलान सरपंच सुनहरा पूर्व सरपंच जलालपुर कलां, मा० राजसिंह, प्रकाश, नारायण सिंह रोहिल्ला प्रिंसिपल, जयदीप लोहान सरपंच, गुलकनी, दलशेर लोहान एम.डी., जयबीर सरपंच, टेकराम लोहान, वीरेन्द्र सिंह लोहान डीडब्ल्यूओ, राजपुरा, राजकुमार अहलावत, मनोज नेहरा एसडीओ, बारूराम जागलान ईटल कलां, सुनीला खोखर सरपंच, सत्यवान नेहरा एस.डी. सी० सै० स्कूल, सुनील खोखर एमडी आर्य विद्या मन्दिर सी.सै. स्कूल घिमाना, मामराज कालीरामण घिमाना, मोहन प्रकाश सैनी, ज्ञान चन्द्र सरपंच, नरेश पहल निदेशक पहल आईटीआई जलालपुर खुर्द, आजाद सिंह पंवार प्रधान जाट धर्मशाला, श्री बारूराम जागलान नम्बरदार, डॉ० दलवीर सिंह बीबीपुर, चन्द्रभान जागलान, प्रो० दयासिंह, बीबीपुर सुधीर रेडू एमडी आर.बी.एम. सी. सै. स्कूल, दलशेर सिंह, वाल्मीकि सरपंच, आई.जी. शेरसिंह पूर्व विधायक, ईगराह,

रणधीर ढुल प्रधान, मेहर सिंह जागलान चन्द्रभान नम्बरदार, राममेहर ढुल सरपंच पोकरी खेड़ी, रामचन्द्र महल, मुख्याध्यापक ढाणी, कृष्णा जागलान, रामफल सैनी सरपंच, जिले सिंह पूर्व सरपंच, रामगढ़ भरतसिंह ढुल, सुखविन्द्रर सिंह सरपंच रामराय खेड़ा, प्रो० सतवीर दूहन, कर्मवीर सिंह दूहन प्रधान, जयप्रकाश दूहन, सुरेश बहबलपुर, शमशेर सिंह बडसर सिरसा खेड़ी, स० तेगबीर सिंह सिबिया, लखमी चन्द नम्बरदार गोबिन्दपुरा (शादीपुरा), रामदास यादव कर्मगढ़, रामराजी बागनवाला, डॉ० (कवि) अजमेर जागलान डाटा, डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक आईपीएस (सेवानिवृत्त), प्रधान जाट सभा चण्डीगढ़ एवं अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति, चौ० आजाद सिंह लाकड़ा प्रधान, जाट मित्र मण्डल एवं दीनबन्धु छोटूराम धर्मशाला, केशवपुरम, देहली, श्री राजेन्द्र सिंह शास्त्री, रामकली का दिल की गहराइयों से आभारी हूँ क्योंकि इन तीनों महानुभावों ने मेरे मामूली से अनुरोध पर मेरी पुस्तक में अपनी-अपनी ओर से शुभ संदेश देकर मेरा मनोबल ऊंचा किया है।

श्री जयनारायण जिलेदार खोखरी (जो मेरा रिश्तेदार के साथ गहरा दोस्त भी है), ने मुझे कदम-कदम पर प्रेरित किया तथा उत्साहित किया है। उनका विशेष आभार प्रकट करता हूँ। मेरी पत्नी श्रीमती माला देवी, दोनों पुत्रों नरेश एवं विनोद, दोनों पुत्र-वधुओं श्रीमती शालिनी एवं रेमन, जिन्होंने मेरे परिवार का मुखिया होते हुए मुझे पूरा समय देकर मेरे लेखन हेतु वातावरण दिया। इस इतिहास को लिखते समय मैंने प्रमाण व संदर्भ जानकार लोगों से प्राप्त व संदर्भ यथास्थान पर देने का पूरा-पूरा प्रयास किया है तथा जिस महापुरुष की जीवनी लिखी है वह सम्बन्धित परिवार के सदस्य के सौजन्य से छापी गई है, मैंने किसी की भी बात बढ़ा-चढ़ाकर नहीं लिखी है। मैं पुनः मेरी खाप के उन बन्धुओं का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने इस पावन कार्य में आर्थिक सहयोग दिया। अन्त में मैं कम्प्यूटर ऑपरेटर देवेन्द्र गर्ग का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिसने मेरे द्वारा लिखे पन्नों को टाईप एवं सैटिंग कर इसे सुन्दर पुस्तक का रूप दिया। मैं खाप के बन्धुओं को अपनी तरफ से कोटि-कोटि शुभकामनाएं, प्रणाम, नमस्कार, प्यार, दुआ सलाम करता हूँ जो इस कृति को प्राप्त करेंगे, पढ़ेंगे, दूसरों को पढ़ायेंगे, तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए अपने घरों में इसकी एक-एक प्रति अवश्य रखेंगे। इस पुस्तक को लिखने में बहुत ही सावधानी बरती गई है इसके बावजूद यदि कोई शब्द भाषा के आधार पर (तिथि, नाम, गोत्र, स्थान आदि) अशुद्ध हो गया हो या कोई ऐसा शब्द छप गया हो जो मेरे किसी बन्धु के दिल को छूता हो या उसे रास ना आया हो तो उसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूं और त्रुटि की तरफ ध्यान दिलाए जाने पर अगले संस्करण में उसे ठीक कर दिया जाएगा।

लेखक

महेन्द्र सिंह जागलान

ओ३म्

खाप पंचायतों के विषय में जानकारी

पृष्ठभूमि : हमारे देश भारत में प्राचीन काल से ही विभिन्नताओं में एकता को संजोए हुए है। यहां विभिन्न जातियों की मान्यताओं और भाषाओं को बोलने वाले लोग निवास करते हैं। दक्षिण भारत और उत्तरी भारत की परम्पराएं बिल्कल भिन्न रही हैं, फिर भी इस देश की विशेषता अखण्डता और एकता रही है। यहां पर अनेक रियासतों का राज्य शासन हुआ करता था। चक्रवर्ती राजा शिव के पुत्र गणेश ने गणों की स्थापना की थी, जो एक लम्बे समय तक सामाजिक कार्यकलापों की जिम्मेदारी गणों द्वारा ही निभाई जाती थी। कुछ समय बाद धीरे-धीरे कुछ संगठन व्यवस्थित रूप से संगठित होते रहे, इन्हीं संगठनों में से एक संगठन है जो कि खाप पंचायत के नाम से विख्यात हो गया।

खाप का अर्थ : खाप पंचायतें पंजीकृत नहीं होती हैं और न ही इनका कोई लिखित संविधान होता है। खाप का नामकरण किसी विशेष समूह या परम्परा पर नहीं बल्कि इसके व्यापक अर्थ के आधार पर बना है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में श्रेणी संघ के मुखिया का नाम जेष्ठ मिलता है। राजस्व की उगाही के लिए अक्षवाप नामक संगठन की चर्चा है, संभवत: वर्तमान का खाप शब्द कुछ अक्षवाप उसी का संक्षिप्त रूप है अर्थात् खाप शब्द अक्षवाप का ही उपभ्रंश है।

पंचायत का अर्थ : पंचायत का अर्थ है पंच+आयत अर्थात् पांचों से बनी आयत अथवा पंचायत, जहां पांच व्यक्ति इकट्ठे हो जाते हैं और उनके मुख से निकली बातों को ही स्वीकार्य माना जाता है। यदि हम इस शब्द पर दृष्टि डालें तो भारतीय संस्कृति में पांच शब्द का बहुत ही विशेष महत्त्व है। जीव का शरीर भी पंचभौतिक तत्त्वों से बना है जिसे भगवान अर्थात् भ=भूमि, ग=गगन, व=वायु, आ=आग, न=नीर ने रचा है और अन्त में इस भौतिक शरीर को इन्हीं पांचों तत्त्वों में मिल जाना है। सिख धर्म में भी पांच शब्दों को प्रमुखता दी है। इन्होंने पांच ककके नियत किए है, धर्म की रक्षा हेतु पंच प्यारे नियुक्त किए। आर्य लोगों में पंचमहायज्ञ विधि है। मानव शरीर को पंचभूत का ही पुतला कहा गया है। भारतीय वार्षिक कलैण्डर को पंचांग का नाम दिया गया है। हमारे शरीर की पांच कर्म इन्द्रियां और पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं। मुख्य रूप से कपड़े भी पांच प्रकार के ही माने गए हैं। हमारे हाथों व पांवों की उंगलियां भी पांच-पांच ही होती हैं। यहां तक कि भारतीय सरकार ने देश की उन्नति के लिए पंचवर्षीय योजना लागू की है। इस देश में चुनाव भी पांच साल में ही होते हैं। चीन के साथ

समझौते को पंचशील समझौते का नाम दिया गया है। भगवान श्री कृष्ण ने युद्ध में पांच पांडवों का ही साथ दिया था। हरियाणा की देहाती भाषा में 100 को पांच बीस्सी कहते हैं। सैनिक व अर्ध सैनिक बलों के कंधों पर लगने वाले स्टार (बैज) पांच कोणों के ही होते हैं। पहले किसान खेती बाड़ी का काम करवाने में हरिजन भाई को सिरी (हिस्सेदार) लगाता था तो उसका फसल में पांचवां हिस्सा होता था। बुद्ध धर्म के पांच सिद्धान्त बताए गए हैं। महायज्ञ भी पांच प्रकार के होते हैं। अब तो सरकारी कार्यालयों में कार्य दिवस भी पांच दिन का ही होने लगा है। अविभाजित पंजाब का नाम भी पांच नदियों के नाम से है। सती-साध्वी स्त्रियों के पांच लक्षण बताए गए हैं। श्री रामचन्द्र जी अयोध्या से चित्रकुट पांच दिन में पहुंचे थे। देवी आपत्ति भी पांच होती हैं। पंचवटी में पांच पेड़ थे। पंचायत की दृष्टि से भी पांच का महत्त्व है। हरियाणा में हुक्के को पंचों का प्याला कहा जाता है। कहने का अर्थ है कि जब से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है तब से पांच का महत्त्व बना हुआ है जो यथावत् रहेगा।

जीन्द जिले की खाप/तपों की सूची

जीन्द जिले में अब छोटी-बड़ी 18 खाप/तपे हैं। बाहतरा तपा सबसे बड़ा है। इसमें पहले नौ खापों के 72 गांव रियासत जीन्द के समय शामिल थे। इसलिए इस समूह के खापों को बाहतरा के नाम से जाना जाता है। इसके प्रधान पं० के.के. मिश्रा निवासी हनुमान गली, जीन्द हैं। इनके मोबाइल नं० 9992022080, 8950299129 हैं। आज की खाप/तपे निम्नलिखित हैं :-

1.	कण्डेला खाप	प्रधान टेकराम कण्डेला ९४१६५६००४४
2.	माजरा खाप	प्रधान-महेन्द्र सिंह रिढाल ९४१६३५००४६
3.	नौगामा खाप	कार्यकारी प्रधान-कुलदीप सिंह रामराय ९४१६११५४६०
4.	किनाना खाप	प्रधान-श्री दरिया सिंह सैनी
5.	लाठर खाप	प्रधान-श्री राजमल लाठर ९४६८३५९०५५
6.	नन्दगढ़ बारहा खाप	प्रधान=श्री होशियार सिंह दलाल ९४६६८९२४२५
7.	हाट बारहा खाप	प्रधान का पद रिक्त है चुनाव होना है।
8.	बराह बारहा खाप	प्रधान-श्री कुलदीप सिंह ढांडा ९४६६९८४२००
9.	कालवा बारहा खाप	प्रधान-श्री दिलबाग सिंह कुण्डू ८१९९९६६७३२
10.	बिनैण खाप	प्रधान-श्री नफेसिंह नैन ७०५००७१६५५
11.	कालवान तपा	प्रधान-श्री फकीर चन्द नैन ९९९२१३२४०

12.	धमतान तपा	प्रधान–चौ० रामकला खुण्डेवाला ९४६८२५५४९३
13.	उझाणा तपा	प्रधान–श्री रामस्वरूप ९४६७६८२०१५
14.	मोर खाप (नरवाना)	प्रधान–श्री अमृत सिंह मोर
15.	दहाड़न खाप	प्रधान–श्री देवासिंह श्योकन्द ९४६७१२४७५५
16.	खेड़ा खाप	प्रधान–चौ० सतबीर सिंह पहलवान ९८१२८५४७७७
17.	नगूरां खाप	प्रधान–चौ० धर्मपाल नगूरां ९४१६५७४०६२
18.	थुआ तपा	प्रधान–चौ० ओमप्रकाश थुआ ९४६६६०३६२१

ऐतिहासिक सामग्री : स्व० चौ० कबूलसिंह मन्त्री गांव व डा० शोरभ जिला मुजफ्फरनगर के घर सम्राट हर्षवर्धन के समय से स्वाधीन भारत तक के तथा कुछ प्राचीन काल के ऐतिहासिक लेखों की सामग्री के बड़े भण्डार है। मुस्लिम आक्रमणकारियों एवं दिल्ली के बादशाहों तथा अंग्रेजों ने इस सामग्री को बरबाद करने के असफल प्रयास किए थे। इस सामग्री को सुरक्षित रखने के लिए मन्त्रियों तथा खाप के वीर योद्धाओं ने बड़े युद्ध किए और बलिदान दिए। यह सामग्री बहुत ही कीमती है तथा इसको बहुत ही अच्छी तरह से संभाल कर रखा हुआ है। (जाट इतिहास लेखक कै० दलीप सिंह अहलावत)

खाप पंचायतों का इतिहास नया नहीं है। यह किसी न किसी रूप में अत्यन्त प्राचीन है, शिव महाराज ने गणों को इकट्ठा किया वह भी इसी का एक रूप था। महाभारत काल में भी जब कभी संकट की स्थिति उत्पन्न हुई तो श्री कृष्ण जी महाराज ने अन्य राजाओं और बुद्धिजीवियों को एकत्र करके समस्या समाधान का प्रयत्न किया। विधिवत रूप से खाप पंचायतें जो वर्तमान स्वरूप में उत्तर भारत विशेषकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा व दिल्ली में अस्तित्व में विद्यमान है। इनका गठन राजा हर्षवर्धन के काल में हुआ। महाराजा हर्षवर्धन अपने शासन काल में विधिवत रूप में जन कल्याण हेतू इन पंचायतों का आयोजन करते थे। सौरभ गांव में इन पंचायतों का मुख्यालय था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जो संगठन आकाश की भाँति व्यापक, जल की भांति निर्मल, पवित्र तथा शान्तिदायक हो और जो प्राणिमात्र के कल्याण, सामाजिक धार्मिक व राजनैतिक समस्याओं और बुराइयों की निष्पक्ष, सत्यप्रिय न्याय संगत व्यवहारिकता के आधार पर परमात्मा को साक्षी मानकर लोक कल्याण के कार्य करे वह संगठन खाप पंचायत माना गया है। वर्तमान संविधान में भी पंचायतों का गठन उसी का रूप है। अब जो पंचायतें चुनी जाती हैं उनमें कुछ राजनैतिक विकार उत्पन्न हो गये हैं। इन पंचायतों का स्वरूप स्वार्थपूर्ण हो गया है तथा यहां वोट की राजनीति हावी

हो गई है जबकि खाप पंचायतें इन विचारों से परे थी। उनका दायरा सीमित न होकर विस्तृत था। इतिहास के पन्ने पलटकर देखें तो हमें ज्ञात होता है कि जब भी समाज में कोई विकृति या भ्रान्ति ने पांव पसारे सबने मिलकर उसका मुकाबला किया। खाप पंचायतों का दूसरा स्वरूप विभिन्न गौत्रों के आधार पर गठित खाप पंचायतों का अपना विशेष महत्त्व है। अलग-अलग गोत्रों के आधार पर अलग-अलग खाप पंचायतें हैं। इस प्रकार की गोत्र पंचायतों में भी आने वाले विवाद को बिना किसी भय या खौफ के भ्रातृभाव और प्यार से सुलझा दिया जाता है। इस प्रकार की पंचायतों में किसी प्रकार की जोर जबरदस्ती और अनैतिक या गैर कानूनी प्रक्रिया नहीं अपनाई जाती है। आधुनिक काल में कुछ स्वयंभू संगठन विभिन्न प्रकार की भ्रान्तियां फैलाकर इन पंचायतों को बदनाम कर रहे हैं। जो ऑनर किलिंग, स्त्री अत्याचार, भ्रूण हत्या आदि अनेक कुरीतियों के लिए खापों को कसूरवार ठहराने का प्रयत्न करते हैं जबकि वास्तविकता इसके विपरीत है। अंग्रेज शासन काल में सर्वखाप पंचायतों के बारे में वर्ष 1925 में रहबरे आजम दीन बन्धु चौ० सर छोटूराम से हर कोर्ट बटलर पूर्व डीसी रोहतक द्वारा पूछने पर कि खाप पंचायत क्या है, कहीं समानान्तर कोई कचहरी तो नहीं है? लिखकर उत्तर दिया कि सरकारी कचहरियों में झूठ का बोलबाला होता है, गवाह बदले जाते हैं, टूट जाते हैं, तोड़े जाते हैं और निष्पक्ष, ईमानदार व स्वच्छ जज के लिए भी ये जानना कठिन हो जाता है कि सच क्या है? जबकि खाप पंचायतों में झूठ बोला ही नहीं जाता। वहां सत्य का बोलबाला रहता है तथा सामाजिक न्याय तुल जाता है। इस प्रकार यदि देखा जाए तो ये पंचायतें लोगों को फिजूलखर्ची से बचाती हैं। न्यायालयों में फैसले तो होते हैं परन्तु गवाहों के बयानों पर आधारिक, झूठ की बुनियाद पर बनाए मकान के समान है। जबकि सत्य का आधार ढूंढ कर सत्य की नींव पर न्याय खाप पंचायतों में होता है, यहां फैसले नहीं होते दूध का दूध और पानी का पानी निखर जाता है। समाज की अनेक कुरीतियां खत्म करवाई जाती हैं। 25 नवम्बर 2014 को जीन्द में श्री श्री रविशंकर और खाप पंचायतों का महिला सशक्तिकरण और भ्रूण हत्या निवारण, दहेज प्रथा आदि अनेक समस्याओं का निदान करने हेतु एक सांझा सम्मेलन हुआ। इसमें श्रीश्री रविशंकर जी ने खाप पंचायतों की प्रशंसा करते हुए कहा था कि खाप पंचायतों बारे जो भ्रमित प्रचार हमने सुना था, वह भ्रामक है। खाप पंचायतें तो समाज का आईना हैं। ये समाज का सही मार्गदर्शन करने का प्रशंसनीय कार्य कर रही हैं। इस बारे में मुझे जहां भी अवसर मिलेगा, मैं नि:संकोच इसके प्रशंसनीय कार्यों का बखान करूंगा। इन खाप पंचायतों का निर्माण छत्तीस बिरादरी की सर्वखापों को

मिलाकर किया जाता है। उसके बाद कई गोत्र पंचायत बनीं, जैसे बिनैन, दहिया, सांगवान, मलिक (गठवाला), जागलान, भ्याण, बूरा, कुण्डू, काजल, श्योराण, गुलिया, नरवाल, बैनीवाल, पुनिया, ढुल, राठी, खत्री, पंवार, गहल्याण, मान, खोखर, दलाल, मोर, सोलंकी, कादियान, तेवतिया, तोमर, धनखड़, भनवाला, अहलावत, नांदल आदि हैं। इसके बाद खापों पर चौगामा अठगामा, नौगामा, चौबीसी, बाहरा बराह, कण्डेला, माजरा, किनाना, नन्दगढ़ बाहरा, कालवा, सतरोल, लाठर, हाट बारहा, पंचगामा शामलो, बिठमड़ा बहातरा, 360 महापंचायत, पालम खाप आदि देसोड़ी पंचायत (सार्वभौम) है। आज हरियाणा में छोटी-बड़ी 300 खापे हैं। निष्कर्ष यह निकलता है कि आपसी भाईचारे के आधार पर या गोत्र के आधार पर गांव के समूह को ग्रामीण इलाकों में तपा-बाहरा पाल या खाप के नाम से पुकारते हैं। यह कहा जा सकता है कि यह कोई नियमबद्ध संवैधानिक नियमावली पूर्ण संस्था नहीं है। यह ग्रामीण परिवेश में बसने वाले लोगों की जीवनशैली है। इसका विकास आपसी भ्रातृभाव-संवाद, मंथन एवं निर्णय लेने की प्रणाली जो इसे सीमा बन्धन में बांधे, न इसमें स्थाई नेता अथवा मुखिया बनाने का रिवाज है। खाप पंचायतों की कार्य प्रणाली लोकतान्त्रिक आधार पर गठित की जाती है। इसी आधार पर नौगामा खाप की स्थापना की गई थी जो कि 'बहातरी' का एक भाग है। इसी के बारे में नौगामा खाप की संरचना इसके अन्तर्गत आने वाले गांव, वहां की जीवन शैली, लोगों का निवास, रहन-सहन, गोत्र-जातियों का बोध कराने का प्रयत्न किया है।

बहातरी का अर्थ :- इसका अर्थ है 72 गांवों का समूह। जीन्द रियासत में दादरी व संगरूर को छोड़ कर 72 गांव आते थे। ये काफी पुराने हैं। बाहतरी खाप में आज छोटी-बड़ी जीन्द की 10 खाप शामिल हैं।

❑❑❑

नौगामा खाप के गठन की जरूरत क्यों हुई?

326 ई० पूर्व सिकन्दर के चिनाव नदी पर पड़ाव डालने पर यह क्षेत्र मगध साम्राज्य महाराजा धनानन्द के अन्तर्गत था। महाराणा धनानन्द के बाद यह क्षेत्र मौर्य राज्य के अधीन रहा। सातवीं शताब्दी ई० पूर्व में यह क्षेत्र श्रीकण्ठ का भाग रहा। इस पूरे क्षेत्र का राजा पुष्यभूति था। पुष्यभूति के समय में क्षेत्र ने बहुत उन्नति की। सातवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में यशोवर्मण 700-740 ई० अन्तर्गत का राजा बना तो यह क्षेत्र उसके अन्तर्गत रहा। 9वीं-10वीं शताब्दी ई० पूर्व में यह क्षेत्र प्रतिहार 836-885 ई० का भी हिस्सा रहा।

(जीन्द दर्पण पत्रिका नवम्बर, 2014)

सन् 1180 में एक बलशाली विद्रोह द्वारा जैस्सल को जैस्सलमेर से निकाल दिया। (उसने जैसलमेर शहर बसाया था) और वह दिल्ली व अजमेर के चौहान राजपूत राजा पृथ्वीराज चौहान द्वारा शामिल राज्य में उत्तर की तरफ चला गया और बाद में हिसार के निकट रहने लगा। उसके चार पुत्र हुए। उनमें हेमल नामक पुत्र बड़ा बहादुर था। उसने हिसार को कब्जा लिया व आसपास के काफी गांवों पर कब्जा कर वह दिल्ली की तरफ बढ़ने लगा। उसने हिसार शहर को बसाया तथा 1214 ई० में अपने जीवन की अन्तिम सांस ली।

(डॉ० राजेन्द्र लजवाना के सौजन्य से)

जीन्द परगना : प्रशासनिक दृश्य परगना जीन्द-हिसार सरकार का अंग था। वह आगे जागीरों में बंटा था। परगना का हाकिम चौधरी कहलाता था। जिसके मातहत कानूनगो व कानूनगो के अधीन मुन्शी-मुस्सदी व उनके तहत रियाया (प्रजा) होती थी। इस आशय की सनद औरंगजेब आलमगीर सन् जलूस 12, 1070, 1107 आलमगीर महाम्मद 1240 जहांशाशाहदि की कु०ल० संग्रह में थी। रियासतें बनने से पहले प्राय: सारे मुस्लिम काल (ई० 1192-1763) में थे। यह एक परगना रहा है और शायद शिक या इक्ता भी पुकारा गया हो, ये इक्ता व परगना आधुनिक तहसील, थाने व ब्लॉक का मिला जूला सा मामला था।

(जीन्द इतिहास ले० प्रो० नफेसिंह)

ई० सन् 1191 में पृथ्वीराज चौहान के क्षेत्र का यह भाग भोज के वंशज बिन्जल देव परमार के मोहम्मदगौरी को मुक्त करने पर 72 गांव रामराय, भनभौरी आदि (जो उस समय आबाद थे) बदले में दिये थे, जो भोज के वंशजों के अधिकार में रहे। ई० सन् 1206 में कुतुबुद्दीन ऐबक की सलतनत का हिस्सा बने। 1351-1381 ई० फिरोज

शाह तुगलक के राज्य क्षेत्र में बहुत विकास हुआ। मुगल सलतनत बादशाह बाबर ने हिसार खण्ड को जीन्द क्षेत्र में शामिल किया था। अकबर के शासन काल में जीन्द हिसार सरकार का एक परगना व सैन्य महत्त्व का दुर्ग रहा।

(जीन्द दर्पण पत्रिका नवम्बर, 2014)

नौगामा खाप का नामकरण : किदवन्ती व भाट पोथियों के अनुसार हरियाणा में आबाद हुए गांवों की निकासी राजस्थान से मानी गई है। जीन्द परगना के पास जेला खेड़ा या जेलावाला (थेह) बिक्रमी सम्वत् 1800 ई० जहां आज बराहवन व बराह बीड़ है, उसके साथ आबाद था। रामरा या रामराय (वि०सं० 1180, ई० 1123) रागड़ों द्वारा बाद में (वि०सं० 1222, ई० 1165) रामा ढुल जाट द्वारा, ईटल (वि०सं० 1232, 1175 ई०), धिमाना (वि०सं० 1600, 1544 ई०), राजपुरा (भैण) (वि०सं० 1600, 1544 ई० के करीब), बीबीपुर (वि०सं० 1600, 1544 ई०), ईगराह (ईगराही) (वि०सं० 1600, 1544 ई०), पोकरी खेड़ी (पोखरी) (वि०सं० 1620, 1564 ई०), जाजवान (वि०सं० 1772, 1715 ई०) जीन्द के पास आबाद सभी जाट बहुल्य गांव हैं। इनको आपस में विवाह-शादियों, जीने मरने, कृषि कार्य के यन्त्र लेने में, बाहरी मुस्लिमों के हमले रोकने में एक दूसरे गांव की मदद की जरूरत रहती थी। इन नौगांव के भाइयों ने रामराय के तीर्थ पर सभी जातियों के मौजिज लोगों ने पंचायत करके इन नौगांवों में भाईचारे कायम करने के लिए एक संगठन बनाया। इन नौगांवों के संगठन का नाम नौगामा खाप रखा गया तथा इनका आपस में भाईचारा कायम हो गया। कुछ नियम भी बनाए गए। ब्याह शादी में, जीने मरने में आना, न्यौंदा निधार रखना, रोटी खाना बनाना, इन गांवों में रिश्ते नाते ना करना आदि। इस प्रकार आज भी यह गांव नौगामा खाप के नाम से जाने जाते हैं। इसके बाद इन गांवों की आबादी बढ़ने लगी तथा मुख्य गांवों से अनेक छोटे गांव बसने लगे जैसे रामराये से ईक्कस, रामराय खेड़ा, ईटल से जलालपुरकलां, राजपुरा (भैण) से गुनकली, बीबीपुर से रामगढ़ आदि। नौगामा खाप में स्थाई नेता अथवा मुखिया बनाने का रिवाज नहीं था।

उग्राही प्रथा जमीन : हमारे क्षेत्र पर मुगल दरबार की ओर से हाकिम या नवाब बनते रहे, जो एक प्रकार के पट्टेदार या ठेकेदार ही कहे जा सकते हैं। 1738 ई० हाकिम हिसार सरकार थी। कुछ महीने मिर्जा राजा जयसिंह भी दखलदार रहा उनके बाद नजफखां अन्तिम था। मुल्ला रहीमदाद खां जीन्द का दखलदार रहा, जो लोगों से जमीन कर की उगाही करता था। उसके बाद यह क्षेत्र सन् 1763 ई० में जीन्द राज्य की

स्थापना हो जाने पर महाराजा गजपत सिंह के पास आ गया। जीन्द रियासत अंग्रेजों के अधीन थी। जमीन पर जमींदार का पक्का हक नहीं था। जमीन जबरदस्ती माल पर दे दी जाती थी। राजा जीन्द ने कुछ ठेकेदारों को जमीन के माल की उगाही के लिए छोड़ रखा था। ठेकेदार जमींदारों के साथ बहुत ज्यादती करता था। यह इलाका बरानी था। फसल वर्षा पर निर्भर रहती थी। राजा ने गांवों में नम्बरदार तथा ठेकेदार बना दिये। नम्बरदारों को माल के लालच में अधिक जमीन थोप दी जाती थी। नम्बरदार ठेकेदारों की माल उगाही में मदद करता था। इस प्रकार लोगों को तंग करके उगाही की जाती थी।

जब बड़े गांवों में से छोटे गांव आबाद हुए उस समय छोटे गांव पर बड़ा गाँव हमला कर देता था क्योंकि खाप का कोई प्रधान व मुखिया तो नियुक्त नहीं था। इस प्रकार लोग दुखी रहने लग गए। जब 1857 की क्रान्ति का बिगुल बजा तो इस इलाके के लोगों के दिल में बड़ा जोश था। इस बारे 1857 ई० में एक पंचायत का आयोजन किया गया तथा भविष्य में एकता व भाईचारा बनाने की अपील के साथ 1857 ई० की क्रान्ति में नौजवानों को भेजने का फैसला लिया गया। इस खाप से 1857 की क्रान्ति में काफी नौजवानों ने भाग लिया था। इसके बाद नौगामा खाप में शान्ति रही तथा खूब विकास भी हुए। जीन्द के राजा को महाराजा की मान्यता लेने के लिए गांवों की संख्या कम से कम 300 होने की शर्त के कारण राजा ने पुराने गांवों के लोगों को नये गांव बसाने के आदेश दे दिए जो बाद में आबाद भी हुए। इनका विवरण उस गांव की अलग जानकारी में दिया जाएगा। आज नौगामा खाप में 21 गांव आबाद हैं जो इस प्रकार हैं–1. बीबीपुर, 2. बहबलपुर, 3. बागनवाला, 4. ढाणी रामगढ़, 5. गुनकली, 6. धिमाना, 7. ईक्कस, 8. ईटल कलां, 9. ईटल खुर्द (सिसर), जलालपुर कलां (छान), 11. जलालपुर खुर्द, 12. जाजवान, 13. ईगराह, 14. कर्मगढ़, 15. पोकरी खेड़ी, 16. रामराय, 17. रामराय खेड़ा, 18. रामगढ़, 19. राजपुरा (भैण), 20. सिरसा खेड़ी, 21. गोबिन्दपुरा (शादीपुरा)।

नोट : जेलाखेड़ा (थेह) है।

लोग अच्छी खेती के साथ पशु पालन करने लग गये। जमीन को समतल बनाना शुरू किया। चीतंग नहर से पानी मिलना शुरू हो गया। सन् 1937–38 में प्रजा मण्डल का गठन किया गया, जिसमें पं० देवी दयाल, चौ० दलसिंह, मा० फतेहसिंह, रामराय चौ० केवल सिंह व पोहलू राम जलालपुर कलां, गंगादत्त, सोहलूराम, प्रभुराम जीतू ईक्कस, गणेशी जमींदार, मुंशीराम भैणी, वैद्य हरिसिंह ईगराह, चौ० बीरखा राम जाजवान

आदि ने शामिल होकर कार्य शुरू किया।

तपे व स्थाई प्रधान का चुनाव : जब लोगों ने देखा कि आसपास की खापों ने अपने प्रधान व तपे का मुख्यालय बना लिये हैं तब लोगों के मन में अपनी खाप का पुनः गठन करने व स्थाई प्रधान तथा चबूतरा (तपा) बनाने की सोच हुई। इस बारे पूर्णमासी कार्तिक मास सन् 1 नवम्बर 1948 बार सोमवार कार्तिक पूर्णमासी को एक पंचायत रामराये गांव के तालाब पर बुलाई गई इसका लिखित रिकार्ड प्राप्त नहीं है, जिसमें पं० देवीदयाल, चौ० दलसिंह, पं० लक्ष्मी नारायण, मा० फतेहसिंह, हजारी नम्बरदार रामराय, चौ० जीतूराम, चौ० जयलाल, चौ० रिसाल सिंह ईक्कस, चौ० केवल सिंह, चौ० सोहलूराम, चौ० दलसिंह जलालपुर कलां, चौ सिंघराम, चौ० मुन्शाराम, चौ० उमरसिंह जलालपुर खुर्द, चौ० जोगीराम सैनी, चौ० विजय सिंह खोखर, चौ० गुलाब सिंह धिमाना, चौ० मानसिंह, चौ० रिसालसिंह, रामस्वरूप, फत्तेसिंह, निहालू ईटल कलां, चौ० मनसाराम, चौ० हरद्वारी सैनी, बहबलपुर, चौ० अर्जुन नम्बरदार, चौ० रिसाल सिंह पंवार, चौ० लाल चंद शाहू, पं० श्योनाथ बीबीपुर, चौ० मुन्शीराम, चौ० गणेशी जमादार राजपुरा भैण, चौ० छैलराम, चौ० चतर सिंह गुनकली, रिसाल सिंह, सुखदेव, माईराम पोकरी खेड़ी, बालूराम बागनवाला, जगूराम, मामचन्द गोविन्दपुरा, झण्डूराम नम्बरदार मुगला कुम्हार ढाणी, वैद्य हरिसिंह, चौ० दिवान सिंह, चौ० राम किशन, मा० भरतसिंह ईगराह, चौ० उदेराम नम्बरदार रामगढ़, चौ० बिरखाराम जगननाथ, मंगलसिंह जाजवान, गुगन गिल, बनीसिंह बूरा, गिरधाला शर्मा, मथूरा आदि के इलावा हजारों आदमी मौजूद रहे। इसमें खाप के हर गांव से अन्य लोग भी शामिल रहे। यह पंचायत पूरा दिल चलती रही। इसमें भाईचारा कायम रखने व अन्य बुराइयों को दूर करने के लिए चर्चा हुई। इस पंचायत की अध्यक्षता चौ० केवल सिंह जलालपुर कलां ने की थी। जीन्द रियासत के लोगों को आजादी 9 मई, 1948 को मिली थी। खाप के लोगों की आजादी मिलने के बाद यह पहली पंचायत हुई थी।

इस महापंचायत खाप का पक्का (स्थाई) प्रधान बनाने व तपे (चबूतरा) किस गांव में बनाने पर लोगों से राय व सुझाव मांगे गए। इसमें चौ० केवल सिंह जलालपुर कलां (छान) को नौगामा का प्रधान व गांव रामराय को खाप का तपा बनाया गया। यह भी तय हुआ कि जब भी खाप से सम्बन्धित कोई मामला होगा और खाप की पंचायत होगी चिट्ठी रामराय के नाम से पाड़ी (डाली) जाएगी। पंचायत भी गांव रामराय में हुआ करेगी। चौ० केवल सिंह (1878-1962) वर्ष 1956 तक प्रधान रहे। उपरोक्त जानकारी उनके पोते श्री रामकरण जागलान (77) डाकपाल सेवानिवृत्त ने दी है, श्री

रामकरण ने बताया कि यह जानकारी उनके दादा केवल सिंह ने उन्हें दी थी। इसके बाद कुछ-कुछ समय के लिए चौ० जोगीराम धीमाना, वैद्य हरिसिंह ईगराह व चौ० भलेराम ढुल रामराय प्रधान रहे। खाप का आगे स्थाई प्रधान नहीं बनाया गया। यह जानकारी पूर्व सरपंच सुनहर सिंह 75 वर्ष जलालपुर कलां, सूबेदार हवासिंह पोकरी खेड़ी व नफेसिंह ईक्कस ने दी। जब भी किसी मामले में किसी गांव में पंचायत बुलाई जाती तो मौके पर दूसरे गांव से सम्बन्धित बड़े सज्जन को मौके का प्रधान बनाया जाने लगे। मौके के निम्न व्यक्ति प्रधान रहे जिसमें चौ० रणसिंह, ईगराह, चौ० दलसिंह, पं० लक्ष्मी नारायण रामराय, चौ० जयलाल पूर्व सरपंच ईक्कस, चौ० बीरखा राम जाजवान, चौ० बलबीर चेयरमैन बहबलपुर, चौ० हरनारायण, चौ० रिसाल सिंह, चौ० चन्द्रभान नम्बरदार पोकरी खेड़ी, चौ० जोगीराम, चौ० जोगीराम सैनी धिमाना, चौ० सूरजमल पहलवान ईटल खुर्द, चौ० जिलेसिंह जलालपुर कलां, डॉ० ओपी पहल जलालपुर खुर्द, मामराज घिमाना, रणधीर ईक्कस, बलवान सिंह वकील राजपुरा, मा० राजसिंह गुनकली आदि रहे हैं। आज कल चौ० कुलदीप सिंह रामराय को प्रधान की तथा महेन्द्र सिंह जागलान (लेखक) को प्रेस प्रवक्ता की जिम्मेदारी दे रखी है।

जब भी कोई मामला नौगामा खाप की पंचायत से नहीं सुलझता तो उस मामले को बहातरा के सामने ले जाया जाता है। आज कल बहतरा तपा (जीन्द) का प्रधान श्री के.के. मिश्रा जी हैं। वह ही बहातरा तपा (जिसमें छोटी बड़ी 10 खाप हैं) की चिट्ठी पाड़कर पंचायत बुलाता है और इस प्रकार काफी पेचिदे मामलों का निपटारा बहातरा खाप द्वारा किया जाता है और सम्बन्धित पक्षों को न्याय दिलाया जाता है।

❑❑❑

हमारा पुराना खानपान एवं दिनचर्या

आज के मध्य (देशवाली) हरियाणा के लोगों की दिनचर्या लगातार पांच दशक पहले कुछ और हुआ करती थी। इनके खानपान में काफी परिवर्तन की झलक देखने को मिलती है। एक जमाना था जब यहां का जनमानस पहर के तड़के मुर्गे की बांग तथा काली चिड़िया की आवाज से उठता था। वह चाँद तथा हिरणी से समय का अवलोकन करता था क्योंकि उनके पास घड़ी नहीं होती थी। खेत में पानी देने का समय मापने के लिए पितल के बेलवे से पानी की घड़िया मापी जाती थी। प्राकृतिक साधनों से ही समय मापना किया करता था। पीली पाटी होते ही वह अपने-अपने काम में जुट जाया करता था। पुरुष जहां प्रात: कालीन बेला में उठकर पशुओं के गोबर हटाने पेशाब ओटने का काम करता था। उसके बाद पशुओं की सानी-पानी करने का काम करता था। इसके बाद वह हुक्का पीकर हाथ के गंडासे से नेह पर न्यार काटने का काम भी करता था क्योंकि उस समय चक्कर वाले गंडासे का चलन नहीं था। उसके बाद वह भोर के उजाले में बैलों को लेकर खेत में हल जोतने के लिए निकल पड़ता था। बैलों के गले में बंधे घुंघरू एवं चौरासियों से प्रात:कालीन बेला संगीतमय हो उठती थी। उधर महिला प्रात: कालीन बेला में उठती थी अपनी चारपाई (खाट) से उतरने से पहले रामराम करती थी। यही से महिलाओं की दिनचर्या शुरू होती थी। उसके बाद वो घर के दरवाजे के पीछे लगे मुस्सल को हटाती, तत्पश्चात् वह चाक्की धोती थी पहर के तड़के घरों से चक्की की घर्राहट की आवाज आती थी। अंधेरे-अंधेरे में वह दूध बिलौने का काम करती थी। इस दौरान बालक जाग जाते थे, वह दहलीज एवं पौली से दूध लाने का काम भी करते थे। कई बार महिलाएं पोली से प्रात: कालीन बेला में जाकर पशुओं का घास-फूंस आदि करती थी। उधर दिन लिकड़े पुरुष हल चलाने में जुट जाया करती थी। महिलाएं पहर के तड़के अंधेरे-अंधेरे में गहरे कुएं से पानी की दोघड़ भरकर घर तथा बैठक के लिए पानी भरने का काम भी किया करती थी। इसके साथ ही वह डांगरों का गोबर-पानी करने के लिए बैठकों में जाती तथा इकट्ठा किए गोबर को टोकरे में भरकर (जिसे गोबर की हेल के नाम से जाना जाता है) गीतवाड़े तथा पथवारे में ले जाया करती थी, फिर गोबर पाथने का काम भी पथवारे में करती थी। उसके बाद पथवारे में स्थित बिटोड़े से गोस्से व थेपड़ियों को निकालकर उनकी हेल लेकर घर आया करती थी। फिर वह बालकों के लिए रोटी बनाने के लिए चुहला जलाती थी। बालकों को खिला-पिलाकर वह खेती में जाण की तैयारी में जुट जाया करती थी। कलेवारा की रोटी हाली के लिए लेकर खेत में पहुंच जाया करती थी।

हाली तब तक एक दो हलाई पूरी कर चुका होता था। घरवाली के खेत में पहुंचते ही वह हल रोक देता और किल्ली काढ़ देता था। इस प्रक्रिया को लोक जीवन में जोटा लेणा भी कहा जाता था। कलेवार की रोटी के साथ गण्ठा एवं लस्सी पीने के पश्चात् वह हुक्के की घूंट भी मारता था। कलेवार के खाने में गर्मियों के दिनों में राबड़ी सीत, मेस्सी रोटी का आनन्द अर सर्दियों में टिंडी घी, प्याज, गुड़, शक्कर कभी-कभी चुरमा भी मिल जाया करता था। बाजरा बोन वाले पहले दिन मिट्ठी कढ़ी बनाते थे। ईख बोते समय ईख बोण वाले खातर गुड़ घत्ता (मीट्ठे चावल) में घी डालकर खिलाया जाता था। इसके बाद किसान हल बाहणे में जुट जाता था और घरवाली न्यार का भरोटा काटकर सिर पर बांध कर घर लौटती थी। गांव में आकर महिला जल्दी-जल्दी हाली की दोपहरे की रोटी व बैलों के ज्वारे की तैयारी में जुट जाती थी। इसके साथ बालक भी रोटी खा पीकर आपणे काम धंधों में लग जाते थे। इधर किसान की घरवाली दोपहरे की हाली की रोटियों के साथ वह बड़े झाल्ले में बैलों के लिए सान्नी तथा चणे का आटा भी रख लेती थी। किसान के दोपहर के खाने में वह गेहूं और चने की रोटी तथा साग-सब्जी लस्सी का बरोला आदि लेकर पैदल खेत में जाया करती थी। किसान तथा बैल दोनों ही दोपहर की रोटियां की मींह जैसी बाट देख्या करते थे, कई बैलों की जोड़ी तो ज्वारे आली महिला को देखकर स्वत: ही रूक जाया करते थे। खेत की मेंढ (डयौल) पर शीशम, नीम, कीकर, आम आदि की छांव में हाली हल को छोड़कर सबसे पहले बैलों को लेट (डाबड़ा) में पानी पिलाकर लाता फिर उनके आगे चारे का टोकरा (झाल्ला) रख देता था। फिर उसके बाद घरवाली अपने घरआले को रोटी देती थी। तत्पश्चात् दोनों की घरेलू बातों-बातों में दोपहर का भोजन किया करते थे। ऐसे में वे कुछ हंसी-मजाक तथा ऐसी गृहस्थी की बातें भी कर लिया करते थे, जो बालकों एवं दूसरों के सामने नहीं हुआ करती थी। दोपहर की रोटी खाकर हाली हुक्का पीकर अपनी कमर सीधी करने के लिए मेढ़ पर तथा पेड़ के नीचे कुछ समय के लिए लेट जाया करता था। पल भर विश्राम के बाद वह पुन: अपने हल चलाने की प्रक्रिया में जुट जाया करता था। महिला घर में आकर अन्य काम संभालती थी तथा सांझ के रोटी-टुक्के की तैयारी करती थी। दिन ढलने के समय गांव में काफी गहमा-गहमी होती। कोई भैंसों को पानी पिला रहा है, दिन के इसी पहर में गांव की बहुएं सह-धज कर अपनी नणदों के साथ दोघड़ उठाकर कुएं पर पानी भरने के लिए जाया करती थी। यह समय पनघट पर रौनक का समय हुआ करता था। एक दिन पनघट के पास एक जोगी आ गया। वह शब्द गा रहा था। उसने वहां मौजूद महिलाओं से पानी मांगा। इस

पर चार महिलाओं ने जोगी से उनकी पसन्द का मौके पर शब्द बनाकर गाने को कहा। पहली ने कहा मैंने खीर बनाई उसका जिकर हो, दूसरी ने कहा मैं चरखा चलाती हूँ इसका जिकर हो, तीसरी ने कहा मैंने कुत्ता पाल रखा है इसका जिकर हो तथा चौथी बोली मैं ढोल बजाती हूँ तो ढोल का जिकर हो। जोगी ने मौके पर शब्द बनाकर इस प्रकार गाया–

खीर बनाई जतन से, चरखा दिया चलाए।
आया कुत्ता खीर खा गया, बैठी ढोल बजाए।।

दिन ढले घर के बालक भी सुबह से रखी कढोणी में गर्म हो रहे दूध की लाल-लाल मलाई गुड़ व शक्कर के साथ हाडीवारा की रोटी खाते थे। आज के दौर में यह स्वरूप दिखाई नहीं पड़ता है। आज हल का स्थान ट्रैक्टरों ने ले लिया, पाली कहीं दिखाई नहीं पड़ते, ईख के कोलहुआ का स्थान चीनी मिलों ने ले लिया, चाक कटते का गुड़ खाना, धुधले धोरे सिकना स्वप्न सा बनकर रह गया है। पशुओं की संख्या कम हो गई है। मड़कण आली जूतियों की आवाज सुने सदियां बीत गई हैं। आभूषणों में नाड़े रमझोल की रूणक-झड़क कहीं सुनाई नहीं पड़ती। चरखे कातते हुए गीत गाने की परम्परा समाप्त हो गई है। देशी खाने देशी बाणे अतीत की यादों में सिमट कर रह गए हैं, वेशभूषा के परिवर्तन हुआ। धोती एवं साफे वाले बूढे ढूंढने से भी नहीं मिलेंगे। साझ का भी अपना मनोहर दृश्य होता था। पाली पशुओं को चराकर जोहड़ पर इकट्ठा हो जाया करते थे। उसके बाद वे डांगरों को नहला कर बगड़ एवं पोली में ले जाया करते थे। घर पर बैल आते ही उन्हें खुराक के रूप में आबटी एवं मांडी देने का काम भी किया जाता था। उसके बाद सांझ की धार डौक्की कर पशुओं का दूध निकालने का काम भी होता था। उधर महिलाएं लाअली तारणे तथा बाजरा कूटने का काम भी करती थी। उसके बाद वे गर्मी के दिनों में हारे में राबड़ी, दलिया चढ़ा दिया करती थी और सर्दियों में बाजरे की खिचड़ी हरा साग व गास आदि रांधने के लिए रख देती थी। तत्पश्चात् वह अपने घर में दीया बाती करती थी। सर्दी के दिनों में बाजरे की खिचड़ी जिसे गास के नाम से जाना जाता था, बेल्ले तथा थाली में डालकर दिया जाता था। इस बीच उसमें गड्ढा सा बनाकर घी भी डाल दिया जाता था। गोजी के साथ भी बाजरे की खिचड़ी भी खाई जाती थी। गोजी लस्सी में कच्चे दूध की धार लगने से बनती है। इसके साथ खिचड़ी खाने का आनन्द अलग ही है। तत्पश्चात् पुरुष जहां चौपाल एवं पोली में जाकर बैठ जाता था, जहां आसपास के लोग एकत्रित होते थे। यह समय पुरुषों के लिए मनोरंजन का समय हुआ करता था। ऐसे में खूब हंसी-ठिठौली हुआ करती

थी। हंसी के कहकों की आवाज दूर तक गुंजती सुनाई पड़ती थी। ऐसे में कभी कोई कथक्कड़ कथा का आनन्द देता था तो कभी कोई जोगी भजन सुनाने से नहीं चुकता था। यह सिलसिला लगभग आधी रात तक चलता रहता था। उधर महिलाएं बर्तन-भांडे मांजकर दूध जमाया करती थी। फिर बच्चे जहां दादी-नानी की गोदी में लोरियां तथा कथाएं कहानियां सुनते-सुनते सो जाया करते थे वहीं महिलाएं पूरा काम करके आधी रात के बाद ही बिस्तर पर जाया करती थी और फिर उसके बाद पुन: पहल के तड़के उठकर फिर अपनी उसी दिनचर्या में जुट जाती थी। महिलाएं कोल्हू के बैल की तरह सारा दिन काम में जुटी रहती थी। वहीं आज के आधुनिक युग में सभी कार्य मशीनों से होने लगे हैं, किसी को मेहनत नहीं करनी पड़ती है। सच कहा जाए तो महिलाएं के लिए अच्छे दिन लौट आए हैं। इस प्रकार पिछले 50 वर्षों की तरफ नजर डालें तो लोक जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखने को मिले हैं, जिसका असर लोगों की दिनचर्या पर भी पड़ा है। वर्तमान पीढ़ी अतीत की उन मीठी यादों से महरूम है लेकिन अतीत की स्वर्णिम यादों से यदि हम सीख नहीं लेंगे तो आने वाली पीढ़ियों को कैसे पता चलेगा कि हमारे पूर्वजों का इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। हमारी संस्कृति, परम्पराओं को निभाकर सांस्कृतिक धरोहर को संजोया है, नैतिक मूल्यों को निर्वहन कर लोग मर्यादाओं का पालन किया है।

❑❑❑

1. रामराय गांव

यह नौगामा खाप का सबसे बड़ा व प्राचीन गांव हैं जो चितंग नहर पर जीन्द हाँसी मार्ग पर जीन्द से 10 किलोमीटर की दूरी पर है। यह जीन्द खण्ड तथा जुलाना विधानसभा क्षेत्र में पड़ता है। यह धर्मनगरी कुरुक्षेत्र की 48 कोस की परिधि में आने वाले पवित्र तीर्थों में शामिल है। रामराय नौगामा खाप का मुख्यालय (तपा) है। विक्रमी संवत् 1180 ई० में इस गाँव (रामरा या रामराय) को मुसलमान रांगड़ों ने बसाया था। जहां आज देवी मन्दिर है, के पास बसाया था। अब वहाँ पर थेह है। इसके बाद रांगड़ गाँव छोड़कर चले गए। पं० फूल कुमार शास्त्री के अनुसार रामह्रदय तीर्थ महाभारत काल का है, जिसका लेख इतिहास के पन्नों में भी दर्ज है। इसके बाद वि०सं० 1222 ई० में इनके पूर्वज रामा ढुल पुत्र भूड ढुल जाट गांव लुदास (हिसार) से आकर यहां बस गया। इस प्रकार गांव का नामकरण काफी रोचक है। अन्य जानकार लोग इसको रामह्रदय (रामरा) के नाम से जोड़कर बताते हैं। श्री नरेन्द्र कुमार ढुल, सहायक प्रोफेसर इतिहास के अनुसार इसका नाम रामा ढुल के नाम से (रामरा) रामराय पड़ गया। इस गांव में जाट व ब्राह्मण बहुसंख्या में हैं। यहां पर जाट केवल ढुल गोत्र से सम्बन्धित हैं। इनके सिमल, नरवाण व पराही तीन पाने (ठोले) हैं। ब्राह्मण बाद में अलग-अलग गांव जैसे नगरवाल, स्वपण नगूरा से, नेथलिया (अत्री) किनाना से, गौतम भैण से, भारद्वाज उगालन से तथा कोडिन्य अन्य स्थान से आकर बस गये। जोत भूमि जाटों व ब्राह्मणों के पास अधिक है। इस गांव में जाट, ब्राह्मण, चमार, सुनार, बनिया, तेली, मनियार, डूम, बाल्मीकि, बादी, कुम्हार, बैरागी, लौहार (हिन्दू व मुसलमान) चमखे पंडित, झीमर आदि 17 जातियों के लोग प्यार से रहते हैं। इस गांव में 19 हजार बीघे उपजाऊ जोत भूमि है जिसकी सिंचाई चितंग नहर व नलकूपों से होती है। यहां सभी प्रकार की फसल पैदा होती है। इसमें 1236 घर (कुटिया), 18 वार्ड, जनसंख्या 5963, मतदाता 3941 है। श्री महासिंह, दयाकिशन, अनूपसिंह, बबलू, रामकुमार हरिजन, फूलचन्द, राजेराम खाती व रामकुमार चमार नम्बरदार व दो चौकीदार भी हैं। गांव में आर्यसमाज का प्रभाव काफी रहा है। रामह्रय (रामरा गाँव) में 16 तीर्थ स्थल थे जिनमें से आज केवल दो बचे हैं। इनमें एक परशुराम का मन्दिर व दूसरा सूर्यकुण्ड (तालाब) है। प्रजातन्त्र व्यवस्था कायम करने में हताहत हुए राजाओं की मुक्ति के लिए पांच कुण्डों का निर्माण करके भगवान परशुराम ने तर्पण किया था, जिनको अमृत कुण्ड के नामों से जाना जाता है। राजपुरा-भैण का गोविन्द कुण्ड इन्हीं में से एक है। पं० कृष्ण दत्त गौतम के पूर्वजों ने यहां शिवालय और घाट बनाए हुए हैं।

रामह्रय तीर्थ में स्नान का पुण्य एक हजार गोदान व अश्वमेघ यज्ञ के बराबर माना गया है। इसी स्थान पर पूर्णमासी के दिन वर्ष में दो बार कार्तिक व वैशाख में मुख्य मेले लगते हैं जिसमें लोग स्नान व पुण्य दान कर अपने पिण्ड दान करते हैं। रामह्रय गाँव रामराय का पुराकालीन नाम है। वामन पुराण अंक 45 श्लोक 29 में यहां का उल्लेख है। भगवान परशुराम यहां त्रेतायुग में आये थे, यहीं तपस्या की और इसी स्थान पर डेरा जमा लिया। यहां सूर्यकुण्ड, समंत पंचम, सन्नहित, पवन ह्रद, वायुह्रद, कल्याण व कल्याणी तीर्थ आदि 16 तीर्थ स्थान बने हुए हैं। यक्षणीह्रय व कल्याणी तीर्थ हैं। द्वापर युग में सूर्यग्रास, सूर्य ग्रहण के अवसर पर भगवान श्री कृष्ण सपरिवार संमत पंचक रामह्रय में पधारे थे। यहाँ कुण्डों में स्नान कर दान दक्षिणा दी थी।

यह तीर्थ कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के अधिकार क्षेत्र में आता है। कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि का हिस्सा होने के कारण, यहां पर अस्थियाँ (फूल) नहीं उठाए जाते हैं। यहाँ पर दिवाली से अगले दिन उत्तर भारत में पशुओं का प्रसिद्ध मेला लगता है जिसमें अन्य प्रान्तों के पशु व्यापारी आते हैं। रामह्रय तीर्थ के चारों ओर काफी बिरादरी व पक्के घर हैं। इस रामह्रय तीर्थ (रामराय) में काफी धर्मशालाएँ कलात्मक भवन व कुटिया थी जो पुरातात्विक अवशेष बन चुकी है। मेरा गाँव मेरी बगिया बढ़िया पार्क है। इस पर एक सूचना पट्टी लिखी है-

1. यह तीर्थ 29.17 उत्तर अक्षांश तथा 76.14 पूर्वी देशान्तर पर स्थित है।
2. यहाँ प्राचीन रामह्रय स्थित है जिसका विवरण कनिंघम ने पुरातत्त्व विभाग की रिपोर्ट XIV (89-90) में किया गया है।
3. यह स्थान कुरुक्षेत्र के दक्षिण-पश्चिम यक्ष कपिल द्वारासाल के रूप में स्थित है।
4. वामन पुरान (13.45) के अनुसार यहाँ पर कपिल यक्ष की पत्नी उलुखल भेखला यक्षी देवी का मन्दिर भी है।
5. यहाँ भगवान परशुराम का भव्य मन्दिर भी है।
6. पौराणिक कलानुसार यह स्थान भगवान परशुराम की तप स्थली कर्म स्थली है।
7. वामन पुराण (13.45) के अनुसार यहाँ भगवान परशुराम के पाँच कुण्ड हैं।
8. श्रीमद्भगवत महापुराण तथा महाभारत ग्रन्थ के अनुसार भगवान श्री कृष्ण जी तथा बलराम जी यादवों के साथ सूर्य ग्रहण के अवसर पर द्वारिका से यहाँ स्नानार्थ पधारे थे।
9. रामह्रय तीर्थ में प्रत्येक पूर्णिमा को दूर-दूर से श्रद्धालु स्नानार्थ तथा भगवान परशुराम के दर्शन के लिए यहाँ आते हैं।

10. प्रचलित मतानुसार इस रामह्रय सरोवर में स्नान से मनुष्य मोक्ष प्राप्त करता है।
11. रामराय में मध्यकालीन कुषाण तथा गुप्तकाल की ईंटें भी पाई जाती हैं। (थेह पर)
12. तीर्थ का नाम ब्रह्मा की पंच वेदी समन्त पंचकर्मी है।

वर्ष 1952 से आज तक के सरंपचों के नाम

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	जाति
1.	श्री चन्दगीराम	श्री छाजूराम	हरिजन
2.	श्री लक्ष्मी नारायण	श्री श्योजी राम	पण्डित
3.	श्री लक्ष्मी नारायण	श्री श्योजी राम	पण्डित
4.	श्री मांगेराम	श्री सहीराम	पण्डित
5.	श्री किताब सिंह	श्री मातूराम	जाट
6.	श्री लक्ष्मी नारायण	श्री श्योजी राम	पण्डित
7.	श्री राजेन्द्र सिंह	श्री रामस्वरूप	जाट
8.	श्री ओमप्रकाश	श्री धनसिंह	जाट
9.	श्री बारूराम	श्री लिजूराम	सैनी
10.	श्री राममेहर	श्री भगतराम	पण्डित
11.	श्री राजेन्द्र सिंह	श्री रामस्वरूप	जाट
12.	श्रीमती धन्नो देवी	पत्नी श्री भानाराम	हरिजन
13.	श्री राजेन्द्र सिंह	श्री रामस्वरूप	जाट
14.	श्री सतबीर सिंह	श्री रामकिशन	जाट

यह पहला नौगामे का गाँव है जहां पहला सरपंच हरिजन को बनाया गया था।

15.	श्रीमती सुदेश देवी	पत्नी श्री कुलदीप सिंह ढुल	जाट

गाँव में मुख्य सुविधाएँ : दस+दो तक स्कूल, दो प्राईमरी स्कूल, श्री ब्राह्मण संस्कृत महाविद्यालय (1904 से संचालित), 12 धर्मशालाएँ, दो डेरे, प्राईमरी हैल्थ सैन्टर, आंगनबाड़ी केन्द्र, पशु हस्पताल, बैंक शाखा, उपडाक घर, 8 चौपाल, आयुर्वेदिक हस्पताल, बिजली पावर हाउस, मेरी बगिया मेरा पार्क, ग्रामीण सचिवालय, युवा क्लब, गलियां पक्की आदि अन्य सुविधाएं शहर जैसी। आज गांव में श्री रतनसिंह ढुल पुत्र श्री मातूराम (96) सबसे बड़ा पुरुष है। श्री सुभाष ढुल ठेकेदार शराब बड़े जमींदारों में शामिल हैं।

गाँव के गणमान्य/स्वतन्त्रता सेनानी

1. स्व० वैद्य देवी दयाल, सदस्य प्रजामण्डल
2. स्व० चौ० दलसिंह पूर्व मंत्री सक्रिय सदस्य प्रजा मण्डल, स्वतन्त्रता सेनानी
3. स्व० चौ० रामस्वरूप स्वतन्त्रता सेनानी
4. स्व० चौ० निगाहा सिंह, स्वतन्त्रता सेनानी
5. पं० लक्ष्मी नारायण सोपर्ण
6. स्व० हजारी लाल नम्बरदार
7. पं० शिव नारायण शर्मा
8. चौ० भलेराम
9. मा० फतेह सिंह
10. पं० गंगा प्रसाद सोपर्ण, पूर्व वाईस चेयरमैन ब्लॉक समिति जीन्द

गांव के प्रसिद्ध वकील

1. सर्वश्री बलबीर सिंह ढुल पहला वकील नौगामा (जाट जाति से)
2. श्री परमेन्द्र ढुल, एम.एल.ए. जुलाना (दोबार)
3. श्री जसबीर सिंह ढुल
4. श्री आनन्द ढुल
5. श्री आनन्द ढुल पुत्र श्री सूरज भान ढुल
6. श्री रविन्द्र ढुल हाईकोर्ट चण्डीगढ़
7. श्रीमती पूजा ढुल, हाईकोर्ट चण्डीगढ़
8. श्री राजेन्द्र सिंह ढुल
9. श्री मनोज शर्मा
10. श्री महेन्द्र सिंह ढुल
11. स्व० चन्द्रसैन गुप्ता

गांव के I.A.S./I.P.S./H.C.S./I.F.S./जज

1. चौ० चन्द्रभान आई.पी.एस., रिटायर्ड एस.पी., पूर्व चेयरमैन H.P.S.C.
2. पं० शिवचरण शर्मा, आई.पी.एस., एस.पी.
3. पं० डी.डी. गौतम, आई.ए.एस., कमीश्नर (सेवानिवृत्त)
4. श्री जसबीर ढुल H.C.S. (Jud.), जिला एवं सत्र न्यायाधीश, करनाल
5. श्रीमती नरेन्द्र कौर ढुल, H.C.S. (Jud.), सिविल जज (प्रथम श्रेणी), करनाल
6. पं० सुधांशु गौतम, H.C.S.

7. श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता H.C.S. (Jud.), जज
8. श्री राजेन्द्र मित्तल, I.F.S. मुख्य वनपाल (आन्ध्रा प्रदेश)

चिकित्सक

1. डॉ० सुनील भारद्वाज, M.B.B.S., M.D.
2. डॉ० अमोल मित्तल, M.B.B.S. (Ortho)
3. डॉ० क्षितिज ढुल, M.B.B.S., M.D.

शिक्षा के क्षेत्र में राजपत्रित अधिकारी

1. प्रो० जितेन्द्र ढुल असिस्टेंट प्रोफेसर, एम.डी.यू. रोहतक
2. प्रो० नरेन्द्र ढुल, असिस्टेंट प्रोफेसर राजकीय (पी.जी.) कॉलेज, जीन्द (इतिहास)
3. प्रो० धर्मेन्द्र ढुल, असिस्टेंट प्रोफेसर (सेवानिवृत्त) कांग्रेस नेता
4. ज्योतिषाचार्य पं० फूलकुमार शास्त्री प्राध्यापक स्कूल (सेवानिवृत्त) संस्कृत/हिन्दी, ज्योतिषाचार्य (बनारस), पूर्व प्रधान एवं व्यवस्थापक ब्राह्मण संस्कृत कॉलेज, रामराय
5. श्री महाबीर सिंह ढुल, मुख्य अध्यापक (सेवानिवृत्त)
6. श्री कुलवन्त ढुल, हैडमास्टर (सेवानिवृत्त)
7. श्री कुलदीप सिंह ढुल, प्राध्यापक स्कूल (हिन्दी)

अन्य सरकारी सेवाओं में अधिकारी

1. श्री रामप्रसाद गुप्ता, चीफ इन्जीनियर (सेवानिवृत्त)
2. श्री भीमसैन गुप्ता, संयुक्त निदेशक, को-आप्रेटिव सोसायटी (सेवानिवृत्त)
3. श्री यतेन्द्र सैन गुप्ता, संयुक्त आयुक्त नगर निगम, रोहतक
4. श्री कृष्ण शर्मा, तहसीलदार (सेवानिवृत्त)
5. श्री मोहन दत्त शर्मा, डिप्टी रजिस्ट्रार हाईकोर्ट (सेवानिवृत्त)
6. श्री रिषी दत्त शर्मा, डिप्टी रजिस्ट्रार हाईकोर्ट (सेवानिवृत्त)
7. श्री ब्रह्म दत्त गौतम, एस.डी.ओ. (सेवानिवृत्त)
8. श्री सुरेन्द्र दत्त गौतम, मुख्य लेखा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
9. श्री सुभाष भारद्वाज, मुख्य लेखा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
10. श्री राधे श्याम शर्मा, डी.एम.ओ., पंचकूला
11. श्री कृष्ण दत्त गौतम, अधीक्षक हाईकोर्ट (सेवानिवृत्त)

रामराय गाँव से ईक्कस व रामराय खेड़ा आबाद हुए। पूर्णमास के मेले के अवसर पर कुश्ती का विशाल दंगल होता है, जिसमें हरियाणा प्रान्त के नामी-गिरामी पहलवान

जोर आजमाते हैं। इस मेले में मशहूर पहलवान उदयचन्द जाण्डली व हिन्द केसरी मा० चन्दगीराम भी आया करते थे। पुराने जमाने में एक कहावत थी कि ''बाबू ब्याहा दिये कड़ीया पाऊगी रामरा।'' यहाँ पर मेलों के समय रिश्तेदारों का मिलन भी होता था। पहले से तय होता था कि फलां मेले पर रामरा नहाने आऊंगा या आऊंगी वहां मिलेंगे, क्योंकि दूरसंचार व चलित वाणी के साधन ना के बराबर थे। नौगामा खाप (तपे) का विधिवत् गठन इसमें पड़ने वाले 21 गांवों के मौजिज लोगों की रामह्रय तीर्थ पर दिनांक 1 नवम्बर 1948 वार सोमवार कार्तिक पूर्णमासी के दिन बैठक बुलाकर किया गया था। इस बैठक की अध्यक्षता चौ० केवल सिंह जागलान जलालपुर कलां (छाना) ने की थी। लेकिन इसका लिखित रिकार्ड नहीं मिला है, केवल मौजिज व जानकार लोगों से प्राप्त जानकारी से लिया गया है। गांवों के पुराने पंचायती चौ० दलसिंह पूर्व मंत्री, पं० लक्ष्मी नारायण, हजारी नम्बरदार, चन्दगीराम पूर्व सरपंच, रतनसिंह, वैद्य देवी दयाल, भलेराम, पं० भगतराम, चन्दगीराम, मा० फतेह सिंह, मा० हजारी सिंह रहे। आज की पंचायत में कुलदीप सिंह, राममेहर पूर्व सरपंच, राजेन्द्र सिंह पूर्व सरपंच, किताब सिंह पूर्व सरपंच, राममेहर ढुल, फूल कुमार शास्त्री, धर्मेन्द्र ढुल, पवन भारद्वाज, हजारा सिंह, रविन्द्र ढुल वकील, जसबीर वकील, अमित कुमार, सुभाष ठेकेदार आदि हैं।

चौ० दलसिंह पूर्व मंत्री

जीन्द जिला की पावन धरा नौगामा खाप तपा रामराय में दलसिंह का जन्म चौ० रामनाथ व माता श्रीया देवी के घर 15 जनवरी, 1915 को हुआ। जो बाद में खुण्डा झोटा व पानी का बादल के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आपके पिता जी एक छोटे से किसान, आर्यसमाजी व समाज सेवी थे। चौ० रामनाथ के पांच पुत्र कोहर सिंह (पटवारी), दलसिंह (पूर्व मंत्री), रामस्वरूप (स्वतन्त्रता सेनानी), जागेराम (जो युवा अवस्था में चल बसा), चन्द्रभान (एस.पी. रिटायर्ड) तथा तीन कन्या पैदा हुई। चौ० दलसिंह का बचपन गांव की गलियों व रामह्रय तीर्थ पर बड़े लाड़ प्यार से गुजरा। आप का विवाह छोटी सी आयु में श्रीमती बादामो देवी गाँव सोरखी (हाँसी) के साथ हुआ। इनकी कोख से एक पुत्री शकुन्तला देवी (पूर्व अध्यक्ष नगर पालिका उचाना) व एक पुत्र पैदा हुआ जो छोटी सी आयु में चल बसा। आपकी कक्षा चार तक

की शिक्षा गांव के स्कूल से, पांचवीं अपने ननिहाल अलखपुरा से, आठवीं नारनौंद से तथा दसवीं प्राईवेट पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर (पंजाब) वर्ष 1935 में प्रथम श्रेणी में पास की। आप वर्ष 1936 में दूसरी रॉयल लेन्सर ब्रिगेड (सेना) में भर्ती हो गए। सेना में जाने के बाद आपने स्पेशल क्लास ऑफ इण्डियन आर्मी जो बी.ए. के बराबर थी की परीक्षा पास की। दूसरा महायुद्ध के दौरान आप 1941 से 1945 तक युद्ध बन्दी रहे। आपको विदेशों की जेलों में समय काटना पड़ा तथा काफी कष्ट सहन किए। इसी दौरान आपको इजिप्ट, साऊदी अरब, लीबिया, शीशली, ईटली, जर्मनी, फ्रांस, बैल्जियम, इंग्लैण्ड देखने का मौका मिला। अपने बन्दीकाल के समय उन देशों का रहन-सहन, खान-पान आपके साथ उनका व्यवहार आदि अपनी डायरी में विस्तार से लिखा है। सेना से लौटने के बाद आप गांव की राजनीति में लग गए। गांव में कई वर्ष तक लकड़ी का आरा भी चलाया। उसके बाद गांव छोड़कर नरवाना रोड पर अपना आवास बना लिया जो चौ० दलसिंह की कोठी के नाम से मशहूर रहा है। आपने कई वर्षों तक मै० रामनाथ दल सिंह जीन्द मण्डी में कमीशन एजेन्ट की दुकान चलाई। श्रीमती बादामो देवी के कोई और सन्तान पैदा न होने के कारण वर्ष 1954 में परिवार व रिश्तेदारों के दबाव के कारण आपने श्रीमती नच्छत्तर कौर अध्यापिका से विवाह किया। इनकी कोख से चार पुत्रियां व एक पुत्र परमेन्द्र ढुल (अब विधायक जुलाना) पैदा हुआ। इन्होंने अपने सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा देकर उनकी शादियां बढ़िया व खानदानी घरों में कर रखी है। आप वर्ष 1952 में प्रजा मण्डल प्रणाली के पहले चुनाव में जीन्द हल्का से पहले विधायक चुने गए। उसके बाद 1954, 1965, 1967, 1970 व 1972 में छः बार विधायक बनने का जीन्द जिले का रिकार्ड आपके नाम है। आप बिजली व सिंचाई मंत्री हरियाणा सरकार में 01-11-1966 से 23-03-1967 तक रहे। इस दौरान जीन्द की नहरें एक दिन भी बन्द नहीं रही, लोगों को भरपूर पानी व बिजली मिलती थी। इसी कारण आपको पानी का बादल कहा जाता था। आप जिसके काम की हां कर देते थे, समझो वह पक्का होगा, आपको चाहे किसी हद तक जाना पड़ता था, काम होता था। इसी कारण आपको प्यार से खुण्डा झोटा भी कहा जाता था। आपने इलाके के काफी लोगों को सरकारी नौकरियों में बिना भेदभाव व बिना खर्चा करवाये लगवाया। जब भी किसी के काम के लिए जाते थे तो किसी से गाड़ी में तेल तक नहीं डलवाया। जो एक बार इनको मिल लेता था वह इनका पक्का हो जाता था। हर माह कोठी पर हल्के के लोगों की मीटिंग बुलाकर उनका हाल चाल पूछते थे। आप कई चुनाव हारे, परन्तु मेहनत के बल पर पटीशन करके अपनी जीत पक्की करवा लेते थे।

आपको पटीशन एक्सपर्ट माना जाता था। आप सेना के दौरान फुटबाल टीम के सदस्य रहे तथा सेना फुटबाल टूनामैंट वर्ष 1937 में लाहौर में मैडल प्राप्त किया। आप प्रजामण्डल जीन्द के सक्रिय सदस्य रहे, चण्डीगढ़ बंटवारा आन्दोलन 1970, अध्यापक आन्दोलन 1973, बिजली कट आन्दोलन 1975 तथा मीसा के तहत जेल में रहे। आप 1946 से 1956 तक जाट हाई स्कूल जीन्द के सचिव 1954 से 1959 तक जिला संगरूर कांग्रेस प्रधान 1955-56 में पी.ए.सी. कमेटी पेप्सु के सदस्य, 1961 से 1965 तक चेयरमैन पंचायत समिति, 1962-64 तक सब रजिस्ट्रार जीन्द, 1965-66 में पहले चेयरमैन मार्किट कमेटी जीन्द, 1965 में सदस्य सिविल डिफैन्स कमेटी रहे। आपने आई.एन.ए. के सैकड़ों युद्ध बन्दियों को भर्ती करके हिटलर के सहयोग से सिंगापुर भिजवाने का काम किया। आप बंदी के दौरान विदेशियों को हिन्दी पढ़ाते थे। आपको जर्मनी, रसियन, अरबी, उर्दू, पंजाबी, हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी आदि भाषाओं का ज्ञान था। आप अपनी अन्तिम यात्रा से पहले चीनी भाषा को सीख रहे थे। आपके मृदु व्यवहार, सादा रहन सहन, कठिन परिश्रम, जनसेवक तथा उदारता के कारण आज भी लोग आपको याद करते हैं। यह परिवार पूरे क्षेत्र का एक सम्मानित एवं प्रतिष्ठित परिवार है। आप दिल का दौरा पड़ने से 21 जनवरी, 1991 को इस संसार को छोड़कर चले गए। मैं अन्त में भगवान से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ।

वंशावली : रणविजय सुपुत्र रविन्द्र सिंह, विश्वेन्द्र सुपुत्र सतिन्द्र सिंह पुत्रान चौ० परमेन्द्र ढुल विधायक सुपुत्र चौ० दलसिंह पूर्व मंत्री, सुपुत्र चौ० रामनाथ सुपुत्र चौ० शंकर सिंह सुपुत्र चौ० हरभगत ढुल।

(इनके पौत्र रविन्द्र ढुल एडवोकेट के सौजन्य से)

❑❑❑

2. गाँव ईगराह

यह गाँव भिवानी-जीन्द मार्ग पर नौगामा खाप का आखिरी गाँव हैं जो तीन ओर से हिसार जिला से घिरा हुआ है। जीन्द मुख्यालय से 12 किलोमीटर दूर, खण्ड जीन्द विधानसभा क्षेत्र जुलाना के अन्तर्गत आता है। यह नौगामा के पुराने नौगांवों में आता है। गांव का नामकरण ईगराही देवी की यादगार में रखा गया है। ईगराही देवी का स्थान बराहवन (बीड़) कहा गया है। बाद में महाराजा रघुबीर सिंह द्वारा सन् 1875 में ईगराही से बदलकर इसका नाम ईगराह रख दिया। इसका पहले कुछ समय अगराही भी नाम रहा है, अगराही, एक सन्तान दामिनी, सन्ततिवर्धक व रक्षक देवी कमल यज्ञ की यज्ञी, नारद उपपुराण-हटकेश्वर मण्डल में इस देवी का स्थान जैसे पहले लिखा जा चुका है बराह बन कहा है। इसी देवी शक्ति को ईगराही, गिराही, अनोखली, मेहबला अल या उलखला मेहबला या महाबला भी कहा जाता है। (पंजाब स्टेट गजेटियरज खण्ड X, VII, 1904-20.219) में है। जानकार लोग मानते हैं कि यहाँ पर कभी वर्षों पहले कोई गांव था जो पुरातात्त्विक दृष्टि से बहुत महत्त्व रखता है और कभी भी राष्ट्रीय पुरातात्त्विक मानचित्र पर आ सकता है क्योंकि यहाँ से कुषाण यौद्धेय सिक्के मिल चुके हैं। इसी खण्डहर (थेह) पर ऊंचे दड़े पर एक आश्रम व धर्मशाला और एक गुफा है जो विश्व कर्मा साधु ने स्वयं के लिए स्वयं बनाई थी। इस गुफा का निर्माण भारतीय भवन निर्माण व प्रादेशिक वास्तुकला का एक अनुपम नमूना कहा जा सकता है। विक्रमी संवत् 1600 ई० सन् 1544 में रेढू गोत्र का एक पूर्वज गांव बालक (हिसार) से आकर बस गया। आज गाँव के रेढू गोत्र के जाटों के एक बड़ा पाना जिसमें जगदे ठोला, संसार सिंह ठोला, जयकरण ठोला, रेढू ठोला तथा नरवल गोत्र के भाई जो बाद में कथूरा से आकर बसे इसी पाने में गिने जाते हैं। दूसरा छोटा पाना जिसमें रेढू, सहरावत जो किला जफरगढ़ से आए, बड़क बालन्द रोहतक से, व श्योराण उचाना से आए भी इसी पाने में गिने जाते हैं। गांव में जाट, ब्राह्मण, चमार (काटरिये), बाल्मीकि, डूम, खाती, कुम्हार, लौहार, सुनार, झीमर, गोस्वामी, महाजन, मनियार आदि के करीब 1147 घर हैं। जनसंख्या 5893, मतपत्र 3906, वार्ड संख्या 17, एक सरपंच, छः नम्बरदार, श्री रामकिशन शर्मा, श्री दलबीर रेढू, सतपाल रेढू, श्योकिन्द्र रेढू, राजबीर नाई, रघवीर सिंह हरिजन (चमार) व कर्मपाल चौकीदार है। गांव में आज तक के सरपंचों का ब्यौरा

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	जाति
1.	श्री लहरीसिंह	श्री टोडरमल	श्री गोस्वामी
2.	पं० चतरूराम	श्री हरकेश	पण्डित

3.	श्री महताब सिंह	श्री धर्मसिंह	जाट
4.	पं० लखीराम	श्री उदमीराम	पण्डित
5.	श्री करतार सिंह	श्री भोलाराम	जाट
6.	श्रीमती चन्द्रपति	पत्नी चन्द्रभान	जाट
7.	श्री रणसिंह	श्री भूरूराम	जाट
8.	श्री दीवान सिंह	श्री रणसिंह	जाट
9.	श्री राममेहर	श्री उजाला राम	जाट
10.	श्री मेहर सिंह	श्री जुगलाल	जाट
11.	श्री अजमेर सिंह	श्री बिजेसिंह	जाट
12.	शीला देवीपत्नी श्री राजेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री जोगीराम		जाट
13.	श्री रामकुमार	श्री कंवरसिंह	जाट
14.	श्रीमती मुकेश	पत्नी श्री सुभाषचन्द्र	जाट
15.	श्री दलसेर सिंह	श्री देशराज	बाल्मीकि

स्वतन्त्रता सेनानी

1. चौ० दीवान सिंह सुपुत्र चौ० लहरीसिंह
2. चौ० रामकिशन पुत्र चौ० मांगूराम

गांव के शहीद

1. शहीद सिपाही बिजेसिंह एएससी, भारत-पाक युद्ध 1965
2. शहीद सिपाही नफेसिंह एएससी, भारत-पाक युद्ध 1971
3. शहीद हवलदार राजकुमार ऑपरेशन गुरेज सैक्टर 2003 (कारगिल) आर्टलरी रेजीमेंट

गांव में 19 हजार बीघा जोत भूमि है। परन्तु नहरी पानी की काफी कमी है। पीने का पानी भी पास के गांव बीबीपुर से वाटर वर्क्स द्वारा सप्लाई किया जाता है। लोग मेहनत करके गेहूं, जीरी, बाजरा, ज्वार, सरसों, कपास की खेती करते हैं। गांव की गलियां पक्की, नालियां बनी हुई हैं। गांव में खेल स्टेडियम, बारहवीं तक स्कूल, कन्या हाई स्कूल, यदुवंशी शिक्षा निकेतन व आर.बी.एन. सी. सै. स्कूल, आंगनबाड़ी केन्द्र, मिनी बैंक, पंचायत घर, डाकघर, 80 प्रतिशत घरों में शुलभ शौचालय, 6 चौपाड़, एक प्राचीन मन्दिर है। श्री साधुराम आश्रम के प्रथम स्वामी श्री भाणानन्द सरस्वती हुए हैं। आज इस आश्रम के संचालक स्वामी सूर्यानन्द सरस्वती हैं। भावेश्वर महादेव का मन्दिर भी इसी आश्रम में है। आज गांव का सबसे बड़ा जमींदार श्री भोलाराम पुत्र श्री श्यौगाराम 100 एकड़ भूमि का मालिक है। पं० टेकराम 92 वर्ष के सबसे बड़ी उम्र के पुरुष हैं। चौ० शेरसिंह आईजी पूर्व विधायक जुलाना ने गांव के करीब 100 लड़के

बीएसफ में नौकरी पर लगा रखे हैं। गांव की किसान यूनियन बहुत मजबूत है। गांव में आर्यसमाज का काफी प्रभाव है। श्री महेन्द्र सिंह आर्य हर वर्ष युवाओं के चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन करते हैं। गांव में युवा मण्डल भी है। गांव में भाईचारा बहुत ही बढिया है। गांव के पुराने पंचायतियों में स्व० वैद्य हरिसिंह, पं० चतरूराम, लहरीसिंह गोस्वामी, श्री बिशन सिंह, श्री रामचन्द्र (गाटर) रहे हैं। आज के पंचायती जो नौगामा की पंचायतों व गांव के सामूहिक कार्य में आगे रहते हैं। श्री कंवर सिंह, श्री महेन्द्र सिंह आर्य, श्री नफेसिंह प्रधान, किसान यूनियन, श्री प्रो० दलबीर सिंह, श्री अजमेर सिंह पूर्व सरपंच, अजमेर सिंह, श्री कुलवन्त सिंह वकील, पं० सीताराम कौशिक, रामकुमार, मेहर सिंह पूर्व सरपंच, बदन सिंह, कै० राममेहर आदि हैं।

गांव के गणमान्य सम्मानित अधिकारी पुरुष

1. आई.जी. शेरसिंह पूर्व विधायक जुलाना (दो बार)
2. श्री जिलेसिंह, आई.पी.एस. (सेवानिवृत्त) एस.पी.
3. श्री युद्धवीर सिंह सहरावत, आई.ए.एस., आयुक्त कस्टम विभाग, भारत सरकार
4. श्री सूरजभान गोस्वामी, कमाण्डेंट बी.एस.एफ. (राष्ट्रपति पदक विजेता)
5. श्री रघवीर सिंह सहरावत, लेफ्टीनेंट जनरल
6. श्री राजसिंह रेढू, उपजिला न्यायवादी (सेवानिवृत्त)
7. श्री कंवल सिंह, एस.डी.ओ. पुत्र श्री कुलदीप रेढू
8. श्री कुलवन्त सिंह रेढू वकील
9. प्रो० दलबीर सिंह रेढू, प्राध्यापक स्कूल (सेवानिवृत्त)
10. स्व० पन्ना लाल सिंगला पहला वकील
11. श्री महेन्द्र सिंह आर्य, प्रधान आर्यसमाज, पूर्व प्रधान किसान यूनियन
12. श्री नफेसिंह रेढू, प्रधान किसान यूनियन
13. स्व० देवेन्द्र स्वरूप ब्रह्मचारी पूर्व संचालक, जयराम आश्रम हरिद्वार
14. श्री स्वामी सूर्यानन्द सरस्वती, संचालक-श्री साधु आश्रम, ईगराह
15. श्री ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी, संचालक-भारत में सभी जयराम आश्रम संस्थानों के
16. श्री राममेहर रेढू, सेवानिवृत्त अधीक्षक बिजली बोर्ड
17. श्री रमेश कौशिक, कमाण्डेंट बी.एस.एफ.
18. कै० राममेहर रेढू (रिटायर्ड)
19. मनबीर सिंह रेढू, प्रेरक, कीट साक्षरता मिशन
20. श्रीमती सुनीता वशिष्ठ, पत्नी अशोक वशिष्ठ, मशरूम ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने पर महिला राज्यपाल हरियाणा द्वारा सम्मानित।

रिटायर्ड आई.जी. शेरसिंह का संक्षिप्त जीवन परिचय

आई.जी. शेरसिंह का जन्म 15 अगस्त, 1939 को गांव ईगराह में एक मेहनती किसान चौ० रणसिंह सहरावत के घर हुआ। शेरसिंह की प्राथमिक शिक्षा पैतृक गांव ईगराह से हुई और एम.ए. की डिग्री वर्ष 1961 में बरेली कॉलेज, बरेली (आगरा विश्वविद्यालय) से प्राप्त की। इन्होंने एम.ए. राजनैतिक विज्ञान से की।

सेना कार्यकाल : वर्ष 1961 में सेना में भर्ती हुए। वर्ष 1962 में भारत-चीन युद्ध के दौरान लद्दाख में तैनात रहे। 30 जून 1963 को भारतीय सेना में कमीशन प्राप्त किया और तोपखाना में सेवा शुरू की। वर्ष 1965 भारत-पाक युद्ध में बाड़मेर (राजस्थान) में दुश्मन सेना को करारा जवाब दिया। वर्ष 1967 में ऑन डेपुटेशन पर बी.एस.एफ. में सहायका कमाडेंण्ट नियुक्त हुए और बीएसएफ में ही स्थाई तौर पर समायोजित हो गये। वर्ष 1971 भारत-पाक युद्ध के दौरान जम्मू-कश्मीर के सैक्टर गुरेज में तैनात रहे। वर्ष 1973 में कमाण्डेंट पद पर पदोन्नत हुए। बीएसएफ में तैनाती के दौरान पंजाब, त्रिपुरा, मिजोरम, नागालैण्ड, जम्मू-कश्मीर के डोडा में आतंकवाद के समय विशेष मिशन के तहत विपरीत परिस्थितियों में तैनात किया गया। उग्रवाद के दौरान नागालैण्ड में देश के खिलाफ भूमिगत गतिविधियों में संलिप्त लोगों के साथ समझौते के दौरान सरकार ने अंडरग्राऊण्ड नागाओं की बीएसएऊ की बटालियन स्थापित की। आपने उस बटालियन को कमांड किया और स्पेशल ऑपरेशनों में उग्रवाद पर काबू पाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्ष 1981 में डीआईजी और 1993 में आईजी पदोन्नत हुए। सेना में रहते प्रेजीडेंट पुलिस मेडल फॉर डिस्टिंगविस्ट सर्विस से सम्मानित हुए। वर्ष 1997 बतौर आईजी सेवानिवृत्त हुए।

राजनैतिक कार्यकाल : वर्ष 2000 में कांग्रेस की टिकट पर जुलाना विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा और कांग्रेस को 28 वर्ष बाद जीत दिलाकर हुए प्रथम बार विधायक बने। पांच वर्ष तक विपक्ष में रहते हुए चौटाला शासनकाल के दौरान जुलाना क्षेत्र की समस्याओं को प्रमुखता से विधानसभा में उठाया। उसके बाद वर्ष 2005 में हुए विधानसभा चुनाव में लगातार दूसरी बार जुलाना से कांग्रेस के विधायक बने। मुख्यमन्त्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के नेतृत्व में बनी कांग्रेस सरकार में जुलाना क्षेत्र में शिक्षा, सड़क, चिकित्सा, बिजली, पानी, जैसी समस्याओं का निपटान करवाने में अहम भूमिका

निभाई। इसी कार्यकाल के दौरान जुलाना में राजकीय कॉलेज, नई अनाज मण्डी, नया अस्पताल, नया तहसील भवन, नया आईटीआई भवन समेत कई गांवों में बिजली घरों, जलघरों, बुस्टिंग स्टेशनों का निर्माण करवाया। पूरे विधानसभा क्षेत्र में करीब सवा सौ किलोमीटर नये पहुंच मार्गों का निर्माण, हजारों युवाओं को मैरिट के आधार पर नौकरी दिलवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मैं आई.जी. साहब के स्वस्थ रहने एवं दीर्घ आयु की भगवान से प्रार्थना करता हूँ।

❑❑❑

3. गांव बीबीपुर

यह गाँव खण्ड व तहसील जीन्द में जीन्द-भिवानी मार्ग पर जीन्द से 7 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव नौगामा खाप, जुलाना विधानसभा तथा सोनीपत लोकसभा के अन्तर्गत आता है। जानकार सूत्रों व भाट बही-पोथियों के अनुसार विक्रमी संवत् 1600 सन् 1544 में गांव ईटल से दादा सवाई सिंह के साथ एक खाती जागलान, मुदगिल ब्राहमण, एक चौहान चमार आकर बस गया। साहू गोत्र के तीन वरिष्ठ पुरुष चौ० चाँदूराम, चौ० हरदास व चौ० बुढ़ा जो नि:संतान चला गया, गांव भालन (गुगामेड़ी), राजस्थान से आकर बस गए। इनके बारे में कोई सबूत प्राप्त नहीं हुआ कि ये कब आकर बसे। इनका एक वरिष्ठ पुरुष अर्जुन सिंह रानीला (भिवानी) में बस गया था। प्राचीन तालाब के ऊपर (जहां आज श्याम जी का डेरा है) डेरे में धोलागिरी साधु रहता था। लोगों का मानना है कि इससे पहले इस गांव का नाम धोलागढ़ था, इस बारे भी कोई लिखित सबूत नहीं है। यह एक ऐतिहासिक गांव है। बुद्धिजीवी लोगों से बात करने पर पता चला है कि हांसी के शासक जार्ज थॉमस के साथ राजा गजपत सिंह जीन्द की दो बार लड़ाई हुई, जिसमें राजा गजपत सिंह की हार हुई। जब जार्ज थॉमस ने तीसरी बार जीन्द राजा को ललकारा तो राजा गजपत सिंह ने महाराजा पटियाला से सहायता मांगी। यह दोनों रजवाड़े आपस में मामा-फूफी के रिश्तेदार थे। किसी बात पर इनमें अनबन चल रही थी। इस बात का पटियाला के राजा की बहन बीबी साहिब कौर को पता चल जाने के बाद बीबी साहिब कौर अपनी सेना की टुकड़ी लेकर जीन्द आ गई और राजा जीन्द की मदद करके सन् 1788 में जार्ज थॉमस को करारी हार दिलाई। इस लड़ाई में बीबी साहिब कौर की सेना का कैम्प आज के बीबीपुर गांव के पास ही डला था तथा इस कारण राजा गजपत सिंह ने बीबी साहिब कौर के नाम से इसका नाम बीबी वाला पिण्ड रख दिया जो बाद में बिगड़कर बीबीपुर हो गया। जीन्द के राजा ने खुश होकर जो भूभाग 18 हजार बीघा है भूमि का मालियाना का चौथाई भाग माफ तथा बाकी मालियाना हक यानि उगाही बीबी साहिब कौर को मिलती थी। बीबी साहब कौर को अगर गांव का कोई पुरुष यह कह देता कि इस बार फसल अच्छी नहीं हुई तो मैं माल नहीं अदा कर सकता तो बीबी कहती कोई बात नहीं आप अपने बच्चों का पालन-पोषण करो। बीबी साहिब कौर बहुत ही दयालु थी। आज गांव में दो तिहाड़ा व लादान पाने जागलान जाट गोत्र, एक पाना जागलान खाती, दो चान्दू व हरदास पाने साहू गोत्र, एक पाना पंवार गोत्र जिनका वरिष्ठ पुरुष पनिहारी से आकर बसा था। अन्य जाटों मे गोयत, डांगी व लाम्बा

गोत्र के भाई भी बाद में आकर बसे हैं। अन्य जातियों में बैरागी जागलान 5 घर, चमार चौहान 200 घर, बाल्मीकि 130 घर, अठवाला बादी 5 घर, नाई 4 घर, कौशिक 40 घर बडाना से, 15 घर मुदगिल ईटल से, 60 घर भारद्वाज, जागलान खाती, चौहान चमार, जागलान जाटों के साथ ईटल से आए हैं। गोस्वामी 11 घर, कुम्हार 25 घर, मनियार 1 घर, बनिया 8 घर आदि जातियों के 1095 घरों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। कुल मत पत्र 3950 जनसंख्या 5232 है। गांव में एक सरपंच, 15 पंच, बारू राम जागलान, सुनील जागलान, सुलतान पंवार, जय नारायण साहू, हरकेश साहू, रामचन्द्र साहू, बिजेन्द्र हरिजन, कली राम नाई आदि 8 नवम्बर ताजू राम चौकीदार तथा दो गलियों की सफाई कर्मचारी है। शादियों में कार्ड चलन व टैण्ट प्रथा से पहले लड्डू जलेबी, गुलदाना और जमीन पर बैठकर खाने का जब तक रिवाज रहा। इस गांव में वनस्पति घी लाने पर पूर्ण रोक थी। सभी भाई, मिठाइयां देशी घी से ही बनाते थे। इस बात का नौगामा खाप में रिकार्ड रहा है। किताबो देवी पुत्री चौ० रलदूराम जागलान गांव की सबसे बड़ी जमींदार है। श्री जुगलाल चमार आज गांव में सबसे बड़ा बुजुर्ग है। श्री रणबीर दांगी पुत्र श्री रतन सिंह का गांव में संयुक्त परिवार है। यह आज के जमाने में बहुत बड़ी बात है।

वर्ष 1952 से आज तक की पंचायतों का ब्यौरा

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	जाति
1.	सूरजा कौशिक	श्री श्योनाथ कौशिक	ब्राह्मण
2.	चौ० रिसाल सिंह पंवार	श्री देवतराम पंवार	जाट
3.	चौ० अर्जुन नम्बरदार	चौ० सुखीराम जागलान	जाट
4.	चौ० हरनारायण साहू	श्री केहर सिंह साहू	जाट
5.	चौ० हरनारायण साहू	श्री केहर सिंह साहू	जाट
6.	श्री जयभगवान जागलान	श्री बिहारी लाल जागलान	जाट
7.	श्री पृथ्वीसिंह जागलान	श्री कांशीराम जागलान	जाट
8.	श्री भीमसिंह जागलान	श्री फूलसिंह जागलान	जाट
9.	श्री बक्शीराम साहू	श्री रामजस साहू	जाट
10.	श्रीमती कमला देवी पत्नी	श्री प्रताप सिंह हरिजन	चमार
11.	चौ० महावीर जागलान	चौ० गुलजारी जागलान	जाट
12.	श्री सुनील जागलान	मा० ओमप्रकाश जागलान	बैरागी
13.	श्रीमती दीपिका पत्नी	श्री नवीन साहू	जाट

गांव के प्रथम/द्वितीय श्रेणी अधिकारी, वकील व सम्मानित व्यक्ति

1.	श्री रामकुंवर साहू	ईटीओ (रि०)
2.	स्व० श्री बीर सिंह साहू	मुख्याध्यापक (रि०)
3.	स्व० श्री रामचन्द्र साहू	एम.ए. (अर्थशास्त्र) एवं कई भाषाओं का ज्ञाता (एन.आरआई.) नाईजीरिया
4.	का० बलबीर सिंह साहू	वकील एवं समाजसेवी
5.	श्री सुनील जागलान	पूर्व सरपंच, जनक : सैल्फी विद डॉटर एवं कई बार प्रशासन द्वारा सम्मानित
6.	श्री कृष्ण साहू	डी.ए. (रि०)
7.	श्री प्रशान्त साहू	वकील, पूर्व प्रधान बार एसोसिएशन जीन्द
8.	रोहताश साहू	वकील
9.	श्री जिलेसिंह जागलान	इनकम टैक्स वकील, नगर पार्षद (6वीं बार)
10.	श्री सुनील जागलान	इनकम टैक्स वकील
11.	श्री जोरासिंह साहू	जी.एम. मिल्क प्लांट जीन्द (रि०)
12.	श्री जगदीश जागलान	डी.ओ. (एल.आई.सी.)
13.	श्री सुरेश प्रजापत	वकील
14.	श्री विजय सिंह साहू	वकील
15.	श्री नरेन्द्र साहू	सी.एस.आई.एफ. अधिकारी
16.	श्री देवेन्द्र साहू	अधीक्षक केन्द्रीय आबकारी एवं कस्टम विभाग
17.	श्री अजय साहू	एन.आर.आई. (सी.ईओ.) अमेरिका
18.	श्री सतबीर सिंह वाल्मीकि	सीनियर जज करनाल
19.	श्री दयासिंह जागलान	असिस्टेंट प्रोफेसर (रि०), राष्ट्रवादी चिन्तक
20.	श्री हरीशचन्द्र जागलान	असिस्टेंट प्रोफेसर (रि०)
21.	श्री बिजेन्द्र मुदगिल	प्रधानाचार्य कॉलेज (रि०)
22.	डॉ० (कै०) कपिल जागलान	एम.बी.बी.एस., एम.डी.
23.	श्री जसबीर सिंह जागलान	प्राध्यापक स्कूल

गांव की गलियां पक्की व नालियां बनी हुई हैं। 10+2 स्कूल लड़कों का, कन्या उच्च विद्यालय, केडीएम हाई स्कूल, ओशिश इन्टरनेशनल स्कूल, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, पशु हस्पताल, बैंक शाखा, वाटर वर्क्स, 4 तालाब, एक तालाब का नाम लाडो तालाब रखा गया है। 4 मन्दिर, 7 चौपाड़, बाल सुधार एवं केन्द्रीय भण्डार गृह (निर्माणाधीन), लाडो मार्ग, गांवों के बीच पार्क, लादण चौपाल में महिला पुस्तकालय

के साथ दो डाटा इंस्टैक्टर, नेट व फोटोस्टेट सुविधा, इंसटेक्ट्रो को 12000 रुपये मासिक वेतन प्रयोग फाऊंडेशन द्वारा दिया जाता है। 14 जुलाई, 2012 को गांव में पहली महिला खाप पंचायत की बैठक हुई तथा गांव की महिलाओं ने भ्रूण हत्या के खिलाफ अभियान चलाने का फैसला लिया जिसका नतीजा यह रहा कि प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने दोबार मन की बात कार्यक्रम में बीबीपुर गाँव का नाम पूर्व सरपंच सुनील के साथ लिया। पूर्व सरपंच सुनील जागलान के कार्यकाल में गांव में काफी विकास हुआ। भारत की पहली हाईटेक ग्राम पंचायत, पहली पैन कार्ड धारक पंचायत, लिंगानुपात पर राष्ट्रीय पुरस्कार एक करोड़ जीतने वाली भारत की इकलौती ग्राम पंचायत पिछले 5 साल में 13 पुस्कार प्राप्त हुए हैं। गांव में 33 विदेशी मेहमान व विभिन्न गांव के कार्यक्रमों में 20 विशिष्ट मुख्य वक्ताओं ने समय-समय पर सम्बोधन किया। फुटबाल टीम व कबड्डी टीम को ग्राम पंचायत द्वारा स्पोर्ट्स कीट प्रदान की गई, गाँव की फुटबाल टीम वर्ष 2013 जिले में प्रथम रही थी। आज गांव में लड़का-लड़की फर्क 1000 पर 910 है। गांव में 95 प्रतिशत घर में शुलभ शौचालय व 15 सामूहिक शौचालय हैं। गांव में श्री ईश्वरदत्त कौशिक मास्टर जी का पैट्रोल पम्प भी है। गांव के पुराने पंचायती में अर्जुन नम्बरदार, रिसाल सिंह पंवार, लालचन्द साहू, वक्सीराम, हरनारायण, पं० सूरजा कौशिक शंकर जागलान, मामनसिंह, प्रभुराम, गुलाब सिंह आदि हुए तथा नये पंचायतियों में प्रो० दयासिंह, आजाद पंवार, डॉ० दलबीर सिंह, पालाराम बीबीपुर पूर्व चेयरमैन हरको बैंक, मा० चन्द्रभान, धर्मसिंह साहू, कामरेड बलवीर सिंह साहू वकील, ईश्वरदत्त कौशिक, सुनील पूर्व सरपंच, मा० चन्द्रभान, नानूराम आदि हैं।

चौ० बीरसिंह साहू मुख्याध्यापक

बीर सिंह साहू का जन्म 5 जुलाई, 1933 को गांव बीबीपुर में श्री माईराम के घर माता छन्नौ देवी की कोख से हुआ। उस समय इनका नामकरण बीर सिंह रखा गया। उन दिनों निर्धनता ने अपने पांव पसारे हुए थे। पशुओं के लिए चारा नहीं था और मानव को दो जून की रोटी भी नसीब नहीं होती थी। ऐसे में बच्चों को स्कूल भेजना तो दूर की बात थी। लेकिन माता-पिता दोनों ही अनपढ़ होने पर भी आपने बेटे को स्कूल भेजा। स्कूल में बच्चों की संख्या बहुत थोड़ी होती थी।

अंग्रेजों का जमाना था। किसी को शिक्षा के महत्त्व का पता नहीं था। माता-पिता का लाडला बेटा होने के कारण सभी प्रकार की सुविधाएं बेटे को दी गई। एक दिन दुर्भाग्यवश जब बेटा घर के आंगन में गेंद से खेल रहा था तो उसका पांव फिसल गया और वह गिर पड़ा। पड़ने के कारण उसके बाएं हाथ की कलाई टूट गई। जीन्द व रोहतक के हस्पतालों में दिखाया गया, परन्तु कोई इलाज नहीं हुआ। इस कारण बायां हाथ जाता रहा। इन्होंने हाथ की कमी कभी भी नहीं खली और अपनी पढ़ाई को जारी रखा। गांव के मिडल स्कूल से आठवीं कक्षा पास की, भारत आजाद हो चुका था। नौवीं कक्षा तक उर्दू और फारसी पढ़ी। नौवीं कक्षा में ही इन दोनों भाषाओं को छोड़कर हिन्दी और संस्कृत लेनी पड़ी। इस प्रकार पढ़ने में काफी कठिनाई हुई। दसवीं के पश्चात् 1952 में वैश्य कॉलेज, रोहतक में दाखिला लिया और वहीं से बी.ए., बी.टी. पास की। कॉलेज में पढ़ते समय किसी भी प्रकार की हीन भावना नहीं थी कि एक हाथ नहीं है। सभी प्रकार की कॉलेज की गतिविधियों में भाग लिया। कॉलेज यूनियन के कई चुनाव जीते और खेलों में भी भाग लिया। कॉलेज हॉस्टल में रहते हुए तीन वर्ष तक चीफ प्रोक्टर के रूप में कार्य किया। इनकी बचपन से ही पढ़ने की रूचि बन गई थी। वर्ष 1958 में एस.डी. हाई स्कूल, जीन्द स्कूल को चलाने में अपना पूर्ण योगदान दिया तथा इस संस्था में अध्यापक लग कर चार वर्ष तक सेवा की। जब यह संस्था अच्छे रूप में चलने लगी तो इससे विदाई ली और 1962 में सरकारी सेवा ग्रहण कर ली। इसी समय पत्नी और बच्चों की मौत ने शरीर को झकझोर दिया। घरवालों और रिश्तेदारों के दबाव में दूसरी शादी भकलाना गांव के सरपंच चौधरी चन्दगीराम की सुपुत्री कलावती से कर ली। इनकी कोख से दो पुत्र जितेन्द्र व पवन कुमार तथा दो पुत्री सुनीता व रेखा हुए। इन्होंने अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवाई और उनकी शादी अच्छे खानदानी व पढ़े-लिखे घरों में की। सरकारी सेवा में रहते हुए इन्होंने बतौर एस.एस. मास्टर, मैथ मास्टर, जे.बी.टी. इंचार्ज के रूप में कार्य किया। सरकारी सेवाओं के कार्यकाल के दौरान हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के मैथ पेपर सेटिंग व निरीक्षण का कार्य किया। बोर्ड के समय परीक्षाओं में सुपरीटेंडेंट के रूप में कार्य किया और कभी नकल नहीं होने दी। इसी आदर्श के कारण बहुत से लोगों ने इनका विरोध भी किया। ये हमेशा बच्चों द्वारा नकल किये जाने के विरुद्ध थे। एक बार इन्होंने अपने भांजे को ही नकल में पकड़ा और उस पर केस दर्ज करवाया। वहीं बच्चा बच्चा इनकी शिक्षा का अनुसरण करते हुए जगरूप पहलवान के रूप में आई.पी.एस. बना। उसको कुश्ती में अर्जुन अवार्ड भी प्राप्त हुआ है। इसकी लड़की नेहा राठी भी कुश्ती

में अर्जुन पुरस्कार विजेता बनी। इसी प्रकार इनके पढ़ाए हुए बहुत से बच्चे शिक्षा में काफी ऊंचे पदों तक पहुंचे और प्रदेश का नाम रोशन किया है। इनका 1976 में मुख्याध्यापक के रूप में पदोन्नत हुए। इनका प्रत्येक स्कूल में रिजेल्ट बहुत ही सराहनीय रहा है। वर्ष 1991 तक मुख्याध्यापक के रूप में सेवाएं दी और सेवानिवृत्ति के बाद भी शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े रहे। उसके बाद इनको लड़कों ने वर्ष 2005 में गांव में बाल विकास हाई स्कूल के नाम से स्कूल की स्थापना। इन्होंने अन्तिम समय तक अंग्रेजी एवं गणित की शिक्षा प्रदान की और अन्तिम क्षणों तक शिक्षा से जुड़े रहे। आजकल इनकी बेटी सुनीता श्योराण गांव में ओशीष इन्टरनेशनल स्कूल चला रहा है जिसमें इनका छोटा बेटा पवन साहू मदद करता है। इन्होंने जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा के लिए हर संभव मदद की। 30 अगस्त 2017 को अपने छोटे पुत्र पवन की गोद में सिर रखकर इस नाशवान चोले को छोड़कर जीवन की दूसरी मंजिल की तरफ एक नई तकनीकी खोज में चले गए। मैं प्रभु से इनकी आत्मा की शान्ति की प्रार्थना करता हूँ।

ये अक्सर इंकबाल की पंक्तियों को गुनगुनाया करते थे–

'मिटा दे अपनी हस्ती को गर मर्तबा चाहे।
कि दाना खाक में मिलकर गुले-गुलजार होता है।'

❑❑❑

4. गांव राजपुरा (भैण)

यह गाँव पुराने नौगामा के नौ गांवों में शामिल पुराना व ऐतिहासिक गांव खण्ड जीन्द, विधानसभा क्षेत्र जुलाना में जीन्द से 11 किलोमीटर दूर जीन्द-हाँसी मार्ग से आधा किलोमीटर लींक रोड पर पड़ता है। गाँव के नामकरण बारे प्राप्त जानकारी अनुसार सन् 1544 विक्रमी संवत् 1600 ई० में इनके चार पूर्वज लादा, घिल्ला, रारा, सादा उनकी लाडली बहन माणोदादा देवराज पाना नारनौंद से आकर दादा खेड़ा बनाकर बस गए। चारों भाइयों की बहन माणो बड़ी स्यानी थी तथा अपने भाइयों से बहुत प्यार करती थी। इस खेड़े (गाँव) को बहन वाला कहने लग गए। बाद में यह रामराय-भैण भी कहलाने लगा क्योंकि ये सभी भाई कुछ समय रामराय गाँव में रहे थे। इस कारण आज भी दूरदराज के पुराने लोग भैण को रामराय भैण के नाम से पुकारते हैं। गाँव का नाम भैण से राजपुरा रखने बारे एक विचित्र घटना घटी। जानकार लोगों के अनुसार राजा रघबीर सिंह ने शिकार खेलने के लिए अपने लाव-लश्कर (हाथी घोड़ों व कुत्तों) के साथ गाँव की सीमा में दाखिल होकर खड़ी फसल को उजाड़ना शुरू कर दिया। गाँव के सभी नर-नारियों ने इकट्ठा होकर अपना विरोध किया और कहा कि हमने बड़ी मेहनत से फसल उगाई है इन फसलों को नष्ट न करो। राजा रघबीर सिंह ने अपनी हठधर्मी (राजहठ) दिखाते हुए गाँवों के जनमानसों को ललकारा कि आगे से दूर हट जाओ वरना इसका अन्जाम बहुत बुरा होगा। सभी जन मानसों ने एक स्वर में कहा कि हम मर मिट जाएंगे परन्तु आपके लाव-लश्कर द्वारा अपनी फसलों को बर्बाद नहीं होने देंगे। जब यह आवाज राजा के कानों में पहुंची तो वह खुद हाथी से उतरकर लोगों के सामने आया और विरोध का कारण जानना चाहा। लोगों ने बताया कि हम अपने गाढ़े खून पसीने की कमाई को अपनी आँखों के सामने अपनी फसल बरबाद होती नहीं देख सकते, चाहे हमें गोलियों से भून दिया जाए। इस प्रकार लोगों के कड़वे तेवरों को भांपते हुए राजा ने लोगों से पूछा कि आप क्या चाहते हैं? लोगों ने कहा कि आप हमारी फसल बर्बाद न करें तथा राजा होते हुए प्रजा के साथ न्याय करो। इस पर राजा ने आश्वासन दिया कि उसका लाव-लश्कर आपकी सीमा से बाहर से गुजरेगा और साथ ही कहा कि मुझे अपने राज्य के इस गांव के लोगों पर गर्व है जहां इतने बहादुर और नीडर व स्वाभिमानी लोग बसते हैं। राजा ने उसी समय ऐलान किया कि आज से इस गांव का नाम राजस्व रिकार्ड में भैण से राजपुरा रख दिया जाए। इस प्रकार गांव का नाम भैण से राजपुरा हो गया। आज गाँवों में जाटों के बुजुर्गों के नाम से लादा, घिल्ला, रारा व साधान पाने हैं। बहन माणे की जमीन साधान पाने के खाते में है तथा इसी

पाने से तीन बुजुर्ग गुलकनी जाकर बस गए तथा वहां पर भी जाटों के तीन पाने हैं। जाट केवल लौहान गोत्र के हैं अन्य जातियों में सैनी 20, चमार 150, बाल्मीकि 100, महाजन 1 घर, कुछ घर झीमर, लुहार 2, खाती 20, नाइ 15, कुम्हार 20, धानक 80, पण्डित 50 घर भी आबाद हैं। सभी का भाईचारा बहुत ही बढिया है। श्री मांगेराम गुप्ता पूर्व मंत्री भी इसी गांव से हैं जो बाद में परिवार के साथ जीन्द शहर में बस गए।

गांव में 15 वार्ड एक सरपंच, 3519 मतदाता, 5064 जनसंख्या, 916 घर, 18000 बीघे उपजाऊ जमीन है, जिसमें मुख्य फसल गेहूं, जीरी, ईख, ज्वार, कपास आदि बहुत बढ़िया पैदा होती है। चौ० भोलाराम नम्बरदार गांव का पुराना सबसे बड़ा जमींदार था। चौ० भोलाराम राजा जीन्द के काफी करीब था। राजा ने चितंग नहर से भोला नम्बरदार के रकबे के लिए अलग से मोरी (मोघा) लगा रखा थी। जिसकी पहचान आज भी भोले वाली मोरी के नाम से की जाती है। आज चौ० टेकराम पूर्व सरपंच की कुल जमीन को जोड़ा जाए तो आज यह सबसे बड़ा जमींदार है। उसका गांव में सबसे बड़ा संयुक्त परिवार है। श्री दलीप सिंह (95 वर्ष) पुत्र श्री प्रहलाद सिंह सबसे बड़ा बुजुर्ग है। गांव में आठ नम्बरदार रणधीर सिंह, सूबे सिंह, दिलबाग सिंह, संदीप सिंह, सुलतान सिंह, बलदेव सिंह, रामस्वरूप झीमर, रामचन्द्र तथा दिलबाग सिंह चौकीदार हैं।

ग्राम पंचायत का ब्यौरा इस प्रकार है-

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	जाति
1.	श्री झूण्डाराम	श्री तुलसीराम	जाट
2.	श्री बारूराम	श्री खुशीराम	जाट
3.	श्री मामन राम (आजाद)	श्री हरनाथ	जाट
4.	श्री गोकल	श्री नन्हाराम	जाट
5.	श्री टेकराम	श्री तेलूराम	जाट
6.	श्री हरफूल सिंह	श्री अमरसिंह	जाट
7.	श्री हरफूल सिंह	श्री अमरसिंह	जाट
8.	श्री दिलबाग सिंह	श्री सरणीराम	जाट
9.	श्री खेतियां राम	श्री महासिंह	जाट
10.	श्री खेतियां राम	श्री महासिंह	जाट
11.	श्री रामधन	श्री अर्जुन	झीमर
12.	श्री सूरत सिंह	श्री बोलियां	धानक

13.	श्री सन्तलाल	श्री रलदूराम	धानक
14.	श्री सतबीर सिंह	श्री साहबराम	जाट
15.	श्रीमती केलो देवी	पत्नी श्री जगदीश	चमार
16.	श्री जयबीर लोहान	श्री बलदेव सिंह लोहान	जाट

गांव के सम्मानित राजपत्रित अधिकारी, समाजसेवी व्यक्ति एवं महिलाएँ

1. शहीद किसान अमर सिंह पुत्र चौ० मामचन्द हिन्दी आन्दोलन 1957
2. श्री रामरतन स्वतन्त्रता सेनानी (आई.एन.ए.)
3. श्री रामस्वरूप स्वतन्त्रता सेनानी (आई.एन.ए.)
4. श्री मामनराम आजाद स्वतन्त्रता सेनानी (आई.एन.ए.)
5. श्री गणेशीराम जमादार सदस्य प्रजामण्डल, जीन्द
6. श्री मांगेराम गुप्ता, पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार
7. प्रो० राजबीर लोहान, डायरेक्टर सी.ई.सी. (यू.जी.सी.), नई दिल्ली
8. श्री जगदीप लोहान, जिला एवं सत्र न्यायाधीश, स्पेशल जज सी.बी.आई. हरियाणा
9. श्री अनन्तराम गोयल, एच.सी.एस. (रि०)
10. स्व० श्री बलवीर सिंह लोहान मुख्याध्यापक (रि०)
11. चौ० टेकराम, पूर्व सरपंच समाजसेवी
12. चौ० बलवान सिंह लोहान, वकील पूर्व प्रधान जिला कांग्रेस कमेटी
13. चौ० इन्द्रसिंह लोहान, आबारी एवं कराधान अधिकारी (सेवानिवृत्त)
14. श्री अभिमन्यु लोहान, उपपुलिस अधीक्षक
15. स्व० मेज़र चन्द्रभान नाई
16. स्व० श्री भीमसिंह पुत्र श्री हरफूल सिंह मुख्याध्यापक (सेवानिवृत्त)
17. श्री बीरेन्द्र सिंह लोहान, जिला समाज कल्याण अधिकारी (रि०)
18. श्री बलवान सिंह लोहान, मुख्याध्यापक (रिटायर्ड)
19. डॉ० शरणजीत कौर, प्रिंसिपल, मूक-बधीर कल्याण संस्थान, गुरुग्राम
20. डॉ० रजनी लोहान, स्कूल प्राध्यापिका (अंग्रेजी)
21. श्री राजकुमार गुप्ता, मैनेजर को-आप्रेटिव बैंक
22. डॉ० गगन गोयल, एम.बी.बी.एस.
23. डॉ० सुनील लोहान, बी.डी.एस. पुत्र स्व० टेकराम लोहान
24. श्री सत्यवान लोहान, एक्स.ई.एन. बिजली विभाग
25. श्री बलवीर गोरिया पुत्र किताब सिंह डी.एस.पी.

26. श्री बलवीर सिंह जांगड़ा, हैड मास्टर (रिटायर्ड)
27. श्री दलबीर गोरिया पुत्र श्री लालचन्द, स्कूल लैक्चरार
28. डॉ० प्रवेश अग्रवाल, एम.एस. (ओर्थो) दिल्ली

हवासिंह पुत्र श्री हरिसिंह, हवासिंह पुत्र रणपत व महेन्द्र सिंह हरियाणा पुलिस निरीक्षक पुत्र श्री दलीपसिंह पहलवान हुए हैं।

पुरानी पंचायती : चौ० भोलाराम, चौ० बारूराम, चौ० चरणसिंह, चौ० हरफूल व चौ० धर्मसिंह, श्री मुंशीराम, बलदेव सिंह।

नये पंचायती : श्री जयसिंह पुत्र श्री मांगेराम, राजेन्द्र सिंह पुत्र धर्मसिंह, ओमप्रकाश पुत्र प्रभुराम, राममेहर शर्मा, रामदिया पुत्र श्री दलीप सिंह, श्री भला पुत्र उजाला, रामफल पुत्र श्री अमरसिंह, श्री रामस्वरूप पुत्र श्री गोपाला, श्री सतबीर पूर्व सरपंच, महेन्द्र पुत्र श्री चन्दू, ओमप्रकाश पुत्र गणेशी जमादार व प्रताप पुत्र कांशीराम आदि हुए।

गांव की सभी गलियाँ पक्की तथा चारों ओर पक्की फिरनी है। 90 प्रतिशत घरों में शुलभ शौचालय है, 10+2 तक स्कूल, कन्या स्कूल, विद्या विहार सी० सै० स्कूल, पी.आर.एम. हाई स्कूल, ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल, हर्ष इन्टरनेशनल स्कूल, दयानन्द पब्लिक स्कूल, मिनी बैंक, फसल खरीद केन्द्र, पशु हस्पताल, आंगनवाड़ी के कई केन्द्र, 7 चौपाल, 4 तालाब, दादा खेड़ा है। गांव से बाहर ऐतिहासिक गोविन्द कुण्ड है। गुलाब गिरी मन्दिर है। गोविन्द कुण्ड मन्दिर सेवा समिति (रजि० नं० 368) है। यह कुरुक्षेत्र की भूमि के पांच कुण्डों में शामिल है तथा यह देव भूमि के अन्तर्गत आता है। इस गांव में मृत्यु पश्चात् फूल (अस्थियां) नहीं उठाई जाती हैं। हर रविवार को इस स्थान पर मेला लगता है। लोगों में इसकी काफी मान्यता है। इस कुण्ड का पुनः निर्माण गांव के लोगों द्वारा दी गई आर्थिक सहायता से हुआ है। लाला रतनलाल पुत्र लाला हरीचन्द ने सबसे अधिक आर्थिक सहयोग (10 लाख रुपये) दिए हैं और अब भी सहयोग कर रहे हैं। ये सेवा समिति के सदस्य हैं और इसके निर्माण में दिन रात लगे रहते हैं। इस डेरे का एक और विशेष महत्त्व है। जब भी किसी के घर भैंस या गाय का प्रसव होता है तो पहली जून (सबसे पहले निकाला) पूरा दूध इस डेरे में चढ़ाया जाता है। इसमें एक बहुत सुन्दर मन्दिर बना हुआ है। गांव में आर्यसमाज का विशेष प्रभाव रहा है। गांव गुलकनी स्थित शहीदी स्मारक के बनाने में दोनों गाँव का पूरा सहयोग रहा है। वहां पर आर्यसमाज के अच्छे-अच्छे साधु रहे जिन्होंने इन दोनों गांवों के इलावा आसपास के गांवों में आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार किया है। इस गांव में डीटी 28 ट्रैक्टरों का रिकार्ड रहा है। शायद ही कोई जमींदार का घर हो जिसमें पहले

यह ट्रैक्टर न रहा हो। आज भी लोग खेती मन लगाकर करते हैं तथा अच्छे दूध वाले पशु भी पाले जाते हैं। गांव में फुटबाल खेल का विशेष चाव रहा है तथा इस गांव की फुटबाल की टीम जीन्द जिले में मानी हुई टीम है। गांव का भाईचारा बढ़िया है तभी जातियां मिल-जुलकर आपस में प्रेम से रहती हैं।

गोविन्द कुण्ड का पौराणिक महत्त्व

कुरुक्षेत्र भूमि के मुख्य चार द्वारों में से एक रामयक्ष के परिसर में स्थित तथा भगवान परशुराम जी द्वारा स्थापित (सूर्य कुण्ड, गोविन्द कुण्ड, स्ययन्त पंचम, सन्निहित सरोवर तथा कृतशौच तीर्थ वर्तमान में कल्या से एक) गोविन्द कुण्ड राजपुरा-भैण (जीन्द) पश्चिमी यमुना नहर के उत्तरी तट पर स्थित है। पुराणों तथा महाभारत के अनुसार धर्मराज युधिष्ठिर अपने सभी भाइयों के साथ यहां स्नानार्थ पधारे। सूर्य ग्रहण के पवित्र पर्व पर भगवान श्री कृष्ण यादवों सहित यहां स्नानार्थ आये, राधिका जी से भगवान श्री कृष्ण का पुनर्मिलन यहीं पर हुआ। कौरव और पाण्डवों के वीर बांकुरे भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य आदि ने भी इन्हीं सरोवरों में स्नान किया, तदुपरान्त धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र के धर्मयुद्ध में भाग लिया।

इस तीर्थ में स्नान करने से निर्धन धनवान बन जाता है तथा नि:संतान को संतान प्राप्त होती है। इस तीर्थ में स्नान करने पर मनुष्य निष्पाप होकर सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करता है।

शहीद अमर सिंह लोहान

ऐसे बिरले ही लोग होते हैं जो अपने परिवार से भी ज्यादा समाजसेवा को अपना जीवन का उद्देश्य बनाते हैं। उनमें से एक हैं शहीद अमर सिंह लोहान। आपका जन्म एक आर्यसमाजी परिवार में सम्पन्न किसान चौ० मामचन्द लोहान के घर माता गंगादेई की कोख से 9 मई 1922 को गांव राजपुरा (भैण) में हुआ। आपका बचपन गांव में बीता। आप बचपन से ही निडर व सत्यप्रिय थे। गांव में स्कूल न होने के कारण आप पढ़ाई नहीं कर सके, लेकिन आर्यसमाज से जुड़े प्रचारकों से मात्र बारह खड़ी का ज्ञान प्राप्त कर लिया। इनकी शादी बहुत ही छोटी आयु में चौ० ज्ञानीराम बुधवार गांव सुनारियां (रोहतक) की सुपुत्री श्रीमती फूलम देवी से हो गई। इनकी कोख से तीन पुत्र रामफल, राजबीर सिंह, वीरेन्द्र सिंह रिटायर्ड जिला समाज

कल्याण अधिकारी व एक पुत्री पैदा हुई। आपकी पत्नी का योगदान बेमिसाल रहा है। श्रीमती फूलमदेवी अनपढ़ थी पर हर काम में दक्ष थी। वह धर्म-कर्म में बेहद विश्वास रखती थी। इनके परिवार की देखभाल इनके भाई मुन्शीराम आर्य व धर्मसिंह ने की। इनके सभी बच्चों को शिक्षा दिलाकर उनके रिश्ते बढ़िया घरों में किये। एक दिन यह गांव के कुछ साथियों के साथ सैर-सपाटे के लिए दिल्ली चले गए। रात हो गई तो वहीं रूक गए। रात को डिप्टीगंज (पहाड़गंज) में आर्यसमाज का जलसा हो रहा था। वहां आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् और संन्यासी स्वामी दर्शनानन्द जी का हिन्दी लागू करने पर भाषण चल रहा था। इस भाषण का इनके ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा तथा गांव में आकर हिन्दी भाषा लागू करने का प्रचार शुरू कर दिया। अगस्त 1957 में पंजाब में हिन्दी सत्याग्रह अपने पूरे यौवन पर था। इस दौरान इनकी गिरफ्तारी हुई। हिन्दी भाषा लागू करने का आन्दोलन में इनके बड़े भाई मुन्शीराम आर्य भी हिन्दी आन्दोलन में जेल काट चुके थे। वे जेल में दी गई यातनाओं के बारे में बताते थे। अमर सिंह बार-बार कहता था कि आप हमें ऐसी जगह क्यों नहीं जाने देते। अगली बार मैं जरूर जाऊंगा। इनमें बड़ा जुनून था। यह अपने काफी साथियों के साथ हिन्दी सत्याग्रह के दौरान अम्बाला की सैन्ट्रल जेल में बन्द रहे। इनका आन्दोलन सफल रहा तथा सरकार को झुकना पड़ा। पुराने पंजाब में पंजाबी के साथ हिन्दी भाषा को भी लागू किया गया। सरकार से समझौता हो जाने पर दिनांक 31 दिसम्बर, 1957 को इनकी रिहाई हो गई और यह अपने साथियों के साथ सायं की रेल द्वारा अपने घरों को आ रहे थे। मोड़ी रेलवे (नजदीक अम्बाला) स्टेशन पर पहले से उसी लाईन पर खड़ी मालगाड़ी से इनकी गाड़ी टकरा गई और एक बड़ा हादसा हुआ जिसमें काफी लोगों की मौत हो गई। काफी संख्या में लोग घायल हो गए। गुलकनी गांव के स्वर्ण सिंह की भी मौके पर ही मौत हो गई। गांव का एक अन्य साथी सरूप सिंह की एक टांग कट गई। उस समय श्री लाल बहादुर शास्त्री जी रेल मंत्री थे, उन्होंने सभी मरने वालों को शहीद का दर्जा दिलवाया। उस समय पंजाब के मुख्यमन्त्री सरदार प्रताप सिंह कैरो थे। राजपुरा व गुनकली गांव के लोगों ने इन दोनों किसान शहीदों के नाम से गांव गुनकली में करीबन तीन एकड़ जमीन में शहीद बलिदान स्मारक वर्ष 1958-59 में बनाया था। इस स्मारक की देखरेख आजकल स्वामी कर्मपाल जी कर रहे हैं। इन शहीदों की शहादत को हर वर्ष 31 दिसम्बर व 1 जनवरी को मनाते हैं। कुछ समय पहले समाचार पत्रों के माध्यम से समाचार छपा है कि हरियाणा सरकार हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन में शहीद हुए लोगों को स्वतन्त्रता सेनानी का दर्जा देगी तथा उनके परिवारों को आर्थिक सहायता भी प्रदान करेगी। उस समय उनकी शहादत की खबर पूरे नौगामा खाप के गांवों में जंगल की

आग की तरह फैल गई। दूसरे दिन वैदिक रीति-रिवाज से इनका अन्त्येष्टि संस्कार हुआ। मैं अन्त में भगवान से इनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ।

वंशावली : लक्ष्य पुत्र विकास पुत्र रामफल, शुभ, निशान पुत्र आनन्द, सुखवन्त पुत्र विजेन्द्र सिंह पुत्र राजबीर सिंह, विशाल पुत्र वीरेन्द्र सिंह सुपुत्रान चौ० अमरसिंह शहीद, सुपुत्र मामचन्द सुपुत्र श्री खूबराम सुपुत्र गुलाब सिंह लोहान।

(इनके पुत्र वीरेन्द्र सिंह लोहान के सौजन्य से)

हैडमास्टर बलवीर सिंह लौहान

(2 फरवरी, 1944 से 26 मार्च 2014)

गाँव राजपुरा जिला जीन्द के किसान परिवार में जन्मे चौधरी बलवीर सिंह लोहान एक करिश्माई व्यक्तित्व के धनी थे, जिन्होंने अपने समकालीन और युवाओं को हमेशा आदर्श जीवन जीने के लिए प्रेरित किया।

चौधरी लालचन्द एवं श्रीमती निम्मो देवी से 2 फरवरी, 1944 को जन्मे बलबीर सिंह स्कूल के दिनों से ही तीक्ष्ण, मेधावी एवं समर्पित छात्र रहे हैं। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पास के गाँव मिर्चपुर से हुई और इनके अद्‌भुत शिक्षण कौशल के कारण ये हमेशा अध्यापकों के प्रिय शिष्य रहे। इनका विवाह श्रीमती लक्ष्मी देवी सुपुत्री चौधरी माईराम से हुआ, जो कि गाँव सोरखी (हिसार) का प्रतिष्ठित परिवार है। चौ० माईराम का पुत्र शमशेर सिंह गाँव का सरपंच रहा है वह बेरवाल खाप का प्रधान है।

इन्होंने अपनी हाई स्कूल की पढ़ाई जाट स्कूल जीन्द से पूरी की। नेहरू के वैज्ञानिक और आधुनिक दृष्टिकोण से प्रभावित होकर इन्होंने अपनी बी.एस.सी की पढ़ाई प्रतिष्ठित सरकारी कॉलेज जीन्द से की और बी.एड. की डिग्री चौधरी छाजूराम कॉलेज हिसार से की। इनके पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में इनकी व्यक्तिगत और कैरियर की गति ने एक स्पष्ट आकार लेना शुरू किया। इन्होंने बतौर विज्ञान अध्यापक गाँव कुंगड़ खेड़ी (हिसार) के सरकारी स्कूल से अपना कैरियर शुरू किया, जो कि महज नौकरी न होकर उनके लिए एक मिशन बना।

जाट शिक्षण संस्था प्रबन्धन ने शिक्षा के क्षेत्र में इनका समर्पण व विशेषता देखते हुए विज्ञान के साथ गणित पढ़ाने का भी आग्रह किया। वे अपनी मातृ संस्था में सदैव

शिक्षक के रूप में सेवा करने के इच्छुक रहे, लेकिन बाद में इन्हें स्कूल संचालक (हैड मास्टर) की जिम्मेदारी भी खुशी से निभाई। बीजगणित पर इनका स्वामित्व रहा। बाद में वे जाट स्कूल एवं कॉलेज प्रबंधन शिक्षा समिति के वरिष्ठ उपप्रधान भी रहे। वे प्रगतिशील विचारों के जुनूनी किसान थे, जो एक ही समय में खेती और शिक्षा से जुड़े रहे, क्योंकि उनकी जड़े ग्रामीण और कृषक समाज से थी। कई प्रतियोगिताओं में इनके पाले हुए पशुओं ने इनाम जीते, यह इस बात का सबूत है कि इनकी खेती के साथ-साथ पशुपालन में भी गहरी रूचि रही।

इनका जीवन सरल व सामाजिक रहा, वे अकसर बच्चों से बातें करने का मौका तलाशते और उन्हें आदर्श जीवन जीने के लिए प्रेरित करते। यह उनकी दृष्टि और प्रगतिशील विचारों का ही परिणाम है कि उनके उत्तराधिकारी समाज में खुद के लिए एक महत्त्वपूर्ण भूमिका व रूतबा बना सके। इनका बड़ा बेटा प्रोफेसर राजबीर सिंह, निदेशक कंसोर्टियम फॉर एजुकेशनल कम्युनिकेशन (Director, Consortium for Educational Communication) है, जो कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति (Vice Chancellor) के समकक्ष है, और निश्चित रूप से कुलपति की तुलना में ज्यादा चुनौतीपूर्ण है। इसके अलावा प्रोफेसर राजबीर सिंह, निदेशक, संचार और मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र हैं। इनकी शैक्षणिक व प्रशासनिक कार्यशैली व अनुभव अपने आप में मिसाल है तथा शिक्षा के क्षेत्र में नए-नए प्रयोग इनकी जीवन शैली का हिस्सा है।

चौधरी बलबीर सिंह का छोटा बेटा जगदीप सिंह, मेहनती, निडर, समर्पण और उचित न्याय द्वारा सार्वभौमिक कल्याण की प्रेरणा के कारण पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय चण्डीगढ़ में वकालत के दौरान ही सीधे तौर पर अतिरिक्त जिला सत्र न्यायाधीश नियुक्त किया गया। फिलहाल वह सी.बी.आई के विशेष न्यायाधीश हैं। इससे पहले अतिरिक्त जिला सत्र न्यायाधीश सोनीपत रहे हैं। इनकी न्याय की भावना, निष्ठा और ईमानदारी को अच्छी तरह से जाना जाता है और इनकी कानूनी बिरादरी और सर्कल में काफी सराहना होती है। आज जगदीप सिंह लोहान के साहसिक फैसलों के कारण देश व विदेशों में भी जाना जाता है, आपने दुघ्रटना के शिकार घायलों की मदद करके यह साबित कर दिया कि आप न्यायाधीश से पहले एक उच्चकोटि के इंसान हैं।

यह लोहान परिवार की प्रगतिशील व आधुनिक सोच ही रही है कि उन्होंने महिलाओं को भी बराबर अधिकार व मौके दिए हैं। चौ० बलवीर सिंह बेटी कमलेश

अपने इलाके में काफी पहले एम.ए. करने वाली लड़की रही, जिसका विवाह श्री हरीश दहिया, उप-आबकारी एवं कराधान आयुक्त, गुरुग्राम से हुआ है।

श्री इन्द्रसिंह, हैडमास्टर बलबीर सिंह के छोटे भाई हैं और बहुत दयालु इंसान हैं जो कि आबकारी एवं कराधान अधिकारी सेवानिवृत्त हैं। उनका बेटा अभिमन्यु हरियाणा पुलिस विभाग में बतौर डी.एस.पी. नियुक्त है।

और परिवार में कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने वाली बहुएँ डॉ० शरणजीत एवं डॉ० रजनी दोनों ही पी-एच.डी. हैं और सामाजिक कार्य मानवीय क्षेत्र व शिक्षा के क्षेत्र में सेवा कर रही हैं।

हैडमास्टर बलबीर सिंह का स्वर्गवास दिनांक 26 मार्च 2014 को हुआ। आज शारीरिक रूप से वो हमारे बीच नही हैं परन्तु उनके विचार और दृष्टिकोण आज भी हमारी जिन्दगियों को जागृत कर रहे हैं। उनका हमेशा यह विश्वास रहा है कि अच्छी शिक्षा ग्रामीण लोगों के जीवन को बदलने और सशक्त बनाने की क्षमता रखती है। उन्होंने हमेशा दूसरों को मेहनत के बलबूते पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। चौधरी बलबीर सिंह के आदरणीय परिवार की संघर्ष और उत्थान की अपनी विशेष कहानी है जो आसपास के लोगों को प्रेरणा व दिशा प्रदान कर रही है। हैडमास्टर बलबीर सिंह की याद में लोहान परिवार गांव में अक्सर मेधावी छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत व प्रोत्साहित करता है एवं पेड़-पौधे लगाकर पर्यावरण को बढ़ावा देता है। मैं प्रभु से उनकी आत्मा की शान्ति की प्रार्थना करता हूँ।

नरेश जागलान मनोवैज्ञानिक के सौजन्य से

❑❑❑

5. गांव घिमाना

यह गाँव भी पुराने नौ गाँवों में शामिल है। पुराना व शहीदों का गांव माना जाता है। यह खण्ड जीन्द, विधानसभा जुलाना, मुख्यालय से पाँच कि.मी. जीन्द-भिवानी रोड पर आबाद है। इसके नामकरण के बारे जानकार लोगों के मत अनुसार विक्रमी संवत् 1600 ई० 1540 के आसपास एक पूर्वज खोखर सामड़ी (रोहतक) से तथा एक पूर्वज कालीरामण सिसाय से आकर बसा। इन दोनों पूर्वजों ने गांवों को बसाया तथा दादा खेड़ा का निर्माण करवाया। बाद में एक पूर्वज महला-कोहला (गोहाना) तथा कैन्दल सामड़ी (गोहाना) से आकर बस गए। इन इलाके में घणे जंगल होते थे, खेती के लिए पानी की कमी के कारण इस गांव के लोग दूध वाले पशु अधिक पालते थे। यह गाँव शहर के नजदीक होने के कारण लोग शहर में घी बेचते थे। उस समय दूध नहीं बेचा जाता था। एक कहावत थी 'दूध बेच दिया इसा पूत बेच दिया।' इस गांव का घी काफी मशहूर माना जाता था। यहाँ के घी को माना हुआ (उत्तम श्रेणी का) मानते थे। इस कारण गाँव का नाम घी वाले गाँव से घीमाना हुआ फिर घिमाना पड़ गया। इस बारे में कोई लिखित प्रमाण नहीं है। महला गोत्र के बुजुर्ग शंकर व मानसिंह नम्बरदार से प्राप्त जानकारी के अनुसार पहले यहां याकूब मोहम्मद बसता था, उसके बेटे का नाम गीमा मोहम्मद था उसके नाम से बिगड़कर गीमा से घिमाना पड़ गया। आज गाँव में जाटों के खोखर, कालीरामण, महला व कैन्दल चार पाने गौत्रों पर आधारित हैं। गाँव में 315 घर जाट, 300 घर सैनी, 105 घर चमार, 35 घर कुम्हार, 70 घर बाल्मीकि, 50 नायक, 10 घर खाती, 10 घर नाई, 35 घर पण्डित, 5 घर पांचाल, 2 घर डूम, 1 घर गडरिया लोहार कुल 938 घर हैं। जनसंख्या 5027 मतपत्र 3040 वार्ड 13 जिनमें 2 वार्ड कर्मगढ़ भी पंचायत में शामिल हैं। गांव की 12 हजार बीघे जोत भूमि उपजाऊ है जिसमें नल-कूपों व नहर के पानी से गेहूं, जीरी, कपास, बाजरा आदि फसल बोई जाती है तथा सब्जी आदि भी बोई जाती है। गाँव का चौ० भरतसिंह सैनी वकील सबसे बड़ा जमींदार है। श्री विजय सिंह खोखर 102 वर्ष का सबसे बड़ा बुजुर्ग तथा चौ० भीमसिंह कालीरामण का संयुक्त परिवार है। चौ० रामस्वरूप खोखर, चौ० धूपसिंह कालीरामण, चौ० रामफल महला, चौ० हवासिंह कैन्दल, चौ० अमीलाल खाती एवं एक बाल्मीकि नम्बरदार व श्री आजाद सिंह चौकीदार है।

गांव की पंचायत का ब्यौरा

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	जाति
1.	चौ० परसराम खोखर	चौ० जवाहरा	जाट

2.	चौ० हरफूल सैनी	चौ० अमरसिंह	सैनी
3.	श्री चन्दूराम खोखर	चौ० रूलियाराम	जाट
4.	श्री सूरजमल खोखर	चौ० हरद्वारी लाल	जाट
5.	श्री दरियासिंह खोखर	चौ० मांगेराम	जाट
6.	श्री बलजीत सैनी	चौ० जोगीराम	सैनी
7.	श्री महासिंह सैनी	चौ० इन्दराज	सैनी
8.	श्री रामस्वरूप खोखर	चौ० झाबर सिंह	जाट
9.	श्री सूरजमल खोखर	चौ० हरद्वारी लाल	जाट
10.	श्री राजमल खोखर	चौ० हरद्वारी लाल	जाट
11.	मा० ताराचन्द कालीरामण	चौ० दरियासिंह	जाट
12.	श्री चतरसिंह	श्री नन्हाराम	बाल्मीकि
13.	श्री सूबेसिंह	श्री तेलूराम	धानक
14.	श्रीमती बबली	पत्नी श्री शमशेर सिंह	सैनी
15.	श्रीमती ममता	पत्नी श्री सुनीला खोखर	जाट

गाँव कर्मगढ़ के साथ संयुक्त पंचायत बनती है दो पंच गाँव कर्मगढ़ से बनते हैं।

गाँव के शहीदों की सूची

1. शहीद लास नॉयक आशीष महला कारगिल (राज राईफल), 1999
   इसके नाम से गाँव के स्कूल में शहीद स्मारक बना रखा है।
2. शहीद सिपाही दिलबाग सिंह खोखर, बी.एस.एफ.
3. शहीद गोपीराम पांचाल मारकाट (1947) बक्सी हवेली, जीन्द
4. शहीद मांगेराम खोखर मारकाट (1947) बक्सी हवेली, जीन्द
5. शहीद दिवान सिंह कालीरामण चीन युद्ध 1962
6. शहीद बिहारी लाल कैन्दल चीन युद्ध 1962
7. शहीद भरथू राम बाल्मीकि भारत पाक युद्ध 1971

गाँव में प्राईमरी स्कूल, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, एस.डी. सी० सै० स्कूल, आर्य विद्या मन्दिर सी. सै. स्कूल, सरस्वती हाई स्कूल, 5 मन्दिर, गांव का मुख्य द्वार 5 आंगनबाड़ी केन्द्र, पशु अस्पताल, स्वास्थ्य केन्द्र, मीनी बैंक, दादा खेड़ा, 4 चौपाल, 90 प्रतिशत घरों में शुलभ शौचालय, गलियाँ व गांव की फिरनी पक्की, हर घर में पानी की टूटियां, अन्य सभी सुविधाएँ, हर घर में यातायात के छोटे व बड़े साधन, गांव का प्राचीन 22 एकड़ में फैला तालाब गाँव आबाद होने से पहले का है, आज इसे

तीन भाग कर दिये गये हैं। जीन्द रोड पर रोज केस्टल बैंकट हॉल भी है। गांव के पुराने पंचायतियों में चौ० जोगीराम खोखर, अमर सिंह, चौ० जोगीराम सैनी, चौ० गुलाबा कालीरामण, चौ० विजय सिंह खोखर, मानसिंह नम्बरदार रहे हैं। आज के पंचायतियों में चौ० रामस्वरूप पूर्व सरपंच, चौ० धर्मपाल खोखर, चौ० मामराज कालीरामण, हवासिंह, रामफल महला, चौ० कर्मबीर सैनी, चौ० सुरेश खोखर, चौ० सूबेसिंह खोखर, श्री रायसिंह चमार आदि हैं जो खाप पंचायत व गांव के सामूहिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं।

गाँव के सरकारी सेवा में अधिकारी व गणमान्य व्यक्ति :-

1. डॉ० कुलदीप सिंह राणा, एम.बी.बी.एस.
2. प्रोफेसर श्रीमती सविता राणा पत्नी डॉ० कुलदीप सिंह राणा, एम.बी.बी.एस.
3. डॉ० रमेन्द्र सिंह कालीरामण, एम.बी.बी.एस., एम.डी. (रेडियोडायग्नोसिस) जीवनदीप अल्ट्रासाऊंड एवं डायग्नोस्टिक सैंटर, जीन्द
4. डॉ० शोभना सिंह कालीरामण, एम.बी.बी.एस., एम.डी., बच्चा रोग विशेषज्ञ
5. डॉ० रमेश पांचाल, एम.डी.एस., दन्त रोग विशेषज्ञ, नगारिक अस्पताल, जीन्द सरकार एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं द्वारा समाजसेवा के लिए कई बार सम्मानित
6. श्री शक्ति सिंह खोखर, डी.डी.ए. (रिटायर्ड)
7. श्री रघवीर सिंह, ए.डी.ओ.
8. प्रो० बिमला कालीरामण, एच.ए.वी. हिसार, पत्नी श्री रघबीर सिंह ए.डी.ओ.
9. स्व० श्री ताराचन्द कालीरामण मुख्याध्यापक सेवानिवृत्त।
10. श्री भरतसिंह सैनी वकील बड़ा जमींदार
11. श्री महेन्द्र सिंह धिमाना, प्रधान किसान यूनियन जीन्द
12. श्री कर्मबीर सैनी, वकील नेता बहुजन समाज पार्टी
13. श्री नरेश कालीरामण, बायो गैस सिस्टम जागरूक किसान, समाज सुधारक युवा

इस गाँव के लोग मेहनती हैं। खेती के साथ-साथ दुधारू पशु पालना, सब्जी की खेती करना तथा अन्य व्यवसायों में लगे हैं। गांव का भाईचारा बढ़िया है। लड़कियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। गाँव में युवा क्लब भी है। मैं धिमाना गाँव को एक अच्छा व प्रगतिशील गाँव मानता हूँ। गांव में दादा खेड़ा युवा मण्डल हैं जिसके प्रधान श्री राजन सैनी हैं।

6. गाँव जाजवान

यह नौगामा के पहले 9 गाँवों में शामिल था। यह जीन्द खण्ड में मुख्यालय से पश्चिम दिशा में 11 कि.मी. की दूरी पर आबाद है। इसके पड़ोसी ढांडा खेड़ी, संगतपुरा, कोथ, नाडा, ईटल खुर्द व मिर्जपुर गाँव हैं। इस गाँव के नामकरण के बारे प्राप्त जानकारी के अनुसार गाँव श्योन्सर, नीमवाला कैथल से एक पूर्वज जोजू नाम ने यहां विक्रमी संवत् 1772 ई० सन् 1715 ई में मोढी गाड़ी थी। जोजू के नाम से गांव का नाम जाजवान पड़ गया। गाँव के बुजुर्ग स्व० रिटायर्ड चन्द्रभान मोर जिलेदार के अनुसार एक समय गांव में बाहर से घूमता फिरता एक मिरासी (डूम) आ गया। वह किसी मोर के घर रूक गया। उसको खाने व सोने की जगह के साथ कुछ पैसे भी दे दिए। इस पर मिरासी जाते समय यह कहता चला गया। ''ना दावा किसी और का जाजवान खेड़ा मोर का''। गांव में सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, कन्या हाई स्कूल, तीन चौपाल, एक बड़ा देवीलाल तालाब तथा तीन तालाब भागला, कैरांवाली, भीरवा वाला के नाम से खेतों में हैं। वाटर सप्लाई, घर-घर में पानी की टूंटिया, सभी गलियां पक्की हैं। गाँव में मुख्य गौत्र मोर है बाद में बड़ोदा से चहल आकर बस गए एक पाना चहल गोत्र का तथा कुछ घर गोयत गोत्र के जाट भाइयों के भी हैं। गाँव की जनसंख्या 3818, मतपत्र 2652 तथा 786 घर हैं। गाँव की जोत भूमि दस हजार बीघा के करीब है। जमीन मोटी है तथा नहरी पानी की काफी कमी है। वैसे तो नलकूप भी लगे हुए हैं परन्तु हर खेत के नलकूप का पानी ठीक नहीं है।

गाँव का पुराना कुआँ, पुरानी चौपाड़ व तालाब जिस समय गाँव बसा उसी समय के हैं। गांव की चौपाड़ के सामने बहुत बड़ा नेता जी सुभाष चन्द्र बोस चौक व चबूतरा है।

1952 से आज तक की पंचायत के सरपंच की सूची

क्रमांक	सरपंच का नाम	पिता का नाम	जाति	कार्यकाल
1.	श्री रामकिशन	श्री उदय सिंह	जाट	
	(संयुक्त पंचायत ईटल खुर्द के साथ, सर्वसम्मति से चुने गए)			
2.	श्री मंगल सिंह	श्री चन्दूराम	जाट	
3.	श्री रामचन्द्र	श्री रूपचन्द	जाट	
4.	श्री गोलूराम	श्री सिंहराम	जाट	
5.	श्री रामकुमार	श्री सुधाराम	जाट	1978-80
6.	श्री जिलेसिंह	श्री मांगेराम	जाट	1980-83

7.	श्री रघबीर सिंह	श्री अभेराम	जाट	1983-88
8.	श्री रामकुमार	श्री सुधाराम	जाट	1988-91
9.	श्री रामकुमार	श्री सुधाराम	जाट	1992-94
10.	श्री सतपाल	श्री जगननाथ	जाट	1995-2000
11.	श्रीमती केलो देवी	पत्नी श्री पालाराम	जाट	2000-2005
12.	श्री चन्द्र सिंह	श्री पूर्णसिंह	जाट	2005-2010
13.	श्री रघबीर सिंह	श्री खुजान सिंह	जाट	2010-2015
14.	श्रीमती सविता मोर पत्नी	श्री अजीत सिंह मोर	जाट	2015 से

खण्ड विकास अधिकारी से प्राप्त रिपोर्ट अनुसार इस गांव में आज तक केवल जाट जाति का ही सरपंच चुना गया है। इस गांव की बी.सी. व एस.सी. आबादी कम है और यह जाट बाहुल्य गांव हैं। गांव में आज पांच ठोले ब्रिजा पाना, मंगडू पाना, बावला पाना, भानी पाना व चहल पाना है। श्री रामचन्द्र, देवेन्द्र सुरेश कुमार, छोटू खाती, रामकिशन चमार पाँच नम्बरदार रतन सिंह चौकीदार हैं। गाँव का सबसे बड़ा जमींदार व संयुक्त परिवार श्री रघबीर सिंह पुत्र श्री खुजान सिंह का है। आज गाँव में इन्द्र सिंह पुत्र रणजीत सिंह मोर सबसे बड़ा वृद्ध नागरिक है। गीलाराम पुत्र भोपाराम, फतेहसिंह पुत्र सुखलाल चहल, चन्द्रसिंह पुत्र श्री बिगूराम नाई, करतार सिंह मोर पहलवान है तथा हुए हैं।

वीर शहीद

शहीद सीएफएन धूप सिंह, ईएमई ऑपरेशन गुरेज सैक्टर 2003

गाँव के सामाजिक, सम्मानित, सरकारी क्षेत्र में योगदान देने वाले सज्जन एवं अधिकारीगण

1. स्व० चौ० बरखा राम, पंचायती नौगामा खाप
2. स्व० चौ० रामानन्द, पंचायती नौगामा खाप
3. चौ० रघुबीर सिंह बड़ा जमींदार
4. श्री जोगेन्द्र मोर, सहायक आयुक्त कस्टम विभाग, विशाखापट्टनम
5. डॉ० अमन मोर, वी.एस. (पशु चिकित्सक) कनाड़ा
6. श्री सतबीर सिंह मोर, असिस्टेंट प्रोफेसर गुरु जम्बेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार
7. स्व० जोगीराम चहल, मुख्याध्यापक, मास्टर धारा सिंह चहल, अध्यापक (रि०)
8. मा० धर्मपाल, राष्ट्रपति अवार्डी शिक्षा
9. मा० महेन्द्र सिंह, राष्ट्रपति अवार्डी शिक्षा
10. मा० प्रह्लाद सिंह शर्मा, राष्ट्रपति अवार्डी शिक्षा, जिले में छात्रवृत्ति प्राप्ति में प्रथम

स्थान पर गांव।

11. ब्रिगेडियर राजकपूर मोर, पुत्र श्री जगदीश मोर
12. श्री अजायब सिंह चहल, पूर्व प्रधान उपायुक्त कार्यालय यूनियन जीन्द, खाप नेता
13. श्री सतबीर चहल व्यवसायी छत्तीसगढ़, प्रो० कैण्डी ज्वैलरी जीन्द।
14. श्री सुरेन्द्र पाल सिंह चहल (NRI), प्रधान-जाट सभा, ऐडीलेड (आस्ट्रेलिया)
15. श्री कर्मबीर सिंह मोर, डी.ओ. (एल.आई.सी.)
16. कै० मनफूल सिंह मोर
17. सुनीता चहल मैनेजर एच.डब्ल्यू.सी.

गाँव में पीने के पानी की काफी कमी है। सरकार ने पानी के लिए इसे गाँव रामराय से पाईप लाइन द्वारा जोड़ दिया है।

पुरानी पंचायती : मंगल सिंह, बिरखा राम, रामानन्द, जगननाथ, गजेसिंह, गोलूराम पूर्व सरपंच, रघबीर सिंह, रामकिशन पूर्व सरपंच7

नये पंचायती : सतबीर सिंह, अजायब सिंह, सतपाल सिंह, चन्द्र सिंह, धारा सिंह, फूल कुमार, किदारा, विजय सिंह, मा० बदन सिंह, ओमप्रकाश पटवारी, मा० प्रहलाद शर्मा। जीन्द जिले में होनहार विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करने वाले पहला गाँव।

चौ० बिरखा राम मोर

आपका जन्म गाँव जाजवान के सुप्रसिद्ध किसान चौ० माईदत्ता मोर के घर माता पतासो देवी की कोख से सन् 1915 में हुआ। आपके पिता जी एक सामाजिक व पंचायती व्यक्ति थे। गांव में स्कूल न होने के कारण आप अनपढ़ रह गए। आप का बचपन बड़े लाड़-प्यार से गांव की गलियों में बीता। आपकी माता जी आपको छोटी आयु में छोड़कर चल बसी। आपका विवाह छोटी आयु में गाँव नारनौंद (हिसार) के चौ० देवतराम लोहान की पुत्री सुन्दर देवी के साथ हो गया। आपकी धर्मपत्नी धार्मिक विचारों की महिला थी तथा घर पर हर आने वालों का आदर करती थी। इनकी कोख से तीन पुत्र मा० बलवान सिंह, कलीराम, खेड़ी बाड़ी निरीक्षक, दयासिंह व तीन पुत्रियां पैदा हुई। इन्होंने अपने सभी बच्चों को स्कूल भेजा तथा उनकी शादियां अच्छे व खानदानी घरों में की हैं। बिरखा राम मेहनती किसान थे। गाँव की जमीन बिरानी थी,

बड़ा परिवार था। फसल वर्षा पर निर्भर रहती थी। आपने बड़ी मेहनत से परिवार का पालन-पोषण किया। आप मन लगाकर खेती व पशुपालन का कार्य करते थे। आपने गांव में को-आप्रेटिव बैंक की स्थापना करवाई तथा इसके सदस्य भी रहे। गांव का स्कूल बनवाने में मुख्य भूमिका निभाई। आपने जन मानस से जुड़ी समस्याओं और गाँव में पानी की समस्याओं को हल करने हेतु गांव के लोगों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया। आप स्पष्ट वक्ता भी थे। जो बात कहनी होती थी सबके सामने बेहिचक कह देते थे। आप सभी नशों से दूर रहते थे। आपका मानना था कि नशा करने वाला व्यक्ति न तो समाज में और ना ही परिवार में पूर्ण प्रभावी हो पाता है। आपने नौगामा खाप की पंचायतों में मौके पर कई बार अध्यक्ष चुने गए। पंचायत में आपकी भागीदारी जरूर रहती थी। आपने किसान आन्दोलन, हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी भागीदारी रहे। आपके अन्दर कौम का प्यार कूट-कूट कर भरा हुआ था। आपकी गिनती गाँव में एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में होती थी। समय-समय पर आपने सभी जाट संस्थाओं को अपनी इच्छा से दान भी काफी दिया है। कुछ समय बीमार रहने के बाद 6 अगस्त 2000 को आप इस भरे पूरे परिवार को छोड़कर प्रभु चरणों में चले गए। मैं उस प्रभु से इनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता हूँ।

वंशावली : विकास पुत्र श्रीपाल, आर्यन, जसवीन पुत्र श्री कर्मपाल सुपुत्र मा० बलवान सिंह, सोनू मोहन पुत्र श्री दिलबाग सिंह, जयपाल, विशाल पुत्र जयनारायण, हरिपाल पुत्र कलीराम, दीपक पुत्र दया सिंह सुपुत्र बिरखा राम सुपुत्र श्री भाईदत्ता सुपुत्र रामदिया सुपुत्र चौ० खूबीराम मोर।

(इनके पुत्र मा० बलवान सिंह के सौजन्य से)

❑❑❑

7. गाँव पोकरी खेड़ी

यह गाँव नौगामा खाप के पुराने नौ गांवों में से एक है। जीन्द हाँसी रोड पर 11 किलोमीटर रामराय गांव से दो किलोमीटर लिंक रोड दक्षिण दिशा में जीन्द ब्लॉक विधानसभा जुलाना में पड़ता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार यहां पर महाभारत काल के समय का पुष्कर तीर्थ है। इसी के नाम से इस गांव का नामकरण पोखर पड़ गया। राजा रघुवीर सिंह जीन्द ने सन् 1875 में पोखर से बदल कर इस गांव का नाम पोकरी खेड़ी कर दिया। यहाँ पर उत्तर भारत का पहला परशुराम मन्दिर है। नामकरण बारे एक अन्य घटना भी है। इस गाँव में राजस्थान के जोधपुर में स्थित प्रसिद्ध तीर्थ पुष्कर के दर्शन किए जा सकते हैं। किवदंती है कि इस तीर्थ में स्नान करने से पुष्कर जैसा ही पुण्य प्राप्त होता है। महर्षि जमदग्नि पोकरी खेड़ी गांव में तप किया करते थे। उनकी पत्नी रेणुका पुष्पकर तीर्थ (जोधपुर) से उनके लिए पवित्र जल लाती थी। एक दिन जब वह जल का घड़ा लेकर आ रही थी तो गांव के बाहर राखी गढ़ी का राजा सहस्त्रबाहु वहाँ आ पहुँचा। रेणुका घबरा गई और उसके हाथ से पुष्कर के जल से भरा घड़ा गिरकर टूट गया। ऋषि को उसने यह बात बताई तो ऋषि ने कहा कि यदि तुम पवित्र हो तो जहाँ घड़ा गिरा था वह वहीं तैरता मिलेगा। ऋषि व रेणुका वहाँ पहुंचे तो सचमुच घड़ा तैर रहा था। उसमें पवित्र जल भरा था और इसे पुष्कर तीर्थ का नाम दे दिया गया। गांव लुदास (हिसार) से विक्रमी संवत् 1620 ई० सन् 1564 में इनके दो पूर्वज दखलु व देव नाम के पूर्वज ढुल गोत्र आकर बस गए। इनके नाम से गांव में जाटों के दखलु व देव पाने हैं। यहां पर एक पाना जागलान गोत्र का भी है। दादा बुसर सिंह विक्रमी संवत् 1620 ई० सन् 1564 में ईटल से मुदगिल गोत्र में एक ब्राह्मण के साथ आकर बस गये। यह कुरुक्षेत्र भूमि का दक्षिण द्वारा का अन्तिम गाँव है। ईटल गांव में दादा बुसर सिंह के नाम से आज भी एक तालाब है। गाँव में 6 हजार बीघे उपजाऊ भूमि, 2400 मतपत्र, 606 घर, 3556 जनसंख्या, 11 वार्ड, एक सरपंच एक सुरेश चौकीदार है। गाँव में दो पाने ढुल जाट, एक पाना जागलान जाट, 5 घर गिल (खरैंटी) से, 3 घर कालीरामण (सिसाय), 4 घर चहल (बड़ौदा), 4 घर लोहान (भैणी अमीरपुर), 20 घर लाम्बे (अलखपुरा) से अन्य जातियों में धोबी 25 पंजाबी 1, अहीर 4, गुसाई 1, खाती 115, डाकौत 6, ब्राह्मण 10, चमार, नाई, हेड़ी, कुम्हार, डूम, जोगी, झीमर, बनिया, तेली, बाल्मीकि, गडरिये, लुहार तथा लुहार मुसलमान आदि जातियों के लोग बड़े प्यार से मिल-जुलकर रहते हैं। यहाँ पर मृत्यु होने के बाद फूल (अस्थियाँ) नहीं उठाई जाती हैं। यहाँ पर हर मास की चाँदनी दुआस कार्तिक पूर्णिमा का स्नान होता है और मेला लगता है। यहाँ का पुष्कर तीर्थ कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के अधीन है। गाँव में चौ०

पृथ्वीसिंह चौ० चन्द्र भान, श्री सद्दीक अली व दीपक हरिजन चार नम्बरदार हैं। कलिया ढुल 90 वर्ष आज गांव का सबसे बुजुर्ग व्यक्ति है। श्री चन्द्रभान नम्बरदार गांव का पहला विज्ञान स्नातक (बी.एस-सी) है। वे पूर्व चेयरमैन ब्लाक समिति व पूर्व चेयरमैन मार्किट कमेटी, जीन्द रहा है। इन्होंने विधानसभा का चुनाव भी लड़ा है। मैं इसको नौगामा खाप का बहुत ही बढ़िया वक्ता व पंचायती मानता हूँ।

ग्राम पंचायत का ब्यौरा

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	जाति
1.	श्री मुन्शीराम (एक पंच खेड़ी सरसा से बनता है।)	श्री खुखलाल	जाट+
2.	श्री मुन्शीराम	श्री खुखलाल	जाट
3.	श्री श्योकरण	श्री मंगतराम	जाट
4.	श्री भरथूराम	श्री इन्द्राज	जाट
5.	श्री नन्हू राम	श्री रामजी लाल	पण्डित
6.	श्री चन्द्रभान	श्री रिसाल सिंह	जाट
7.	श्रीमती किताबो देवी पत्नी	श्री चन्द्रभान नम्बरदार	जाट
8.	श्री भरतसिंह	श्री लालचन्द	जाट
9.	श्रीमती धन्नो देवी	पत्नी श्री भरतसिंह	जाट
10.	श्री सूरत सिंह	श्री दुलीचन्द	जाट
11.	श्री तेलूराम	श्री जमनाराम	जाट
12.	श्री दलीप सिंह	श्री रणजीत सिंह	जाट
13.	श्री राममेहर ढुल	श्री भलेराम	जाट

गाँव में सिंचाई नलकूपों व नहर के पानी से होती है। मुख्य फसल गेहूं, जीरी, कपास, सरसों आदि है। गाँव में मिडल तक स्कूल, आँगनवाड़ी केन्द्र, दादा खेड़ा, सभी गलियाँ पक्की, हर घर में पानी का कनैक्शन, 70 प्रतिशत घरों में शुलभ शौचालय, तालाब, चौपाड़, युवा क्लब है। गाँव के पुराने पंचायतियों में चौ० श्योकरण नम्बरदार, चौ० रिसाल सिंह नम्बरदार, सुखदेव, नन्हूराम, चौ० भरथूराम, माईराम, चौ० मुन्शीराम, आज के पंचायतियों में श्री पृथ्वी सिंह, श्री चन्द्रभान, श्री मेहर सिंह, रणधीर सिंह व श्री दलीप सिंह प्रमुख हैं। स्व० श्री रामफल व श्री जयप्रकाश शर्मा, श्री सुमित ढुल वकील, श्री सुरेन्द्र ढुल XEN बिजली बोर्ड, श्री विनोद जोशी पत्रकार जागरण हैं। यह एक आदर्श व प्रगतिशील गाँव है। अधिक गोत्र व जातियों होने पर भी गाँव में आपसी भाईचारा बढ़िया है।

चौ० माईराम जागलान

आपका जन्म सन् 1916 ई० में जीन्द जिला के गांव पोकरी खेड़ी में चौ० परसराम के घर हुआ। आपके दादा श्योनाथ नौगामा के प्रसिद्ध किसान थे। आप मात्र एक माह के थे जब आपके पिता का साया आपके सिर से उठ गया। आपका बचपन आपके मामा के घर बीता। आप अनपढ़ होते हुए भी कढ़े हुए थे। आपका विवाह मात्र 12 वर्ष की आयु में गांव जालब खेड़ी (हिसार) के चौ० रंगीराम की बेटी शान्ति देवी के साथ हुआ। आपके छः पुत्र जसमत, मेहरसिंह, जगननाथ, रामफल, अमरनाथ, राममेहर तथा पांच पुत्री पैदा हुई। आपने सभी बच्चों को स्कूल भेजा तथा सभी के रिश्ते अच्छे घरों में किए। आपने 12 वर्ष की आयु में हल चलाना शुरू किया तथा उन्नत खेती के साथ अच्छे पशु पाले। आपने मेहनत के बल पर अकेले काम करने वाले होने कारण इतने बड़े परिवार का पालन-पोषण किया। आपके लायक पुत्रों ने आपकी इच्छानुसार आपका व आपकी पत्नी शान्ति देवी का जीवन जग दिनांक 18 मार्च 2012 को किया जिसमें जागलान गोत्र के सभी गांवों के भाइयों तथा नौगामा खाप के भी काफी मात्रा में लोगों को भोजन करवाया। आपने नोल्था की गोशाला में 21000 रुपये दान दिये। आपका बेटा अमरनाथ सेना में सूबेदार के पद पर है। यह कबड्डी का बहुत बढ़िया खिलाड़ी है। आपके पोते कर्मबीर, धर्मबीर, संदीप व मनोज सेना में देश की सेवा कर रहे हैं। अमरनाथ ने अपने मेलजोल से सेना में गांव के काफी लड़के भर्ती करवा रखे हैं। इनका पोता सुनील कुमार मैकेनिकल इलैक्ट्रोनिक में डिग्री लेकर एक प्राईवेट कम्पनी में कार्यरत है। यह परिवार पुष्कर महाराज में पूर्ण आस्था रखता है। गांव में ये इतने मिलनसार हैं कि दूसरे गोत्र के लोग भी इनकी शालीनता के कारण इनको हर काम में पूरा सहयोग देते हैं। इस परिवार की पीढ़ियों से देशभक्ति में आस्था रही है। इस परिवार का ईमानदारी का रिकार्ड है। यह परिवार पूरे क्षेत्र में एक सम्मानित एवं प्रतिष्ठित परिवार है। कौम का जज्बा कूट-कूटकर भरा हुआ है। कुछ समय बीमार रहने के बाद दिनांक 15 जनवरी, 2015 को लगभग 10 दशक पूरे करने के बाद तथा छोटे बड़ों के 60 जनों के भरे-पूरे परिवार को छोड़कर चल बसे। मैं मेरे ताऊ की आत्मा की शान्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करता हूँ।

(इनके पुत्र मेहरसिंह के सौजन्य से)

चौ० सुखदेव ढुल

आपका जन्म 1917 में गाँव पोकरी खेड़ी के चौ० छेलूराम के घर हुआ। आपके पिता जी एक मेहनती किसान थे। आपका बचपन गाँव की कच्ची गलियों में गुजरा। गाँव में स्कूल के अभाव के कारण आपने कक्षा तीन तक की पढ़ाई रामराय के प्राईवेट स्कूल में पास की। उसके बाद एक नजदीकी रिश्तेदार के गांव सिसाय (हाँसी) से अच्छे अंकों से उर्दू के साथ वर्ष 1931 में पांचवीं कक्षा पास की। भारत में अंग्रेजों का राज था। आप नौकरी करना चाहते थे परन्तु घर में काम करने वालों की कमी के कारण आप खेती-बाड़ी में जुट गए। आप गाँव के पहले साक्षर व्यक्ति थे। गाँव में आने वाली चिट्ठियों की पढ़ाई व लिखाई आप ही करते थे। आपका विवाह छोटी सी आयु में गाँव कंवारिया के चौ० शादीराम दूहन की लड़की शान्ति देवी के साथ हुआ। आपकी पत्नी शान्ति देवी ने खेती-बाड़ी करने में आपका खूब साथ दिया। वे मन्डासा मारकर हलकर चलाना, रात को अकेली नहर का पानी लगाना आदि काम मर्दों से भी अधिक किया करती थी। आज 85 वर्ष की आयु में पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं तथा घर के काम में हाथ बँटाती हैं। इनकी कोख से एक पुत्र रणधीर सिंह व चार पुत्रियाँ पैदा हुई। इन्होंने अपने सभी बच्चों को अच्छे संस्कार दिए तथा उनके रिश्ते बढ़िया एवं खानदारी घरों में किए। दरवलू पाने की दादा-लाई नम्बरदारी छेलूराम परिवार के पास थी। आपने 1942 में अंग्रेज हुकूमत के तहसीलदार के साथ अनबन होने के बाद नम्बरदारी से त्यागपत्र दे दिया था। अब यह नम्बरदारी पृथ्वी सिंह के परिवार के पास चली गई। इनका भाई कालूराम बड़ा क्रान्तिकारी व देशभक्त था, जो हिन्दू मुसलमानों की लड़ाई (मारकाट) वर्ष 1947 में बक्शी की हवेली जीन्द में शहीद हो गया था। इनका बेटा रणधीर सिंह ढुल किसान यूनियन का प्रधान व सामाजिक कार्यकर्ता है, जो नौगामा खाप की पंचायत व किसान यूनियन की सभाओं में भाग लेता है। इसने किसान के हित में लड़ी लड़ाई में 68 दिन की कठोर जेल काटी थी। सरकार ने उस समय की किसानों की मांगें माननी पड़ी थी। इस परिवार में कौमी जज्बा कूट-कूट कर भरा हुआ है। मैं श्रीमती शान्ति देवी की लम्बी आयु की कामना करता हूँ। चौ० सुखदेव कुछ समय बीमार रहने के बाद दिनांक एक दिसम्बर 2006 को भरे पूरे परिवार को छोड़कर चले गए। मैं अन्त में भगवान से इनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ।

(इनके सुपुत्र प्रधान रणधीर सिंह ढुल के सौजन्य से)

8. गांव ईटल (जीन्द)

यह जागलान गोत्र के गाँवों में सबसे प्राचीन व एतिहासिक है। यह जीन्द खण्ड जिला जीन्द की नोगाम खाप में जीन्द-बरवाला मार्ग पर जीन्द से 9 कि०मी० की दूरी पर अटल तीर्थ पर बसा है। जानकार सूत्रों एवं भाट पोथियों अनुसार दादा सहजाराम ने खुण्डाला खेड़ा (थेह) नजदीक गांव जुगलान (हिसार) से विक्रमी सम्वत् 1232 ई० (सन् 1175) में बसाया था। इसका नामकरण इतिहास को खोजने पर मिलता है कि यहां एक प्राचीन समय का अटलतीर्थ है। जिसके प्रमाण आज भी इस गांव में मौजूद हैं। पांडवों के यहां आने के बात भी इतिहास के पन्नों में दर्ज है। अटलतीर्थ काफी बड़ा है तथा आज भी निर्मल जल से लबालब भरा रहता है। जो जब गांव बसा उसी समय का है तथा इसे बाबा समाध वाला तालाब भी कहा जाता है।

इस गाँव का नाम प्राचीन अटलतीर्थ के नाम से ईटल पड़ गया। इस गाँव की प्राचीनता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि अकेले इस गाँव से सात गाँव आबाद हुए जिनमें बीबीपुर, जलालपुरकलां, पौकरीखेड़ी, किठाना, संडिल बालू, डूमरखांखूर्द (जीन्द)। इस गाँव में जागलान गौत्र के दो पाने (ढोले) बड़ा पाना व भगतराम पाना है। एक पाना अहलावत, जिनका वरिष्ठ पुरुष सहजूराम गाँव खरकड़ा से आकर बस गया, नहरा गोत्र के 20 घर (इनका वरिष्ठ पुरुष सरदारा निंदाना (रोहतक) से आकर बसा), रेढू गोत्र के 17 घर हैं (इनका वरिष्ठ बडेरू को कण्डेला से दादा तोता लाया था।) यह जागलानों की ध्यानि की संतान हैं। 12 घर मान गोत्र के झमौला से इनका बडेरू रामानन्द आया था। धानक (खटक) 151 घर जागलानों के साथ बसे, कुम्हार मोहन पाना, इनको राजा जीन्द ने मोहन कुम्हार की अमहेठी में जहां राजा की कोठी है। 1700 बीघे जमीन के बदले मोहन कुम्हार को ईटल में दे दी, इसने अपने रिश्तेदारोंको बसा लिया जिनके 41 घर किरोड़ीवाली, 2 घर घड़ौला, 46 घर पंवार, 4 घर आसीवाल, 15 घर नाडिया, 6 घर लीलगर, 15 घर गौसाई, 3 घर खाती (जो पहले जागलान जाट थे) 5 घर नाई, 40 पण्डित मुदगिल, 2 घर वाल्मीकि, 26 घर चमार चौहान जो जागलानों के साथ आए, तथा 25 घर मेहरा जो भकलाना से आकर बसे हैं। जागलान के भाटपोथी के अनुसार इसी वंश के भूसर सिंह (जो नि:संतान था) के नाम से गांव मे भूसरवाला तालाब है। अटल तालाब के किनारे बसनेवाले गाँव का रकबा साढे सात हजार बीघा है। गाँव में 586 कुढ़ियां, आबादी करीबन 3260, मतदाता 2166 के लगभग है। गाँव के विकास के लिए यहां के लोगों ने वर्ष 1988 में सर्वसम्मति से पचांयत बनाई थी। गाँव की आ्थक व्यवस्थता कृषि पर टिकी हुई है। परन्तु कृषि यहां

के किसानों के लिए घाटे का सौदा सिद्ध हो रहा है। जिसका प्रमुख कारण कृषि योग्य पानी की कमी (हालांकि गांव में करीबन 200 टयूबल लगे) है। कुछ टयूबलों का पानी खराब भी है । पहले यहां के लोग खेती कुओं से रहटों में ऊंट जोड़कर करते थे। हर जमींदार अपने कुंए पर थोड़ा बहुत तम्बाकू जरूरी रखता था इस कारण ईटल को तम्बाकूवाला ईटल के नाम की पहचान रही है। नहर का पानी यहां के किसानों को राजवाड़ा न० 6 ए से नाममात्र का ही प्राप्त होता है क्योंकि नहर महीने में एक बार एक सप्ताह ही चलती है। आजकल गेहूं, कपास, बाजरा तथा जहां अच्छा पानी है वहां पर धान की फसल भी पैदा होती है। यह गांव जीन्द शहर से थोड़ा दूर होने के कारण गांव में प्राईमरी स्कूल भी देर से खुला। आज गांव में 10+2 का स्कूल है। इसी कारण सरकारी नौकरी में कम लड़के है। गांव का स्व० हरचन्द्र उर्फ कालिया अनपढ़ होते हुए भी इन्जीनियर था तथा खुद बन्दूक बना देता था। यह इतना बड़ा निशानेबाज था कि भागते हिरण को अपनी गोली का निशाना बना देता था। इसी गांव का प्यारा पुत्र श्री मामनराम देसी पशु वैद्य हुआ है। यह पशु को देखकर बीमारी बता देता था। गांव में खेलों का विशेष चाव रहा है। सबसे पहले सयुंक्त पंजाब में 26 जनवरी 1958 को सर्कल कब्बड़ी पंचायत खेलकूद प्रतियोगिता तहसील नरवाना जिला संगरूर (पंजाब) में हुई। इस टीम में ईटल-जलालपुर कलां की संयुक्त टीम खेली थी। जिसमें ईटल से रायसिंह, सीताराम, लालचंद आदि खिलाड़ी खेले थे। श्री रायसिंह को बेस्ट केचर घोषित किया गया। उस टीम ने प्रथम स्थान प्राप्तकिया था। किवदन्ती के अनुसार गाँव के उत्तर में अत्री कुण्ड, अनुसूया कुण्ड दत्तात्रेय कुण्ड आज भी तालाब में मौजूद है। आसपास के लोग विशेष अवसरों पर इन कुण्डों में स्नान करके अपने पापों को धोते है। यहां अनुसूया ने ब्रह्मा, विष्णु तथा महादेव को बालक बनाकर दूध पिलाया था। इन कुण्डों मे स्नान करने से सतित्वपूर्वक पुत्र की प्राप्ति भी होती है। खुदाई के दौरान तालाब में मिली दीवार में एक से डेढ़ फुट तक की लम्बाई वाली ईंट मिली है। इन ईंटों पर तीन-तीन रेखाओं के निशान हैं जिन्हें लोक तिहरे कहा जाता है जो तीनों लोगों के प्रतीक माने जाते हैं। ग्रामीणों अनुसार इस दीवार की ईंट घर ले जाने पर एक व्यक्ति अंधा हो गया था। बाद में वह ईंट वापिस डालकर गया। यहाँ पर दैवीय शक्ति इसकी रक्षा करती है। इतिहासकारों का दावा है कि ईंटल गांव ऋग्वेद कालीन धरोहर है। सरकार इसे पुरातत्त्व विभाग को सौंपना चाहिए, महर्षि अत्रीय के बेटे दत्तात्रेय की जन्म व कर्मस्थली रहा है। प्रशासन को लुप्त इतिास को खोजने का प्रयास करना चाहिए। यह ईटल गाँव भी कुरुक्षेत्र के युद्ध स्थल की 48 कौस की परिधि में आता है। यहाँ अन्तिम संस्कार के पश्चात् फूल (अस्थियां) उठाने की आवश्यकता नहीं है।

ग्राम पंचायत ईंट कलां खण्ड जीन्द आज तक बने सरपंचों की सूची

वर्ष 1952 में पहली संयुक्त पंचायत ईक्कस के साथ बनी थी। उस समय श्री जयलाल ईक्कस सरपंच, मायाचन्द न्याय पंच, रामस्वरूप नेहरा पंच आदि थे।

क्रमांक	सरपंच का नाम	पिता का नाम	जाति	कार्यकाल
1.	पं० सूरजभान	पं० भगवान दत्त	पण्डित	1961–1971
2.	श्री सूबेसिंह	श्री रिसाल सिंह	पण्डित	1971–1988
3.	श्री लखमीचन्द	श्री श्रीराम	कुम्हार	1989–1991
4.	श्री रमेश खटक	श्री किशन लाल	धानक	1991–1994
5.	श्री धारासिंह	श्री हरिसिंह	धानक	1995–2000
6.	श्रीमती सेवापति	पत्नी श्री सतवीर सिंह	जाट	2000–2000
7.	श्रीमती ईशवन्ती	पत्नी श्री रणवीर सिंह	जाट	2000–2001
8.	श्रीमती मुन्नी देवी	पत्नी श्री रामसिंह	जाट	2001–2005
9.	श्री रघबीर सिंह	श्री चतरसिंह	जाट	2005–2010
10.	श्री महाबीर सिंह	श्री दीपचन्द	जाट	2010–2014
11.	श्री कृष्ण कुमार	श्री बनवारी लाल	पण्डित	2015–2016
12.	श्रीमती कृष्णा देवी	पत्नी श्री जयवीर सिंह	जाट	2016 से अब तक

गाँव में चार नम्बरदारों में श्रीमती कविता पत्नी श्री संदीप सिंह जागलान है, पोहलूराम कुम्हार, श्री भोपा कुम्हार, श्री रामनिवास चौहान तथा एक चौकीदार श्री रणधीर सिंह बाल्मीकि है। गलियों की सफाई के लिए मनरेगा स्कीम के अनुसार दो सफाई कर्मचारी भी काम करते हैं।

गांव के गणमान्य व सम्मानित अधिकारी व पुरुष

1. चौ० स्व० मानसिंह जागलान पूर्व प्रधान जाट स्कूल, सदस्य प्रजामण्डल जीन्द (1937–38)
2. पं० सूरजभान मुदगिल पूर्व सरपंच व हिन्दी भाषा के विद्वान्
3. श्री जयङ्गसह करोडीवाल (आई.पी.एस.) पुलिस अधीक्षक (रि०) पहला नौगामा
4. श्री राजकुमार अहलावत, लेखा अधिकारी (रि०)
   आई.ए. व ए.एस. (भारतीय लेखा परीक्षक सेवाएं)
5. कर्नल सुरेन्द्र सिंह जागलान
6. श्री नरेश कुमार जागलान, असिस्टेंट प्रोफेसर कम्प्यूटर
7. श्रीमती मनीषा जागलान, असिस्टेंट प्रोफेसर वाणिज्य

8. लैफ्टीनेंट विकास जागलान
9. श्री दिनेश खटक डिप्टी कमाण्डेंट (सीआरपीएफ)
10. श्री स्व० मायाचन्द करोड़ीवाल रिटायर तहसीलदार
11. पं० सत्यवान मुदगिल एस.डी.ओ. (नहर) सेवानिवृत्त
12. श्री मनोज नेहरा, SDO (बिजली), पुत्र श्री हवासिंह नेहरा, एस.आई. (रि०)
13. श्री दिलबाग सिंह अहलावत, रिपोर्टर टीवी चैनल
14. श्री रामप्रताप खटक रिटायर बैंक मैनेजर/वकील
15. श्री पवन कुमार सिंह नाडिया वकील देहली
16. श्रीमती सुमन सहारण नाडिया वकील
17. श्री राजकुमार नाडिया वकील
18. श्री प्रमोद जागलान, एम.एस-सी, एम.फिल
19. श्री अनिल जागलान, प्रसिद्ध व्यवसायी गुजरात, पूर्व नगर पार्षद, जिला पार्षद एवं कांग्रेस नेता
20. श्री दयानन्द जागलान, मुख्याध्यापक

नये पंचायती : हरदेवा, रामफल, बलवान सिंह अहलावत, हवा सिंह नेहरा, मनफूल सिंह अहलावत, आशा खटक, रामफल चौहान, रामनिवास करोड़ीवाल, दिलबाग सिंह, बलवान सिंह, सूरजभान पण्डित, बसाऊ राम, मा० दयानन्द, रमेश खटक आदि।

पुराने पंचायती : चौ० मानसिंह, रिसाल सिंह, लखमीचन्द, सूरजभान मुदगिल, बदलूराम खटक, फत्तू राम नेहरा, मंगल अहलावत, निहालू, प्रभुराम आदि हुए हैं।

आज गाँव में 10+2, प्राईमरी स्कूल, चार आंगनबाड़ी केन्द्र, चार चौपड़, एक कबीर भवन, एक समाध, मन्दिर, तीन तालाब, पशु हस्पताल, दूरसंचार केन्द्र, डाकघर, दो टावर, सरकार वाटर वर्कस, हर घर में पानी का कनैक्शन, सभी गलियां पक्की, 80 प्रतिशत घरों में शौचालय, 40 एकड़ पंचायती भूमि है। श्री बनवारी पुत्र चंदगी के पास अच्छी नस्ल की घोड़ी थी जो आसपास के गांवों के लोग घुड़चढ़ी के लिए ले जाते थे। इस गाँव के लोग भोलेभाले है। गाँव का भाईचारा अच्छा है। गाँव में कई जाति व कई गोत्र के भाई बसते हैं फिर भी लोग मिलजुल कर रहते हैं।

9. गाँव जलालपुर कलाँ (जीन्द)

मेरे (लेखक के) गांव जलालपुर कलां को ईटलवाली छान भी कहते है क्योंकि यह गांव ईटल में से बसा है। इसको स्टेशन वाली छान भी कहते है। भाटो-के अनुसार यह गांव विक्रमी स्वन्त् 1896 बेसाख बदी दूज वार रविवार, तीथि 1840 में बसाया गया था। यह गांव जीन्द जिला के खण्ड जीन्द में पड़ता है तथा जीन्द जंक्शन से मात्र 2 किलोमीटर की दूरी पर है। इसके उत्तर में जुलानी, पश्चिम में ईटल कलां, दक्षिण में ईक्कस पूर्व में जलालपुर खूर्द गांव है। यह गांव नौगामा खाप में पड़ता है, जिसका मुख्यालय रामराय है। इस नौगामा खाप में 21 गांव है जिनका आपस में भाई-चारा है, पहले आपस में न्यौदा न्यौधार भी हुआ करती थी। इन गांवों में आपस में रिश्तेनाते नहीं होती है। जब भी इन गांवों में किसी का झगड़ा या मनमूटाव हो जाता है, तो रामराय गांव चिट्ठी भेजकर सभी गांवों को इकट्ठा करके पंचायत द्वारा उसका फैसला करते है। खाप द्वारा किया फैसला सभी को मानना पड़ता है। नौगामा खाप का आज स्थायी प्रधान नहीं है। हर पंचायत नौगामा इकट्ठा होने के मौके पर ही प्रधान की नियुक्ति कर दी जाती है। भाट-ग्रन्थ के अनुसार ईटल गांव से चार बुजुर्ग चौ० सूरत सिंह, पचान पाना, चौ० नानू राम, गढ़ीपाना, चौ० मादाराम, बिछानपाना व चौ० हरसुख, मुकटारापाना ने आकर पुरानी चौपाड़ के पास मोढ़ी गाड़ी व एक दादा खेड़ा बनाया जो आज भी उस समय के जाण्डी के पेड़ के नीचे है। चारों बुजुर्गों के नाम से चार जाट पाने हैं एक पाना भ्याणो का है परन्तु ये अपने नाम के पीछे जागलान लिखते हैं। गांव में 27 घर श्योराण जाटो के भी है तथा एक घर सिवाच व एक घर बिसला गौत्र ध्याणी की औलाद का भी बसता है। पहले एक घर बनीये का भी था जो गांव छोड़ कर पहले जीन्द जंक्शन पर बसा बाद में अहमदनगर (महाराष्ट्र) में आबाद होकर व्यापार कर रहा है। दानवीर सेठ रामेश्वर अग्रवाल गांव का पहला ग्रेजुएट लड़का हुआ है। एक पाना जागलान खाती भी है, लेकिन इनकी पीढ़ियां भी जाटो से मिलती है तथा 21वीं पीढ़ी में यह भी जाट थे बाद में काम करने के आधार पर खाती बन गये। सभी के पास खेती करने की जमीन है। एक मुस्लमान लोहार दारा को जीन्द से लाकर बसाया था, ये सभी उसी के खानदान से है, तथा दो घर मुस्लमान कुम्हार जुम्मू व सबरात भी बसाये थे जो 1947 में पाकिस्तान चले गए। चमार व धानक भी गांव के साथ ही बसे है। मोहनलाल भाट 1947 के बाद नारनौद से आकर बसा था। एक घर पण्डित नेतूराम का है, जिनका गौत्र मुदगिल है। नेतूराम के पुत्र मातूराम के तीन पुत्र रत्तीराम, देवीदयाल व चरन्जी हुए। औलाद केवल रत्तीराम के ही है। ये भाट बताते हैं कि जागलान व मुदगिल पंडितों का

जीजमान पुरोहित का रिश्ता है। जहां जागलान बसते है उनके पास ब्राह्मण मुदगिल गौत्र का ही बसता मिलेगा। जाट, खाती, ब्राह्मण, चमार व धानक जो गौत्र जलालपुर कलां में है वही गौत्र इन जातियों के ईटल में भी है। वैसे ईटल काफी पुराना गांव है। इस गांव में से काफी लोग अन्य गांव में जाकर बस गये तथा पूरे-2 गांव बन गये। अब ईटल इतना बड़ा गांव नहीं है। नौगांव खाप में-रामराय का (चौतरा है), खेड़ा राम राये, बागनवाला, ईगराह, पोकरी खेड़ी, सिरसा खेड़ी, बीबीपुर, बहबलपुर, रामगढ़, कर्मगढ़, धिमाणा, शादीपुरा ढाणी, जलालपुर कलां (छान) जलालपुर खूर्द ईक्कस, राजपुरा (भैण), गुनकली, जाजवान ईटल कलां व ईटलखूर्द (सीसर) आदि गांव आते हैं। यह क्षेत्र द्वापर युग कालिन कुरुक्षेत्र के महाभारत युद्ध स्थल की 48 कौस की परिधि में आता है, जहां भगवान श्री कृष्ण ने वरदान दिया था कि इस क्षेत्र में प्रासान्त हुए जनमानसों के अन्तिम संस्कार के पश्चात् फूल (अस्थियां) उठाने की आवश्यकता नहीं है। यहां फूल नहीं उठाए जाते है।

मेरा गांव जीन्द रियासत में पड़ता था तथा रियासत अंग्रेजों के अधिन थी। इसलिए यह इलाका तो गुलामों का गुलाम था। राजा द्वारा किये जाने वाले जुल्मों को भी जनता को सहन करना पड़ता था। चाहे दबाव देकर माल उगाहना हो, या अन्य बेगार लेनी हो, राजा समय समय पर गांवों में कैम्प (डेरा) डालता था तथा भोले भाले लोगों पर नजायज दबाव बनाता था। जीन्द रियासत के सभी राजा दोषी को कठोर दण्ड देने वाले माने जाते थे। अगर जीन्द रियासत में कोई अपराध कर देता था, तो राजा उसे पकड़वाकर जेल में डाल देता था तथा छह महीने से पहले उसकी सुनवाई नहीं होती थी। भारत वर्ष 15 अगस्त 1947 को आजाद हो गया था। परन्तु जीन्द रियासत हैदराबाद के नवाब की तरह अपनी रियासत को भारत में विलय करने के हक में नहीं थी। जीन्द रियासत को 9 मई, 1948 को आजादी मिली थी। जीन्द रियासत को 30 लाख रुपये माल व अन्य करों से वार्षिक आमदनी होती थी।

महाराजा जीन्द ने ही आजादी से पहले गांवों के नामों में सुधार किया। छान को जलालपुर कलां, सिसर को ईटल खूर्द, ईटल कलां, जलालपुर खूर्द, डेडपुरा को संगतपुरा, भैण को राजपूरा आदि नाम दिये थे।

इस गांव में अब जाट, खाती, चमार, धानक, लौहार, नाई, भाट, पंडित, डूम, कुम्हार आदि जाति के 656 घर आबाद है तथा कुछ परिवार रेलवे रोड, जीन्द जंक्शन व गांव के बीच में आबाद है तथा करीबन 15-20 मकान शहर में गांवों वालो के है।

गांव की आबाद देह (जिसमें गांव बसा है) करीबन 36 एकड़ जमीन है तथा कुल जोत भूमि (खेती होने वाली) 7.50 हजार बीघे है। गांव में किलेबंदी वर्ष 1959-

60 में हुई। इससे पहले जमीन आठ या दस जगह छोटे-छोटे टुकड़ो में होती थी। जमीन की कीमत निर्धारित करके मारु, नहरी, ऊचि-निचि किमत चार आने, छः आने, आठ आने, एक रुपया आदि जमीन को देखकर, जिस जमींदार ने मारू या ऊचि-निचि जमीन ले ली उसे पहले से अधिक जमीन मिली जिस जमींदार ने महंगी कीमत जमीन पर टक बनवाया उसे पहले से कम जमीन मिली तथा तकरीबन सभी को दो या तीन जगह जमीन किलो में बांट दी तथा सभी जमीन खातेदारों को पानी की नाली, रास्ते बड़े गमे, छोटी गमी लगाई है, सारी जमीन जो नहरीखालो, रास्तो की पूरे गांव की सीर की जमीन में से काटी गई है सभी रास्ते, बड़े गमे, छोटी गमी, सभी की जमीन सीर की है, इनमें आने जाने को कोई भी रोक नहीं सकता है। यदि कोई छोटी गामी वाला जिसके ही खेत के लिए लगाई गई है, कहता है कि यह गमी केवल मेरी है गलत है क्योंकि उसी गमी से आगे अपनी जमीन में से कोई भी आगे रास्ता उस गमी से जोड़ सकता है उसे कोई भी रोक नहीं सकता है।

गांव में हर प्रकार की जमीन थी। किलेबंदी के बाद लोगों ने डाबड़े, पुराने गमे, ऊचि भूमि को ठीक किया तथा कड़ी मेहनत करके जमीन को समतल किया। विक्रमी सम्वत् 1956 से 1995 तक भयंकर आकाल पड़े। लोगों को अनाज की कमी पशुओं को चारे की दिक्कत कई वर्षों तक वर्षा का न होना नहर पानी की कमी रही है। लोग बड़े मेहनती थे अपने पशुओं के लिए पेड़ो की टहनीया हाथ के गड़ासे काटकर खीलाते थे उस समय चक्कर वाले लोहे के गंड़ासे नहीं थे। लोगों पर पैसे की मार एक चान्दी का रुपया हथेली, से भी बड़ा माना जाता था। चांदी के रुपयो का चलन था। लोग पैसों को न्यौली में डालकर पेट पर बांधकर ले जाते थे। सोने का भाव 25 रुपये तोला था। चांदी का भाव चार आने प्रति तोला था। एक तोला चांदी के रुपये के बदले चार तोले चान्दी आ जाती थी। चांदी से रुपये की किमत ज्यादा थी। यह भाव शक सवम्त् 1990 के करीबे के थे।

गांव के पास बीहड बड़ा वन है। सरकार द्वारा चार आने प्रति भरोटा की पर्ची कटवा कर मेरे बहादूर लोग काफी बड़ा भरोटा अपने पशुओं के लिए वृक्षों से टहनीया काटकर लाते। नहर पार करके उस भरोटे के दो भाग करके दो चक्करों में अपने घरों में लाकर पशुओं का पेट भरते थे। लोगो को उस कठिन दौर से भी गुजरना पड़ा। अंग्रेजों के जमाने में केवल कुछ लोग रेलवे व फौज में नौकरी करते थे तथा 15 रुपये मासिक वेतन मिलता था। मैं मेरे गांव के उस समय के लोगों का आभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने अपने कष्ट के दिनों में भी अपनी जमीन को नहीं बेचा लेकिन अब जमीन धड़ा-धड़ बेची जा रही है। मारु जमीन का माल 2 आने बीघा ही देना बड़ा कठिन होता

था शक् विक्रमी 1999 में वर्षा हुई अच्छी फसल हुई। किलाबन्दी का काम पूरा होने के बाद लोगों ने अपने अपने कब्जे ले लिये तथा जमीन को ठीक करने के बाद 1961 में लोगों ने अपने खेतों में कुए खोदने शुरु किये। रहटों में ऊंटों को जोतकर पानी निकालकर खेती करना शुरू किया। गांव में पुराने राजवाहे से गांव की तरफ व ईटल की तरफ कुओं का पानी मीठा है संगत पुरा व जुलानी की तरफ की जमीन रेतीली व ऊंची है तथा इस तरफ का कुओं का पानी भी खारा नमकीन है। गेंहू बहुत कम बोई जाती थी चार या पांच मन बीघा के हिसाब से पैदा होती थी। मारु चने, सरसों, बाजरा होता था। लोग आपस में एक मन गेंहू के बदले (डेड) 1.50 मन चना दे देते थे। अनाज भाव एक रुपये का 30 सेर चना, एक रुपये का 30 सेर बिनौला, एक रुपये का एक सेर देशी घी।

यह ऐसा पहला गांव है जहां पर संयुक्त पंजाब के समय चौ० रणबीर सिंह हुड्डा बिजली व सिंचाई मन्त्री ने 16-02-1964 (रविवार) को बिजली व रजबाहाया न०-6 ए का उद्घाटन किया। इसके बाद लोगों ने बिजली के नलकुप लगाए तथा लोगों को अच्छी पैदावार मिलने लगी। सरकारी नौकरियों में काफी हिस्सेदारी मिली। गांव के पास किलाबंदी होने से पहले गांव समलात की 500 बीघे बणी थी जिसमें जाल के पेड़ थे तथा उन पर पिल लगती थी। (आजकल के देसी अंगूर जैसी होती थी) लड़कियां व बच्चे गेंहू की नालियों से बनी सन्डोरिया में पील तोड़कर लाते थे। जमीन पर हरीडा, फ्रांस, पीपल, बड़, नीम, जाल, जाण्डी, शीशम, कैर, खैर, कीकर, नीमच, कैन्दू, गुलर, जामुन आदि पेड़ होते थे। चुलाई, बथुआ, गांडल, काचर, टिण्ड, टिण्डसी, ककड़ी, कुन्दरा, मारू करेला, ककौड़ा आदि सब्जियां पैदा होती थी। बेर गूलर, पिन्जू, झींज, लसौड़ा, बरबन्टी, गिलहोट आदि फल भी इस बणी में होते थे। किलाबंदी में 33 एकड़ जमीन पंचायत के नाम कर दी जब कि यह जमीन खातेदारों की शामलात की थी। बाद में जुमला मालकान की कमेटी बनाकर श्री छाजूराम व रामदिये के अथक प्रयास से छोटी बड़ी कोर्टों में मुकदमा जीत कर जमीन का फैसला खातेदारों के नाम हुआ। जमीन का मुकदमा कम से कम दस वर्ष चला। अब यह जमीन पाने के अनुसार 40 किले पर करीबन एक किले के हिसाब से बांटी गई है तथा ठोले (पाना) अनुसार इसकी बोली करके पैसे पाने वाले बांट लेते हैं या अपने पाने के सामुहिक कार्यों पर खर्च कर देते हैं। इस गांव के लोगों का जाट हाई स्कूल निर्माण में अहम योगदान रहा है तथा बाद में भी काफी चंदा दिया है।

किलाबन्दी के कई वर्ष बाद गांव के आसपास लाल डोरे (जो जमीन बिना सरकारी रिकार्ड है) का बटवारा स्व० गणेशी नायब तहसीलदार (सेवानिवृत) ईक्स

द्वारा किया गया। गांव के पूर्व की लाल डोरा जमीन 15 गज प्रति रकात व पश्चिम लाल डोरा जमीन 18 गज प्रति रकात के हिसाब से बांटी गई। वर्ष 1964 से पहले पैदा पुरुष घर में जितने भी है+जमीन की रकात+कुढ़ी की रकात इन सब के जोड़ से प्रत्येक की कुल रकात बनती है। लालडोरे की जमीन का दोहरा बंटवारा किया था। (बनी में ऐतिहासिक पिपल का पेड़ जोकि छाजूराम वाले खेत में है, जण्ड पीपली झबरे वाले खेत में तथा खेड़े के ऊपर खड़ी जाण्डी का वृक्ष जब गांव बसा उससे भी पहले की गांव की धरोहर है। आने वाली पीढियों से विन्रम निवेदन है इन गांव की धरोहरों को बचाए रखना। पहले कुछ परिवार मिलकर खेती करते थे। एक-एक बैल से डंगोसरा के हल से खेती होती थी, एक दिन पड़ोस बैल ले जाकर हल जोतता दूसरे दिन पहला दूसरे के बैल को लेकर अपने खेत में हल जोतता था। नहरी पानी का बंटवारा पाने अनुसार बांटा जाता था। उस समय टाइमपिस व घड़ी नहीं थी, पानी का समय एक बर्तन (बोलवा) जिसके नीचे छिद्र होता था। यह बेलवा अनुमान एक घड़ी में खाली हो जाता था। इसके अनुसार नहर पानी का ओसरा चलाते थे।

नहरी पानी की नाली की खुदाई सामुहिक तौर पर (जिसके पास जितने घण्टे पानी होते थे के अनुसार कामड़ो से माप कर नाली की खुदाई) की जाती थी। ऊंची जमीन में डायलो से पानी सींचा जाता था। फसल की कटाई में 10 या 15 जवानों को फसल काटने के लिए इक्ट्ठे करके (लास) फसल काटते थे। खेत मालिक से दोपहर को बूरा की रोटी खाते थे। फसल की गहाई दाम खलिहान में एक लकड़ी मेढ का गाडकर उसके आसपास फसल डालकर आठया अधिक बैलों के गले आपस में बाधंकर फसल गाहकर निकलते थे, उसके बाद फूलसी व फिर तवे की गिरड़ी बाद में थ्रेसर का प्रचलन भी हुआ। पहले काठ के पहीयो की बैल की गाड़ी चली, फिर रबड़ के पहियों की झोटा बुग्गी का प्रचलन हुआ। जो बच्चे खेती से दूर रहते थे। उन्हें जेली,गड़ासी, घड़ोची, सलीते, ढांज, गिरड़ी, जाली आदि का कुछ भी पता नहीं, लोग सर्दियों में दूध देने वाले पशुओं के लिए झांड के पलोण्डे बनाकर गड़ासे में दो बार काटकर खिलाते थे। जिससे पशु अधिक दूध भी देते थे। पहले खेती बैलों से होती थी। आजकल छोटे से छोटा जमींदार भी खेती ट्रेक्टर से करवाता है, गांव में अब मुश्किल से चार या पांच जोड़ी बैल वाले हल होंगे। गांव में 6-ए० रजबाहा आने व बिजली के नलकुल लग जाने के बाद गांव में ईख काफी बोने लगे तथा सांझले (लाने के) कोहलू जो दिन-रात चलते थे तथा गुड बनाते थे। गांव में वर्ष 1954 तक मुश्किल से करीबन 200 घर ही थे। गांव की गलिया वर्ष 1954 में बनी जो आज तक भी ठीक है।

आजादी से पहले गांव काफी छोटा था। सभी मकान कच्चे थे। गांव की चोपाड़,

बाहरदरी, सोतवाला दरवाजा अगड़ी का मकान, केहर की हवेली (मुकटापाना) कन्हीया पुत्र दाताराम का (1923) मकान व बाहर का दरवाजा जनवरी 1930, छाजू पुत्र चन्दू की बाहर की दीवार (पचाणपाना) किदारा पुत्र माडू की बाहर की दीवार (बिछाण पाना) केवल का दरवाजा, झबरा नम्बरदार का मकान, नेकी का मकान, श्योकरण का मकान, उदमी का मकान तथा बाबा का डेरा ये सब छोटी ईंटों व चुने से बने हुए थे। क्योंकि उस समय सीमेन्ट का चलन न के बराबर था। सीमेंट का प्रयोग शहरों के मकानों मे तो शुरू हो गया था। गांव के बड़े तालाब पर बाबा के डेरे के साथ एक काफी ऊंचा टिला था, जिसके शिखर पर (जहां अब जातिगर मन्दिर है।) एक फरास का बड़ा पेड़ था जो जीन्द के राजा के किले पर से साफ दिखाई देता था। तालाब के चारों ओर काफी पिपल, बड़, नीम आदि के बड़े बड़े पेड़ थे। जिन पर सावन के महीने में महिलाएं एवं बच्चे झूलते थे। गांव के कुए में पानी काफी गहरा था। करीबन 100 हाथ पर नेजू सौंतवाले दरवाजे तक जाती थी। कुएं का पानी पीने के लिए ठीक नहीं था जिसके कारण गांव के जो व्यक्ति 50 वर्ष की आयु पूरी कर चुके है उनके तकरीबन दांत निकल चुके थे तथा पानी पीने से सभी दांत पीले हो जाते थे जैसे कोई जंग लग रहा हो। हर वर्ष लोगों ने ईंटों की पथाई करवाई या खुद ईंट पाथी, अपने ईधन से भट्टे लगाए तालाब के सभी वृक्ष व मिट्टी खत्म हो गई। आज गांव के सभी मकान पक्के बन गए है।

गांव के रीति-रिवाज– ज्यादातर गांव में विवाह समारोह गर्मी के महीनों में होते थे। बरात बैलडी, बैलगाड़ी, रथ-झमोली व घोड़ियो पर जाया करती थी। बारात में चार रोटी होती थी। एक रोटी डेरे वाले द्वारा दी जाती थी। महिलाएं चान्दी के जेवर ज्यादा पहनती थी। जब किसी के विवाह होता था तो गांव के सभी लोग उसके घर दूध से भरी टोकणियां देते थे। महिलाओं में घाघरा पहनने का चलन था। महिलाए अपने से बड़े बुजुर्ग के गुजरने पर रुकना, चौपाड़-खेड़ा से पल्लू करना, लड़कियां कार्तिक के पूरे महिने में तालाब में नहाती थी। विवाह समारोह में लड़के या लड़की के एक दूसरे के घर बान-बिठाना, विवाह करके घर लौटते पर कांगणा खुलवाना, छाप (अंगूठी) ढूढ़ना, कमचे मारना आदि रिवाज थें। इससे दुल्हे व दुल्हन का परिचय करवाना माना जाता था। विवाह में कच्ची रोटी (घी बूरे) का चलन था। बाद में लड्डू जलेबी व गुलदाना बनने लगा। सभी जमीन पर बैठ कर भोजन करते थे। टैण्ट व कार्ड का चलन नहीं था। विवाह की चिट्ठी नाई या डूम बांट कर आते थे। विवाह, भात व लड़की को भेजने पर न्यौदा लेने का बढ़िया चलन था। लोगों के पास पैसे की कमी के कारण न्यौंदा डाला जाता था जो आजकल बंद हो गया है। जब गांव का कोई भी पुरुष लड़की

की ससुराल में जाता था तो वह लड़की को एक रूपया जरूर देकर आता था। लड़की अपने भाई या भतीजें को दूध जरूर पिलाती थी वह कितना अच्छा समय था, गांव में आई बारात को विदा करते समय यह जरूर पूछते थे कि इस बारात में हमारे गांव का बटेऊ या भांजा आया है या नहीं। यदि बारात में गांव का बटेऊ या भांजा आया होता तो उसको रूपये आदि देकर सम्मानित किया जाता था। कन्या के विवाह में गांव का हर जाति का पुरुष कन्यादान डालता था। आजकल न्यौदा डालने के रिवाज का स्थान कन्यादान ने ले लिया है। कन्या के विवाह में कन्या दान को कापियों में लिखा जाता है। जब गांव में चौपाड़ कुआं आदि बनाने होते थे तो गांव को इकट्ठा करके तागड़ियों की बाच लगाकर व आसपास के गांव से भी न्यौदा डलवा कर धनराधि एकत्रित की जाती थी। उस समय घी सस्ता था। शक सम्वत् 1990 में घी एक रुपये का सेर आता था। गांव में कोई भी दूध नहीं बेचता था। फाग के महीने में पुरुष व महिलाएं फाग पानी व कपड़े के कोरड़ो के साथ खेलती थी। गांव के चौक में बड़े बड़े कढ़ाओं को रख कर लड़कियों द्वारा पानी से सुबह भर दिया जाता था। कभी भी फाग में झगड़ा नहीं हुआ तथा ना ही गांव में आज तक कोई खून हुआ। जब भी कोई नया मकान बनाता, शहतीर चढ़ाना होता छत्त देनी होती सभी भाई इकट्ठे होकर उसकी मदद करते थे। बड़े बड़े दरवाजों में रात के समय लोग इकट्ठे बैठकर बैठक करके एक दूसरे सुख-दुःख, फसल बाड़ी के बारे में चर्चा करते थे। लालड़ी ईख, देशी गेंहू बोते थे, फसल में देशी खाद डालते थे। अंग्रेजी खाद, दवाईयां नहीं डाली जाती थी। लालड़ी ईख चूस कर लोगों के चेहरे लाल हो जाते थे। भैसों को पसर चराने जाते थे। सभी बच्चों को तैरना आता था। पशुओं में जब भी कोई बिमारी पैदा हो जाती थी गांव इकट्ठा होकर बन्धा बांध देते थे। दिनरात चौबीस घण्टे तक कोई भी आदमी गांव की सीमा से बाहर नहीं जा सकता था तथा ना ही गांव में कोई आ सकता था। गांव की सीमाओं पर पहरा लगा देते थे। गांव की महिलाएं चौपाड़ में नहीं चढ़ती थी। गांव में आई बारात को विदा करते समय चारो पाने में से दो-दो आदमियों को बुलाकर बारात विदा की जाती थी। कारता पर्था थी प्रत्येक पाने से दो आदमियों को बरात को खाना खिलाने के लिये बुलाया जाता था वे अपने पाने के प्रत्येक घर से एक थाली, एक गिलास इकट्ठा करके लाते थे क्योंकि उस समय पंचायती बर्तन नहीं होते थे। दिवाली पर मिट्टी के दीपक सरसों का तेल डालकर जलाए जाते थे। घरों की सफाई पुताई भी दिवाली से पहले हो जाती थी। अपने पशुओं को नहलाना, उनके सींगों पर तेल लगाया जाता था तथा गले में मोर के पंखों से बनी, गाड़ली, पट्टू हरड़े बना कर बांधे जाते थे। दिवाली पर मिठाई में खिल-खिलौने का चलन था। नई बहूं के आने पर लड़के के दोस्तों को चुरमा कसार खिलाया

जाता था। सावन के महिने में लड़कियों को शुद्ध सरसों के तेल से बनी सुहाली-गुलगले, पुड़े आदि की कोथली भेजी जाती थी। जवान लड़को में मेगरी घूमाना, चकली, गिरड़ी व घडौची उठाने का शोक था। विक्रमी सम्वत् 2017 (20 अप्रैल 1960) की साल गांव में रिकार्ड तोड़ फसल पैदा हुई थी, परन्तु कुदरत का परकोप ऐसा हुआ पकी हुई फसल को ओलावृष्टि ने पूर्ण रूप से पूरे गांव की फसल को नष्ट कर दिया था।

गांव में खेलों का विशेष चाव रहा है।

सबसे पहले सयुंक्त पंजाब के समय 26 जनवरी 1958 को सर्कल कब्बडी पंचायत खेलकूद प्रतियोगिता तहसील नरवाना जिला संगरुर (पंजाब) में हुई। इस टीम में मा० टेकराम (हाट), तेलूराम, दरियासिंह, हरफूल, जिलेसिंह, रायसिंह, सीताराम, लालचन्द ईटल, चतरसिंह आदि नौ खिलाड़ी गांव की टीम में खेले थे। इन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त करके सरदार उद्यम सिंह प्रथम श्रेणी मेजिस्टेट्र नरवाना के कर कमलो द्वारा कप प्राप्त किया था। यह गांव की खेल में पहली उपलब्धि थी। इसके बाद गांव में खेलकूद के बारे काफी शोक शुरू हो गया। 26 जनवरी 1965 से 26 जनवरी 1974 तक करीबन 10 वर्ष तक गांव में खेल होते रहे। गांव के लड़को ने अच्छे ईनाम भी प्राप्त किये। गांव के खिलाड़ियों की जानकारी कौन किस खेल का खिलाड़ी था उनके पाने के बारे में लिखी जानकारी में लिखा गया है।

बाबा जातीगर युवा खेल संगठन (रजि०)

जलालपुर कलां (जींद)

आजकल गांव में बाबा जातीगर युवा खेल संगठन का गठन किया हुआ है। क्रीड़ा कोच, स्कूल खेल मैदान में खिलाड़ियों को प्रत्येक खेल का प्रशीक्षण देता है। इसमें गांव के काफी युवा खिलाड़ी सुबह-सायं अभ्यास करते है।

गर्मी के मौसम में लोग कुए के पास नीमों की छाया में अपनी अपनी चारपाई लाकर दोपहरी में सोते थे। यह गांव आर्य समाजियों का गांव कहलाता था इस गांव में कोई भी मन्दिर नहीं था। समय समय पर इस गांव में, आर्य समाज के प्रचारक आते रहे हैं। गांव में भी आर्य समाज सभा का गठन किया हुआ था। जो समय समय पर समाज में फैली बुराईयों के प्रति प्रचार होता रहता था इसके प्रधान छाजूराम व रामस्वरूप (मुंशीजी) रहे है। आजकल महेन्द्र पाल आर्य प्रधान है।

गांव में अब तक बनी पंचायतों के बारे में

भारत वर्ष के आजाद होने के बाद पंचायत राज प्रणाली शुरू हुई सरकार ने वर्ष 1952 में यह फैसला लिया कि पंचायतों का गठन दो-दो गांव की इक्ट्ठी पंचायत बनाकर किया जाएगा।

कार्यकाल 1952 से 1958 तक।

1. चौ० जोगी राम सरपंच जुलानी व जलालपुर कलां

1. रामसरुप (मुन्शी जी) न्याय पंच (उप सरपंच)
2. ज्ञानीराम पुत्र पूर्ण मल पंच
3. सोहलू पुत्र ज्वाला पंच
4. दलसिंह पुत्र ज्वाला पंच
5. दिवान सिंह पुत्र उदमी पंच

2. चौ० रामसरूप पुत्र बसाऊ राम (पचाण पाना) सरपंच

कार्यकाल 1958 से 1964 तक

1. श्री ज्ञानीराम पुत्र पूर्णमल पंच
2. दरियासिंह पुत्र फत्तेसिंह पंच
3. सरुपसिंह पुत्र तुरतीराम पंच
4. छोटा राम पुत्र भूरू धानक पंच
5. श्रीमति सुखमा पत्नी मा० जोगीराम पंच

3. चौ० सूरतसिंह पुत्र श्री झबरा नम्बरदार (गढी पाना) सरपंच

कार्यकाल 1964 से 1969 तक

1. चौ० खुजान सिंह पुत्र कन्हीया राम पंच
2. चौ० दिवानसिंह पुत्र उदमी राम पंच
3. चौ० जसवन्त (दुर्गा) पुत्र भूरा राम पंच
4. चौ० छोटा राम पुत्र भूरू धानक पंच
5. चौ० सद्दीकन पत्नी सलामुद्दीन पंच

4. चौ० किशन चन्द पुत्र श्री नेकीराम (गढी पाना) सरपंच

कार्यकाल 1969 से 1978 तक

1. श्री दयासिंह पुत्र मांगे राम पंच
2. श्री ठण्डीराम पुत्र धोकल धानक पंच
3. श्री जसवन्त (दुर्गा) पुत्र भूरेराम पंच
4. श्रीमति माड़ो पत्नी कर्मा लुहार पंच
5. श्रीमति खुजानी पत्नी जोगीराम पंच

5. चौ० सुनहरसिंह पुत्र श्री बीरसिंह (बिच्छाण पाना) सरपंच

कार्यकाल 1978 से 1983 तक

1. श्री रामफल पुत्र श्री चन्दन सिंह पंच
2. श्री ईश्वर सिंह पुत्र श्री नन्दा राम पंच
3. श्री दरियासिंह पुत्र श्री फत्तेह सिंह पंच
4. श्री मुन्शी राम पुत्र श्री घन्ना राम पंच
5. श्री रामधारी पुत्र श्री मोधू धानक पंच
6. श्रीमति संदोखी पत्नी श्री रसूला लौहार पंच

6. चौ० सुनहर सिंह पुत्र श्री बीरसिंह (बिच्छाण पाना) सरपंच

कार्यकाल 1983 से 1988 तक

1. श्री रघबीर सिंह पुत्र हजूरा पंच
2. श्री रामफल पुत्र मांगेराम पंच
3. श्री रामचन्द्र पुत्र शेरु पंच
4. श्री जोगीराम पुत्र मोतीराम हरिजन पंच
5. श्री सूरजभान पुत्र काटवाराम धानक पंच
6. श्रीमति सुद्दी पत्नी रामसरुप पंच

7. चौ० ईश्वर सिंह पुत्र श्री नन्दाराम (पचाण पाना) सरपंच

कार्यकाल 1988 से 1992 तक

1. श्री राजेन्द्र सिंह पुत्र श्री बिरखेराम पंच
2. श्री मोजीराम पुत्र श्री कर्मा लुहार पंच
3. श्री कलमी पुत्र श्री निहाला धानक पंच
4. श्री बदलूराम पुत्र श्री लिछमन खाती पंच
5. श्रीमति किताबो पत्नी श्री ईश्वर सिंह पंच

8. चौ० बिजेसिंह पुत्र श्री सरूप सिंह (गढी पाना) सरपंच

कार्यकाल 1992 से 1995 तक

1. श्री अजाब सिंह पुत्र भलेराम पंच
2. श्री धर्मबीर पुत्र दारा धानक पंच
3. श्री रामपाल पुत्र चन्दन खाती पंच
4. श्री बलवान सिंह पुत्र विजय सिंह पंच
5. श्रीमति जगवन्ति पत्नी विजयसिंह पंच

9. चौ० रामपाल पुत्र चन्दनसिंह सरपंच

कार्यकाल 1995 से 2000 तक

1. श्री सतबीरसिंह पुत्र रामदिया पंच
2. श्री विजयसिंह पुत्र श्यामसिंह पंच
3. श्री कर्मचन्द पुत्र मुन्शीराम खाती पंच
4. श्री रणबीरसिंह पुत्र मुन्शा धानक पंच
5. श्रीमति दर्शना पत्नी मा० रामफल पंच
6. श्रीमति बाला पत्नी चन्दन सिंह पंच
7. श्री राममेहर पुत्र लछमन सिंह पंच

10. श्री विजयसिंह पुत्र श्री रिसाला हरिजन सरपंच

कार्यकाल 2000 से 2005 तक

1. श्री सुलतान सिंह पुत्र भानाराम पंच
2. श्री कुलदीप सिंह पुत्र महासिंह पंच
3. श्री विजयसिंह पुत्र श्यामसिंह पंच
4. श्री बारु राम पुत्र बनवारी लाल खाती पंच
5. श्रीमति दीपो देवी पत्नी राम सरूप धानक पंच
6. श्रीमती केला देवी पत्नी महताब सिंह पंच
7. श्री कपूरा पुत्र कर्मा लौहार पंच

11. श्री जिलेसिंह पी०टी०आई० पुत्र श्री चेतराम (मुकटा पाना) सरपंच

कार्यकाल 2005 से 2010 तक

1. श्री सुलतान सिंह पुत्र श्री गुलाब सिंह पंच
2. श्री कर्मचन्द पुत्र मुन्शी खाती पंच
3. श्री जीवनसिंह पुत्र रणसिंह हरिजन पंच
4. श्री कपूरा पुत्र कर्मा लुहार पंच
5. श्री रणधीर सिंह पुत्र मामन राम पंच
6. श्रीमति मुन्नी पत्नी रामकुमार पंच
7. श्रीमति प्रेमो देवी पत्नी जयभगवान पंच
8. श्रीमति कमलादेवी पत्नी सतपाल सिंह पंच
9. श्रीमति कमलेश पत्नी कर्मबीर सिंह पंच
10. श्रीमति रोशनी पत्नी इन्द्र सिंह धानक पंच
11. श्री राजा पुत्र सुरजीत सिंह पंच

12. श्री सुभाष चन्द्र पुत्र जोगीराम हरिजन सरपंच

कार्यकाल 2010 से अब तक मौजूदा है

1. श्री ईश्वर सिंह धानक पंच
2. श्री वजीर सिंह धानक पंच
3. श्री सुरेश कुमार पुत्र सुबेसिंह पंच
4. श्री कमलसिंह पुत्र रामसरण पंच
5. श्री कुलदीप पुत्र मोजी लुहार पंच
6. श्री रोहतास पुत्र फूलसिंह पंच
7. श्रीमति निर्मला पत्नी रामेश्वर पंच
8. श्रीमति धनपति पत्नी कपूर सिंह पंच
9. श्रीमति बिमला देवी पत्नी राजेन्द्र सिंह (काला) ए.एस.आई पंच
10. श्रीमति बोबल पत्नी श्री सतबीर हरिजन पंच
11. श्रीमति रोशनी पत्नी श्री राजपाल कुम्हार पंच

नवगठित पंचायत

12. श्रीमती सुमित्रा पत्नी डॉ० सतपाल जागलान

आज गांव में पांच नम्बरदार जागलान है:–

1. आजादसिंह पुत्र चन्दूराम मुकटा पाना
2. शमशेर सिंह पोता झबराराम गढी पाना
3. आजाद सिंह पोता गोपाला राम पचाण पाना
4. सुनील पड़पौता श्री गिरधारी लाल बिछाण पाना
5. इन्द्रसिंह (कालू) पुत्र बदलूराम खाती पाना
6. श्याम लाल पुत्र रामस्वरूप धानक

इन सभी नम्बरदारों के पास भी गांव का कोई आदमी इनसे सम्बन्धि कार्य के लिए जाता है तो ये उनके साथ जा कर काम करवाते है तथा सभी की रिहायस गांव के अन्दर है। गांव में 1947 में करीबन 150 घर तथा वर्ष 1964-65 में गांव में करीबन 250 घर (कुढिया) थी। तथा आज पचाण पाना 76, गढी पाना 110, बिछाण पाना 61, मुकटा पाना 54, श्योराण पाना 30, जाटो के 300 घर है, धानक 125 चमार 50, खाती 72, लौहार 50, कुम्हार 19, डूम 2, नाई 2, भाट 3 ब्राह्मण एक घर कुल 656 घरों का गांव है।

आज गांव में प्राईमरी स्कूल हाई स्कूल, तीन तालाब, पशु अस्पताल, आंगनबाड़ी केन्द्र, वाटर वर्क्स, सभी घरों के आसपास पानी कनैक्शन हैं। सभी गलियां पक्की व नाली बनी हैं। गन्दे पानी की निकासी के लिए बड़े नाले भी बना रखे हैं। आज गांव की जनसंख्या 3153 हैं जिनमें वोटर 2286 हैं। कुल 656 घरों के गांव में 10 जातियों के लोग आपस में भाईचारे से रहते हैं। आज तक सरकारी सेवा में गांव के करीबन 200 सदस्य पुरुषों व महिलाओं ने सरकारी सेवा ग्रहण की है, इनमें से काफी आज भी सेवा में कार्यरत हं। गांव में भव्य जीतगर मन्दिर व एक मस्जिद भी है। जो लोगों के द्वारा समय-समय पर दिये जाने वाले अनुदान से चल रहा है।

मुझे गांव के बारे में अन्त में लिखते हुए बड़ा दु:ख हो रहा है कि आज मेरे गांव में शराब का सेवन काफी बढ़ गया है। मेरा खास कर आज के नवयुवकों से अनुरोध है कि समाज में फैली बुराइयों एवं नशों से दूर रहे तथा अच्छे बच्चों की संगत करके अच्छी शिक्षा ग्रहण करके गांव का नाम रोशन करें।

जलालपुर गांव के गणमान्य व राजपत्रित अधिकारी

1. स्व० पोहलूराम पुत्र कोहर सिंह जागलान, शहीद मोठ लुहारी 1947
2. स्व० केवल सिंह पुत्र भालसिंह जागलान पहला प्रधान नौगामा खाप
3. स्व० मास्टर जोगीराम पुत्र ज्वालाराम पूर्व एम.एल.ए. रियासत जीन्द

4. स्व० भूराराम पुत्र श्री बुद्धासिंह खाती, शहीद मोठलुहारी 1947
5. स्व० भलेराम पुत्र श्री जागर धानक, शहीद बख्शी की हवेली, 1947
6. स्व० छाजूराम पुत्र श्री चन्दूराम समाजसेवी पूर्व प्रधान आर्यसमाज खजांची गांव सबसे बड़ा दानवीर
7. स्व० दलेराम जागलान पुत्र श्री अगड़ीराम स्वतन्त्रता सेनानी, (आईएनए)
8. स्व० धर्मसिंह पुत्र श्री रामकिशन जागलान, एक्स-ईएन, PWD, B&R
9. श्री सूरजमल जागलान पुत्र स्वरूप सिंह रिटायर्ड मैनेजर वेयर हाउस कार्पोरेशन
10. डॉ० जगदीश पुत्र श्री छाजूराम जागलान, रिटायर्ड एस.डी.ओ. (पशुपालन)
11. राजपाल पुत्र श्री मानसिंह, रिटायर्ड एसडीओ (नहर विभाग)
12. डॉ० कुलदीप सिंह जागलान पुत्र श्री सूरजमल, एम.बी.बी.एस., एम.डी.
13. डॉ० बबीता पत्नी डॉ० कुलदीप सिंह बी.डी.एस.
14. डॉ० सुभाष जागलान पुत्र श्री ब्रह्मानन्द, एम.बी.बी.एस.
15. डॉ० सुशील पुत्र श्री ब्रह्मानन्द, बी.डी.एस.
16. श्री नरेश जागलान पुत्र महेन्द्र सिंह जागलान
    मनोवैज्ञानिक, टीचर ऑर्ट ऑफ लिविंग, एम.ए., एम.फिल., एल.एल.बी.,
17. डॉ० संदीप जागलान पुत्र सूरजमल, बी.ए.एम.एस.
18. डॉ० मीनाक्षी, पत्नी डॉ० संदीप, बी.ए.एम.एस.
19. डॉ० नरेन्द्र कुमार जागलान पुत्र कैप्टन कर्मबीर, बी.डी.एस.
20. श्री राजकुमार जागलान पुत्र श्री मुंशीराम, सीनियर बैंक मैनेजर ओबीसी
21. लाला रामेश्वर दास गुप्ता पुत्र श्री देवतराम गुप्ता, पहला स्नातक एवं व्यवसायी अहमदनगर (महाराष्ट्र) प्रसिद्ध समाजसेवी
22. श्री चन्द्रभान जागलान पुत्र जोगीराम एडवोकेट
23. श्री प्रदीप पुत्र श्री जगदीश जागलान एडवोकेट
24. श्री सुरेन्द्र पुत्र श्री महावीर सिंह जागलान एडवोकेट
25. स्व० बलजीत सिंह पुत्र श्री छाजूराम, वन रजिक अधिकारी
26. प्रो० जगबीर सिंह पुत्र धर्मसिंह जागलान राजस्थान कॉलेज कैडर
27. डॉ० वजीर सिंह पुत्र श्री जोगीराम चौहान, एस.डी.ए.ओ. कृषि विभाग
28. श्री धर्मसिंह जागलान पुत्र श्री नारायण सिंह (रि.) मुख्याध्यापक
29. श्री सतबीर सिंह, पुत्री श्री साधुराम (रि.) मुख्याध्यापक
30. श्री नरेन्द्र पाल पुत्र श्री रामस्वरूप आर्य (रि.) प्राध्यापक

31. श्रीमती सन्तोष आर्या पत्नी डॉ० वजीर चौहान प्राध्यापिका
32. श्रीमती शालिनी पत्नी श्री नरेश जागलान प्राध्यापिका
33. डॉ० भूपसिंह पुत्र श्री रामफल चौहान प्राध्यापक
34. श्री जयसिंह जागलान पुत्र श्री दिलीप सिंह (रि.) प्राध्यापक
35. श्री धर्मवीरसिंह जागलान पुत्र श्री बारूराम, डी.पी.ई. चण्डीगढ़ (राष्ट्रीय खेल अवार्डी)
36. कै० भूपेन्द्र सिंह जागलान पुत्र श्री सूरतसिंह, रिटायर्ड
37. कै० कर्मबीर जागलान पुत्र श्री बरखाराम, रिटायर्ड
38. श्रीमती माला जागलान, पत्नी श्री महेन्द्र सिंह जागलान, समाजसेविका, प्रधान महिला समाज सेवा समिति, जीन्द जिला प्रशासन द्वारा 2005 में सम्मानित
39. महेन्द्र सिंह पुत्र श्री नारायण सिंह एक्साईज इंस्पैक्टर सेवानिवृत्त, लेखक एवं प्रवक्ता नौगामा खाप
40. डॉ० सुशील पुत्र श्री सतपाल जागलान, बी.एच.एम.एस.
41. श्री सतीश पुत्र श्री चन्द्रभान जागलान (भानड़ा) चीफ ब्यूरो, नया सवेरा समाचार पत्र
42. श्री बिजेन्द्र सिंह पुत्र श्री मनफूल सिंह, Asstt. Commtt. S.S.B.
43. श्री सोमबीर जागलान पुत्र मा० सतबीर सिंह Central Excise & Custome Instpector

श्री गुलाब सिंह पुत्र श्री मानसिंह (92 वर्ष) सबसे बड़ा पुरुष है। जयवेद पुत्र श्री मनफूल सिंह गांव का सबसे बड़ा जमींदार है। अजायब सिंह पुत्र श्री भलेराम का गांव में आज भी संयुक्त परिवार है।

दानवीर चौ० छाजूराम जागलान

आधुनिक युग में दानवीर चौ० छाजूराम को गांव में अपना समय का सबसे धनी व दानवीर व्यक्ति मानते है आपका जन्म 19-10-1919 को गांव जलालपुर कलां में चौ० चन्दूराम आर्य के घर हुआ जो कट्टर आर्य समाजी व दानी पुरुष थे। आपकी माता जी आपको मात्र 3 वर्ष की आयु में छोड़कर चली गई। आप अपने पिता की इकलौती सन्तान थे। आपका पालन पोशन आपकी ताई वीरदे (कोलेखा वाली) ने किया। आपका विवाह छोटी आयु में शादीपुर जुलाना लाठर गौत्र की सुखमां देवी के साथ सम्पन्न हुआ। आपके अन्दर बचपन से आर्यसमाज का प्रभाव था तथा आप सुबह-सायं वैदिक संध्या जरूरी करते थे। आप का प्रभव आर्यसमाज के प्रचारकों के साथ रहा, जहां भी आर्यसमाज का कोई प्रोग्राम होता आप इन सभा में जरूर जाते खासतौर पर महाशय पृथ्वी सिंह बैधड़ से आपको विशेष लगाव था। आपके पास इनकी सैकड़ों पुस्तके मौजूद है। आपके अन्दर कौम के प्रति प्यार कूट-कूट कर भरा था। अतिथि सेवाभाव में यह परिवार लबालब भरा हुआ है, राष्ट्र तथा गौत्र के प्रति इनमें पूरा भाव था। आपने अपने गांव में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज के संगठन के माध्यम से गांवों के गरीब मजदूर किसानों को भ्रातृभाव से रहने और आर्य बनने की प्रेरणा दी। आप जाट महासभा तथा आर्य समाज के नियमों का पालन किया करते। आपने दहेज-प्रथा का डटकर विरोध किया। आप आर्यसमाज गांव के पूरे जीवन प्रधान रहे तथा आपकी गिनती पूरे गांव में एक ईमानदार व्यक्ति के तौरपर की जाती थी तथा पूरी आयु आप गांव के खजान्ची भी रहे। आपके तीन सुकन्या मायापति, बेदोदेवी व मूर्ति तथा तीन पुत्र रत्न डा० जगदीश, बलजीत व जगबीर पैदा हुए जगबीर की मृत्यु छोटी ही उमर में हो गई। आपका बड़ा लड़का डा० जगदीश पशु पालन विभाग से बतौर उप मण्डल अधिकारी सेवानिवृत हुआ है। यह दान पुण्य में अपने पिता के पद-चिह्नों पर चलते हुए, इन्होंने भी गांव की धानक चौपाल की नींव वर्ष 2011 में रखने पर 31000 रुपये दान दिये हैं तथा शान्तिकुंज आश्रम (हरिद्वारा) का जीन्द में भवन निर्माण हेतु 31000 रुपये दान दिया है। यह कई वर्षों से हर वर्ष जीन्द की गोशाला में एक क्विंटल अनाज भी दान देते हैं। इनकी 34 वर्ष की सरकारी सेवा के दौरान मौखिक एवं लिखित में जनता की तरफ से कोई शिकायत नहीं हुई तथा इनका कार्य बहुत ही सराहनीय रहा है। इनका छोटा पुत्र बलजीत सिंह वर्ष 1978 में

वन विभाग में वन रजिक अधिकारी नियुक्त हुआ। इनका हृदयगति रुक जाने के बाद 26 जून 1994 को देहान्त हो गया।

स्व० बलजीत सिंह का एक बेटा रवि व एक कन्या एकता है दोनों बच्चों ने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली है। तथा दोनों की शादीशुदा हैं। डा० जगदीश के दो पुत्र हरदीप व प्रदीप है। हरदीप जागलान ने एम.एस-सी. पास की है। आजकल वह हॉलैण्ड में वैज्ञानिक है तथा दूसरा पोता प्रदीप जागलान जीन्द कोर्ट में वकालत करता है तथा रवि जागलान पुत्र स्व० बलजीत सिंह अपना व्यापार करता है और इसके साथ-साथ इसका पैट्रोल पम्प भी है। चौ० छाजूराम को पुराना आनाज, पुराना गुड व अन्य पुराना खेती बाड़ी का समान सम्भाल कर रखने की आदत थी इनके पास चालीस वर्ष पुराना गुड़ मिल जाता था। इन्होंने प्राईवेट तौर पर पाँचवीं पास की तथा आरएमपी का भी प्रमाणपत्र लिया। यह आयुर्वेदिक विधि द्वारा मुफ्त में ईलाज करते थे। गांव में कोई भी किसी प्रकार का चन्दा लेने आता तो यह सबसे अधिक दान देते थे। गांव के स्कूल के एक कमरा ईटल स्कूल में एक कमरा, जाट हाई स्कूल में एक कमरा, जाट धर्मशाला जींद व कुरुक्षेत्र में भी एक एक कमरा दान दे रखा है तथा समय समय पर जींद व डाटा की गऊशालाओं में भी दान देते थे। ये सदाचारी बैल रहित केवल हुक्का पीते थे। सूती सफेद खद्दर के कपड़े पहनते थे तथा सांग व सिनेमा से नफरत करते थे। पंचायत व खाप व्यवस्था में आपकी गहरी रुचि थी। गांव में कोई भी कार्य आपकी हाजिर के बिना सम्पन्न नहीं होता था। पूरे गांव में आपका कोई शानी नहीं है। सभी मित्र बन्धु रिश्तेदार इनको सम्मान की दृष्टि से देखते थे। तथा इनका आदर करते थे। गांव के युवाओं को आप आर्यसमाज की शिक्षा देते थे तथा समय समय पर बच्चों को भी आर्यसमाज के जलसों आदि में ले जाते थे। ख्याति और धनी होने के बावजूद वे हमेशा सरल और अहंकार विहीन रहे। इनका निधन लम्बी बिमारी के कारण दिनांक 8 दिसम्बर 2006 को 90 वर्ष की आयु में होगया। अन्त में मैं उस प्रभु से हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूं प्रभु उनकी आत्मा को शन्ति दे तथा परिवार उनके बताए हुए रास्ते पर चले।

इनकी वशावली :-

हरदीप, प्रदीप सुपत्र डा० जगदीश, रवि पुत्र स्व० बलजीत सिंह सुपुत्र छाजूराम पुत्र चन्दूराम पुत्र रामरतन पुत्र सरभराम पुत्र दादा अमीया पुत्र दादा सुरत सिंह।

चौ० नारायण सिंह जागलान

(लेखक के सौजन्य से)

''कायर कभी सदाचारी और नीतिमान नहीं हो सकता।''

कोई भी पिता अपने बेटों के लिए एक बरगद के पेड़ की तरह होता है। जिसके साए में बेटों को ताउम्र जीना पड़ता है। बेशक बाप की कमी बेटो को हर वक्त खलती है। लेकिन कुछ व्यक्ति या यू कह लें कि पिता ऐसे होते है कि जो समय के ऊपर ऐसी छाप छोड़ जाते है कि वह सदियों तक नहीं मिटती ऐसे लोग मरते नहीं। इनका जन्म 22 दिसम्बर 1921 को चौ० कन्हीयाराम के घर हुआ। गांव में बच्चे इन्हें बुढे दादा के नाम से जानते थे। चौ० कन्हीया राम के चार लड़के नारायण सिंह, खुजान सिंह, ज्ञान सिंह व देवीराम तथा सुकन्या ज्ञानो व सुनहरी पैदा हुई। आपकी माता का नाम वीरदे था जिसको गांव में कोलेखां वाली भी कहते थे। आज आपके भाई बहनो में केवल सुनहरी ही जीवित है। आपका लालन-पालन बड़े प्रेम से हुआ आपके जन्म पर गांव में दसुठन भी किया गया तथा लोगों को भोजन कराया गया था। आपने छोटी आयु में ही खेतीबाड़ी, पशु चराना आदि कार्यों में रुचि लेनी शुरू कर दी। इनके मनमें दूसरो का भला करने की ललक बचपन से ही थी। इन्होंने गांव की चौपाल में हिन्दी का मामूली ज्ञान प्राप्त किया तथा ये कभी भी स्कूल में नहीं गए। घर में काम करने वालों की कमी के कारण आपकी शादी बैसाख सुदी आठम विक्रमी सम्वत् 1995 में चौ० नेतराम लुहाच गांव मोहला हिसार की कन्या राजोदेवी के साथ हो गई। इनके पास जब भी कोई पांच दस मेहमान आते थे तो वह खाना तथा चाय-पानी तत्काल मेहमानों की सेवा में हाजिर कर देती थी। आप खेतीबाड़ी में खुब मन लगाकर काम करते थे तथा आपने अपने सभी बच्चों को स्कूल में पढ़ाया। आपका अपने छोटे भाइयों से कभी भी झगड़ा नहीं हुआ चारो भाई इक्ट्ठे बैठकर ताश खेल लेते थे। आपसे छोटे भाई खुजान सिंह से विशेष लगाव था तथा आप दोनों भाई मरते दम तक इक्ट्ठा रहे। आपने अपने बच्चों को काम के लिए कभी सोए हुओ को नहीं जगाया, खेतीबाड़ी के काम में खासतौर पर सफाई से काम करने व हल चलाने में आपका रिकार्ड रहा है। आपको फुहड कार्य पसन्द नहीं था। पुरा दिन काम करने के बाद सायं के समय कैसा भी मौसम हुआ हमेशा ठण्डे पानी से स्नान करते थे तथा हमेशा सुती कमीज, सुती धौती ''श्री'' दस गजी दोहरी लागड़ वाली सफेद सुती

साफा ही बाधते थे रंगीन कपड़े कभी भी नहीं पहने तथा साफ कपड़े ही पहनते थे। आप हमेशा चौ० देवीलाल व चौ० छोटूराम को किसानों, व गरीबों का नेता मानते थे तथा चौ० देवीलाल का जहां भी कोई जलसा, मीटिंग होती थी अपना चादर डोगा उठा कर पैदल ही चल पड़ते थे तथा कहते थे कि किसानों के सच्चे हितैषी चौ० देवीलाल व चौ० छोटूराम के चित्रों को किसानों ने अपने घरों में लगाने चाहिए। आप हुक्का छोड़कर कोई भी नशा नहीं करते थे। सादा खाना खाते थे तथा घर पर कभी भी ये नहीं कहा कि इसमें नमक कम या ज्यादा है। छोटे बच्चों को अपने साथ बैठाकर खाना खिलाने में विश्वास करते थे घर में हमने कभी भी वे बिना बच्चों के साथ बैठे भोजन करते नहीं देखे। उन्हें चाहे किसी का भी बच्चा मिल जाता उसे अपनी गोद में उठा लेते थे। तथा वे जातिपाति में बिलकुल विश्वास नहीं रखते थे। रात के समय बच्चों को पुरानी राजा महाराजाओं की कहानियां सुनाते थे। इनकी पुत्रवधु माला जागलान महिला समाज सेवा समिति जीन्द की प्रधान है जो समाज सेविका भी है। यह कुशल गृहणी के साथ-साथ योग विधि द्वारा स्त्रियों एवं बच्चों के जटिल बीमारियों के हजारों मरीजों को बिना दवाइयों के रोगों से छुटकारा दिलवा चुकी है। इनकी सेवाओं को देखते हुए गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी 2005 को जिला प्रशासन द्वारा इनको सम्मानित भी किया जा चुका है। इनका पोता नरेश गांव का पहला लड़का है जो विदेश (आस्ट्रेलिया) दो वर्ष पढ़ाई करके आया है।

आपका अपनी जिन्दगी में किसी से कोई झगड़ा नहीं हुआ। सभी वर्ग के लोग आपका सम्मान करते थे। गांव में आप खेत में काम करके बाद दोपहर अपने साथियों के साथ बैठक में पत्तादाब, या काटबोल ताश का खेल खेलते थे। रस्सा बाटना, खाट भरना, छिक्की बनाना, टोकरे में रस्सी डालना, पीढ़ी भरना, पालने में रस्सी डालना काम बड़ी सफाई से करते थे। गांव व पाने की स्त्रियां आपसे इस प्रकार के कार्य करवाती थी तथा आपने इन्हें कभी मना भी नहीं किया, पाने में जब भी किसी के कोई भी खुशी का मौका होता था तो सबसे पहले बुढ़े दादा का न्यौता होता था। आप सबर, सन्तोषी, दूसरो को खुश देखकर खुश रहने वाले थे गांव की राजनीति व पंचायत से दूर रहे और ना ही घर के लेनदेन के चक्कर में रहे। गांव से जींद अर्बन इस्टेट में आपके दो बेटो के मकान है जो गांव से 9 किलामीटर पड़ते है, अपने दोनों पुत्रों के मकानों पर आप पैदल ही जाते थे। कुलर, पंखे व टेलिविजन का प्रयोग कभी नहीं करते थे। किसी का बुरा नहीं सोचते थे हमेशा खुश रहते थे हमने उनको कभी गुस्से में नहीं देखा चिन्ताओं से कोसों दूर तथा सदाचारी जीवन जिया तथा कभी भी डाक्टरों के पास नहीं

गए। हमारे गांव के विरले पुरुष थे जिनकी सभी जातियों के लोगों से खुब बनती थी। अपना सारा जीवन लोगों व रिश्तेदारों के काम आया, ऐसे पुरुष बार-बार जन्म नहीं लेते है।

ऐसी महान् आत्मा का 76 वर्ष की आयु में दिनांक 27 अगस्त 1997 को सायं 4.10 बजे हृदय गती रुक जाने से अचानक देहान्त हो गया। उसी दिन दोपहर तक ताश खेलते रहे। मैं एक तरह से कहू तो मेरे पिता जी की कमी से मैं निराश नहीं होता, वे मेरे सामने न होकर भी मुझे प्रोत्साहित करते रहते है। यह प्रोत्साहन मुझे कड़ी मेहनत से जुड़ा रहना तथा सभी बच्चों को शिक्षित कर रहा है। यह अपने जीवन काल में एक सच्चे ईमानदार एवं मेहनती किसान रहे। इनको अपनी जिन्दगी में किसी से विशेष व्यक्ति विशेष से कोई ज्यादा लगाव व विरोध नहीं रहा जो भी व्यक्ति इनको प्यार से बोला उसी के पास बैठे। लेकिन रहते आत्मसम्मान के साथ। मैं अन्त में भगवान से प्रार्थना करता हूं कि परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दे तथा हम उनके बताए हुए रास्ते पर चलते रहे।

इनकी वंशावली :—पुलकित पुत्र नरेश, हार्दिक व वंश पुत्र विनोद पुत्र महेन्द्रसिंह, अर्पित पुत्र हरीकेश, आर्यन पुत्र दिनेश पुत्र सतबीर, प्रवीण व कुलदीप पुत्र बलमत, कुनाल पुत्र प्रदीप पुत्र सुत्र रजत पुत्र धर्मसिंह, रवि पुत्र रामकुमार पुत्रान नारायण सिंह पुत्र कन्हीयाराम, पुत्र दाता राम पुत्र भागाराम पुत्र अमीया पुत्र दादा सूरत सिंह जागलान।

❑❑❑

10. गाँव जलालपुर खुर्द

यह गाँव खण्ड व जीन्द विधानसभा क्षेत्र में पटियाला चौक से हाँसी रोड पर इण्डस्ट्रीयल एरिया के साथ स्थित है। आज से करीब 150 वर्ष पूर्व इनका एक पूर्वज पहल गौत्र जो गांव डोहकी-कितलाना (दादरी) से एक सैनी (सांकला) पूर्वज को लेकर गाँव बराह खुर्द (जीन्द) में अपने भाइयों के साथ आकर बस गया। डोहकी-कितलाना गाँव के पास के राजपूत जो घोड़ों पर चढ़कर आते थे, तथा सैनियों की फसल व सब्जी को उजाड़ देते थे तथा अक्सर झगड़ा रहता था। सैनी उनसे तंग थे। पहल गोत्र के जाट उनकी मदद करते थे। कुछ समय बराह खुर्द रहने के बाद पहल गौत्र का बडेरू साथी सैनी के साथ इस जगह पड़ी बेचराग (जगह जहां घने जंगल थे) आकर रहने लग गए। महाराज जीन्द रघबीर सिंह द्वारा माल पर जमीन दिये जाने पर पहल गोत्र के जाट ने दादा खेड़ा बनाकर बेचराग गाँव में चिराग जलाकर गाँव बसा लिया। चिराग (दीये) को जलाने के नाम पर इसका नाम जलालपुर हो गया। इस गाँव के पहलों का बराहखुर्द में दुगर पाना है तथा बराह खुर्द गाँव भी काफी पहले डोहकी कितलाना से आकर बसा है। बाद में राठी गौत्र के जाट अजाय भूरान से आकर बस गये। ये पहल गोत्र की ध्यानि की संतान हैं। बाद में अन्य जातियों के लोग आकर रहने लग गए। यह गांव विक्रमी संवत् 1931 सन् 1874 में आबाद हुआ है। बाद में महाराजा जीन्द रघबीर सिंह ने जब 1875 गांवों के नामों में सुधार किया तो उस समय इसका नाम जलालपुर खुर्द कर दिया गया। वैसे इसका जलालपुर कलां के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। पैतृक गांव को कलां तथा इससे निकले गांव को खुर्द कहते हैं। लेकिन इन दोनों गांव की दूरी भी बहुत कम है तथा आपस में भाईचारा भी बढ़िया है। गांव में 484 घर, 1913 मतदाता, 2635 जनसंख्या 10 वार्ड हैं। इसमें साढ़े चार हजार बीघा बढ़िया जोत भूमि है। इसमें से करीब 350 बीघा जमीन सरकार ने इक्वायर करके यहाँ औद्योगिक नगर, 220 के.वी. बिजली घर व आज बन्द पड़ी चमड़ा (टेनरीज) फैक्ट्री के लिए अधिगृहित कर रखी है। इस गांव में जाट, सैनी, खाती, लुहार, धानक, चमार, नाई, बादी, कुम्हार, ठाकुर, ब्राह्मण, दर्जी आदि 12 जातियों के लोग मिल जुलकर रहते हैं। जाट 34 घर पहल गोत्र ढोकी-कतलाना (दादरी), 36 घर राठी अजाब भूरान (रोहतक) से 6 घर खरब (खारवात) जीन्द से, 8 घर मिठारवाल जीन्द से, 1 घर दुहन कटवाल से, 1 घर पान्नू (पुट्ठी) से 65 घर सैनी सांकला ढोकी कितलाना से, 66 घर तरोडियां, 26 घर कटारिया जीन्द से, 15 घर तंवर, 1 घर दहिया, 8 घर तुन्दवाल पुट्ठी मलंग खां से, 3 घर पार्थरन, 22 घर राकसिया, 2 घर पंवार, 2 घर खाती कलोरा से, 10

घर लुहार (हिन्दू), सामण पुट्ठी से, 20 घर धानक धर्म खेड़ी (हिसार) से 20 घर बड़गुज्जर धर्म खेड़ी से 20 घर दुग्गल घिराय से, 20 घर सरोहा, 15 घर नागर मोटा वाला (जुलाना) से, 16 घर चमार समरवाल लुहानी (भिवानी) से, 20 घर महल, 14 घर अलारियां मातन हेल (झज्जर) से 5 घर ढाण्डा, 7 घर नाई तंवर दिनोंद (भिवानी) से, 5 घर बादी रामराय से, 5 घर कुम्हार पाकिस्तान से, 2 घर ठाकुर हाट व बरसाना (जीन्द) से, 8 घर ब्राह्मण कोथ (हिसार), 3 घर दर्जी सामण पुट्ठी से आकर बसे हैं। आज गांव में एक सरपंच, 10 पंच तथा एक चौकीदार शीशपाल है। श्री तेजसिंह, श्री शीशराम सैनी, श्री बीरभान कुम्हारी, श्री कृष्ण कुमार हरिजन चार नम्बरदार हैं। श्री फतेहसिंह सैनी 95 वर्ष व श्री सूरत सिंह पूर्व सरपंच 80 वर्ष गांव में बुजुर्ग व्यक्ति हैं। गाँव का सबो बड़ा जमींदार चौ० मुंशीराम था।

गाँव की पंचायत का विवरण वर्ष 1952 से आज तक

1. श्री कलमसिंह पंच, श्री दयाराम सैनी पंच, श्री मामन चमार पंच ये तीनों पंच रहे तथा गांव ईक्कस के साथ पहली संयुक्त पंचायत थी, उस समय ईक्कस का सरपंच चौ० जयलाल ढुल था।

2.	चौ० सूरतसिंह पुत्र श्री अमर सिंह	जाट
3.	चौ० कृपा राम सैनी पुत्र श्री नत्थूराम सैनी	सैनी
4.	चौ० कृपा राम सैनी पुत्र श्री नत्थूराम सैनी	सैनी
5.	चौ० कृपा राम सैनी पुत्र श्री नत्थूराम सैनी	सैनी
6.	श्री जगदीश सांकला पुत्र श्री छाजूराम	सैनी
7.	श्री रतन सिंह पुत्र श्री मातूराम	सैनी
8.	श्री जिलेसिंह पहल पुत्र श्री अमीलाल पहल	जाट
9.	श्री सूरतसिंह पुत्र श्री अमरसिंह	जाट
10.	डॉ० ओमप्रकाश पहल पुत्र श्री सिधराम पहल	जाट
11.	श्री तेजासिंह पुत्र श्री ताराचन्द पहल	जाट
12.	श्रीमती सन्तरो देवी पत्नी श्री हवासिंह	धानक
13.	श्री बारूराम पुत्र श्री दयाराम दहिया	सैनी
14.	श्रीमती बीरमती पत्नी श्री आजाद सिंह	धानक
15.	श्री ज्ञानसिंह सैनी पुत्र श्री केहर सिंह कटारिया	सैनी

गाँव में चौ० कलमसिंह की छोटी ईंटों की हवेली सबसे पहले बनी थी।

गाँव के गणमान्य व्यक्ति व अधिकारीगण

1. डॉ० ओमप्रकाश पहल पूर्व सरपंच एवं पूर्व जिला प्रधान भाजपा प्रभारी सोनीपत लोकसभा, सदस्य कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड
2. स्व० चौ० जयचन्द सैनी समाज सेवी एवं दानवीर
3. डॉ० रजन सिंह खरब, एम.बी.बी.एस. सुपुत्र श्री सज्जन सिंह सु० श्री कलम सिंह
4. डॉ० पंजक सैनी, बी.ए.एम.एस., प्राईवेट हस्पताल पटियाला चौक, जीन्द
5. श्री आजाद सिंह राठी, एस.डी.ओ.
6. श्री राजेन्द्र राठी, लोक इंस्पैक्टर रेलवे, प्रधान जीन्द जोन
7. श्री सतीश खनगवाल ऑडिट ऑफिसर, चण्डीगढ़

गाँव में मिडल स्कूल, सरस्वती सी० सै० स्कूल प्राईवेट, गैस गोदाम, फैक्ट्रियां, 4 मन्दिर, 2 चौपाल, एक अम्बेडकर भवन, पशु हस्पताल, 2 तालाब, 3 आंगनबाड़ी केन्द्र, 90 प्रतिशत घरों में शुलभ शौचालय, युवा समाज सुधार क्लब, फिरनी पक्की, सभी गलियां पक्की, मकान पक्के व शहरों वाली सुविधाएँ। 220 के.वी. पावर हाउस, पैट्रोल पम्प, बाला जी का मन्दिर जिसमें लोग दूर-दूर से मन्नत मांगने आते हैं। गाँव के पुराने पंचायती जिन्हें लोग नौगामा में जानते थे चौ० मन्शाराम, चौ० थम्बूराम, चौ० अमीलाल, चौ० ताराचन्द, चौ० श्योदयाल, चौ० जयचन्द सैनी, चौ० सिंघराम, चौ० कलमसिंह, चौ० उमर सिंह नम्बरदार आदि रहे हैं। आज के पंचायतियों में चौ० सूरत सिंह पूर्व सरपंच, डॉ० ओमप्रकाश पहल पूर्व सरपंच, चौ० शेरसिंह राठी, चौ० ध्यान सिंह, चौ० मोहन प्रकाश सैनी और बारू राम सैनी, जिले सिंह, रायसिंह सैनी, मा० रतन सिंह आदि हैं।

गाँव की जमीन काफी उपजाऊ है। लोग मन लगाकर खेती व सब्जी उगाने का काम करते हैं। मेहनत करके कमाते हैं तथा खूब मजे से अच्छा खाते है। लोगों का रहन-सहन अच्छा है। थोड़ी जमीन होने पर भी गेहूं एक एकड़ में 60 मन व जीरी 80 मन तक पैदा कर देते हैं। जीन्द की सब्जी मण्डी में गाँव से काफी मात्रा में सब्जी पहुंचती है। पहले गाँव में आर्य समाज का काफी प्रभाव था। गाँव के लोगों की शहर में भी कई दुकाने हैं। गाँव का भाईचारा बढ़िया है। लोग मिल-जुलकर रहते हैं।

चौ० जयचन्द कटारिया (सैनी)

ऐसे बिरले ही हिन्दू लोग हैं जो अपने परिवार से ज्याद समाज, गरीबों के उत्थान तथा गऊसेवा करना अपने जीवन का उद्देश्य मानते हैं। उनमें से एक है चौ० जयचन्द सैनी। आपका जन्म एक आर्यसमाजी विचारों से युक्त परिवार में माता श्रीमती पारो देवी एवं पिता चौ० चुन्नी लाल सैनी (एक साधारणा किसान के घर) छोटे से गांव जलालपुर खुर्द में वर्ष 1922 में हुआ। आपके पिता जी सामाजिक पुरुष थे। वह गाँव में पढ़े लिखे थे। गाँव में विवाह टेना, न्यौंदा आदि लिखा करते थे तथा रात के समय गाँव की चौपाल में अनपढ़ों को पढ़ाते भी थे। आपकी माता जी आपको 14 वर्ष की आयु में छोड़कर चली गई। आपकी शिक्षा कक्षा छः तक जीन्द शहर में हुई। छोटी आयु में आपके ऊपर परिवार का सारा बोझ आन पड़ा क्योंकि आपके पिता जी बीमार रहने लग गए थे। आपके पास 7 एकड़ भूमि थी बाद में आपने साढ़े छः एकड़ भूमि और खरीदी तथा अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए खेती के साथ-साथ गाँव में ट्रंक पेटी, करियाने की दुकान भी चलाई। आपका विवाह छोटी आयु में रोहतक के चौ० सीबू राम सैनी की पुत्री भरतो देवी के साथ हो गया। इन दोनों में आपसी प्यार बहुत था। इसी कारण यह अपनी पत्नी को सुभद्रा कहा करते थे। भरतो देवी धार्मिक विचारों की महिला थी तथा जो अतिथि सत्कार में सदैव तत्पर रहती थी। इनकी कोख से तीन पुत्र ब्रह्म प्रकाश, मोहन प्रकाश, शिव प्रकाश तथा चार कन्याएं कल्लयाणी (जो छोटी सी आयु में बीमारी के कारण चल बसी) शकुन्तला, हर्ष व वन्दना पैदा हुई। इन्होंने अपने सभी बच्चों को आर्य संस्कृति से सम्बन्ध रखने वाली संस्थाओं में पढ़ाया। इनके रिश्ते बढ़िया एवं खानदानी परिवारों में किए हैं। यह संयोग ही है कि इनकी तीनों पुत्र वधुओं के नाम निर्मला ही हैं। इन्होंने अपनी अनपढ़ पत्नी को पढ़ना लिखना सिखाया। वह अखबार पढ़ लेती हैं।

आप आर्यसमाज की विचारधारा से जुड़े होने के कारण ब्रह्मप्रकाश को गुरुकुल झज्जर में तथा मोहन प्रकाश व शिव प्रकाश को गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शिक्षा दिलवाई। आज आपके तीनों बेटे अपने पांवों पर खड़े हैं तथा बढ़िया कारोबार कर रहे हैं। आप हर रविवार को गाँव जुलानी के पं० हरनारायण दास जी को बुलाकर हवन करवाया करते थे। आप दोनों समय वैदिक सन्ध्या करके भोजन करते थे तथा आर्यसमाज के हर कार्यक्रम में जाते थे। इसी कारण आपको लोग महाशय जी के नाम से पुकारते थे।

इन्होंने बड़ी मेहनत करके लोगों से पैसा इकट्ठा करके गांव में स्कूल भवन बनवाया और कक्षा पाँच तक का सरकारी स्कूल गाँव में चालू करवाया। आपने बाद में पटियाला चौक पर कपड़े की दुकान चलाई जो आज कल आपका बड़ा बेटा ब्रह्म प्रकाश चला रहा है। मोहन प्रकाश के साथ उसका पुत्र दीपक मैन बाजार में मै० सैनी इलैक्ट्रिक की दुकान चलाता है। शिव प्रकाश ने डी. फार्मा पास करने के बाद पटियाला चौक पर दवाइयों की दुकान चला रखी है। इनका बेटे डॉ० पंकज यही पर हस्पताल है। आप बचपन से गऊभक्त रहे हैं। आपने रेलवे फाटक हांसी पर अपने प्लाट में एक विकलांग गऊशाला बनाई जिसमें 20-25 गऊओं को रखने की जगह है। इसकी देखरेख जब तक आप जीवित रहे खुद करते थे। अब भी यह कार्य आपके पुत्र करते हैं। आपने 12 सितम्बर 1976 में सैनी कॉलेज रोहतक में पांच हजार, कन्या सैनी स्कूल रोहतक, सैनी धर्मशाला कुरुक्षेत्र के इलावा अन्य संस्थाओं में दिल खोलकर दान दिया। बाद में पता चला कि आपने काफी जगह गुप्त दान भी दिया। आप कई धार्मिक संस्थाओं के पदाधिकारी रहे हैं। जब आप सुबह घर से कपड़े की दुकान पर आते थे तो घर से 10-15 भिखारियों के लिए खाना लेकर आते थे तथा भूखों को अपने हाथों से खाना देते थे। आप अपने बच्चों को साढ़े 13 एकड़ जमीन तथा 3 दुकानें अपनी मेहनत के बल पर बना कर दी। आप वर्ष 2000 में कुछ बीमार रहने लग गए, सन् 2002 में आप अधरंग की चपेट में आ गए और दिनांक 30 नवम्बर 2005 को भरा-पूरा परिवार छोड़कर चले गए। इस परिवार में पीढ़ियों से देशभक्ति की आस्था रही है। आपकी मृदु व्यवहार, कठिन परिश्रम, जन सेवक गऊ प्रेमी तथा उदारता के कारण क्षेत्र के लोग याद करते हैं। मैं अन्त में भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दे तथा परिवार उनके बताए रास्ते पर चलता रहे।

वंशावली : निखलेश पुत्र रवि प्रकाश, पुत्र ब्रह्म प्रकाश, अनिरूद्ध पुत्र दीपक, पुत्र मोहन प्रकाश, डॉ० पंकज, करण पुत्र शिव प्रकाश सुपुत्रान चौ० जयचन्द सुपुत्र श्री चुन्नीलाल पुत्र श्री पराग पुत्र श्री राजू पुत्र श्री मन्शाराम पुत्र मोहन राम पुत्र हारजी राम पुत्र श्री नत्थाराम पुत्र श्री मोटा राम पुत्र श्री धर्मराम पुत्र श्री रूधाराम पुत्र श्री दीपराम पुत्र श्री लालाराम पुत्र श्री शालाराम पुत्र श्री भीरू राम पुत्र श्री लखूराम पुत्र श्री लट्टूराम पुत्र श्री पच्छाराम पुत्र श्री कालूराम (कटारिया) सैनी।

(श्री मोहन प्रकाश सैनी के सौजन्य से)

11. गाँव बहबलपुर

आर्य वीरों की धरती ग्राम बहबलपुर खण्ड जीन्द विधान सभा क्षेत्र जुलाना जीन्द मुख्यालय से मात्र 10 किलोमीटर की दूरी पर गाँव बीबीपुर से पूर्व दिशा में लिंक रोड पर है। इस गाँव में कई विशेषताएँ हैं। इसके नामकरण के बारे में चौ० बलवीर सिंह दूहन पूर्व चेयरमैन ब्लॉक समिति जीन्द बताते हैं कि जब यह गाँव बसा तब राजा जीन्द ने गाँव की कोई मदद नहीं की और ना ही गाँव वालों ने राजा से मांगी। यह गाँव अपने बल पर बसा। इस कारण इसका नाम बलपुर पड़ गया जो बाद में बलपुर से बहबलपुर हो गया। आज से 150 वर्ष पूर्व विक्रमी संवत् 1922 सन् 1866 ई० में मुखराम दूहन नम्बरदार कटवाल से, चौ० धनीराम अहलावत नम्बरदार डीघल से व चौ० सदाराम सैनी (लाठर) नम्बरदार अहर-कुराना से आकर बसे थे। जाट, दूहन, चमार, पण्डित कटवाल से, छिक्कारा जुआ-माहरा से, बाल्याण महलाना से, अहलावत डीघल से, सहरावत किला जफरगढ़ से, सैनी (लाठर) अहर कुराना से, कटारिये जुआ-माहरा से, टकोरिये टिटौली से, नाई बड़ा भैण से, लोहार (हिन्दू) बुआना से आकर रहने लग गए। कुम्हारों के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं हुई है। आज गाँव में जाट, सैनी, पण्डित, लुहार (हिन्दू), कुम्हार, धानक, चमार, नाई सभी मिल जुलकर रहते हैं। गाँव की जनसंख्या 1780, घर 422, मतपदाता 1452 है। गाँव में जोत भूमि 6 हजार बीघा, 4 हजार बीघा गाँव किनाना से, 750 बीघा बिसनपुरा से तथा 150 बीघा जमीन किशनपुरा से खरीद रखी है। अब कुल जोत भूमि 10900 बीघे है। जमीन उपजाऊ है। जमीन में सिंचाई राजबाहा नं० 7 व नलकूपों से होती है। गाँव के लोग बहुत मेहनती हैं। पहले इस गाँव का छयोरो वाली (पुलियों का समूह) बैलों वाली, पहलवानों वाली, कुओं वाली बहबलपुर भी कहते थे। कुओं से खेती, अच्छे बैलों का शोक, काफी पहलवान हुए, बहार से पुलिया लाकर छयोर धरते थे। वर्ष 1934 में 8-10 कुएं खोदे गए। ऊंट रहटों से पानी सिंचाई होती थी क्योंकि नहर का पानी कम था। चौ० शेरा व चौ० बलवीर सिंह चेयरमैन गाँव के बड़े जमींदार हैं। गाँव में एक सरपंच 9 पंच चार नम्बरदार (श्री रणबीर सिंह दूहन, श्री ईश्वर सिंह अहलावत, श्री विनोद सैनी लाठर व श्री परमानन्द लुहार है।) इस गाँव में 48 वर्ष से ग्राम पंचायत का चुनाव सर्वसम्मति से किया जाता है। यह भी एक रिकार्ड की बात है। सामूहिक कार्यों के लिए पूरा गाँव एक सूई के नाके में से निकल जाता है। आज गाँव में चौ० कपूर सिंह दूहन पुत्र श्री सल्लाराम 92 वर्षीय सबसे बड़े बुजुर्ग हैं।

गाँव में अब तक बनी पंचायत

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	जाति
1.	श्री रणसिंह	श्री हलासा	जाट
2.	श्री मंगलीराम	श्री बिहारी लाल	जाट
3.	मा० रामप्रसाद	श्री हरजस	जाट
4.	श्री हरद्वारी लाल	श्री उदमीराम	सैनी
5.	श्री बलवीर सिंह	श्री दीवान सिंह	जाट
6.	श्री बलवीर सिंह	श्री दीवान सिंह	जाट
7.	श्री करतार सिंह	श्री शेरसिंह	जाट
8.	श्री ओंकार	श्री जागेराम	जाट
9.	मा० रामप्रसाद	श्री हरजस	जाट
10.	श्री अजीत सिंह	श्री होशियार सिंह	सैनी
11.	श्रीमती नत्थो देवी	पत्नी श्री लालचन्द	सैनी
12.	श्री रामानन्द	पुत्र श्री चन्दगीराम	जाट
13.	श्रीमती सुनीता	पत्नी श्री दिलबाग सिंह	लुहार
14.	श्री देवेन्द्र दूहन	श्री मेहर सिंह	जाट

गांव के पुराने पंचायती : चौ० मनसाराम, चौ० मंगली राम, चौ० शेरसिंह, चौ० हरद्वारी सैनी, मा० रामप्रसाद, चौ० नफेसिंह बाल्याण, चौ० धनसिंह आदि हुए हैं।

नये पंचायतियों में बलबीर सिंह पूर्व चेयरमैन, चौ० रामानन्द पूर्व सरपंच, चौ० सुरेश बाल्याण, चौ० लालचन्द सैनी, चौ० कर्मबीर प्रधान, चौ० समुन्द्र सिंह, चौ० रामेश्वर छिक्कारा, चौ० परमानन्द नम्बरदार, चौ० सोहन सैनी (लाठर), चौ० संजीव दूहन व चौ० जसबीर अहलावत आदि हैं।

चौ० मुखलाल नम्बरदार की हवेली काफी बड़ी व पुरानी है जो छोटी ईंटों की बनी हुई है। चौ० धनसिंह ने गाँव में सबसे पहले कुआँ खोदा था। इस गाँव में कभी झगड़ा नहीं हुआ और ना ही किसी भी प्रकार का केस है। गाँव में कभी सांग नहीं होने दिया गया। यह गाँव पूरा का पूरा आर्यसमाजियों का गांव माना जाता है। यहाँ पर कीचड़, कोरड़ों से होली नहीं खेली जाती। इस गाँव में 4 चौपाड़, एक दादा खेड़ा, हाई स्कूल, हर गली पक्की व नालियों, फिरनी पक्की, आंगनवाड़ी केन्द्र, पशु हस्पताल, नहरी पानी की डिग्गी, हर घर में पानी का कनैक्शन, 80 प्रतिशत घरों में शुलभ शौचालय, युवा आर्यसमाज संगठन है जो पिछले 26 सालों से हर रोज यज्ञ हवन करता है। स्व० प्रतापसिंह शास्त्री आर्यसमाज के प्रधान रहे हैं। गाँव में किसी भी प्रकार का नशा व

अन्य बुराइयां नहीं हैं। चौ० रामानन्द, चौ० सुधन सिंह, चौ० प्रेमसिंह, चौ० मुन्शीराम नौगामा के नामी पहलवान हुए हैं। गाँव का युवा मण्डल बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ, भ्रूण हत्या, नशा खोरी, चरित्र निर्माण आदि पर प्रचार करता है। श्रीमती सुभाषिणी देवी सुपुत्री भगत फूल सिंह आर्य इस गांव की बहू थी, जिनके पति स्व० पण्डित अभिमन्यु जी वर्ष 1931 में गुरुकुल झज्जर में अध्यापक व समाज सुधारक रहे हैं। इस गांव में वर्ष 1928 में चार क्लास तक का सैनी प्राईवेट स्कूल शुरू किया जो बाद में सरकारी प्राईमरी स्कूल बन गया।

गाँव के गणमान्य, सम्मानित व सरकारी अधिकारी

1. पं० अभिमन्यु दूहन समाज सेवी सबसे पुराने अध्यापक (1931)
2. श्री रतनसिंह दूहन, स्वतन्त्रता सेनानी (आई.एन.ए.)
3. पदम्श्री सुभाषिणी देवी सुपुत्री अमर शहीद भक्त फूलसिंह मलिक
4. चौ० मनसाराम दूहन, एम.एल.सी., रियासत जीन्द, सदस्य प्रजा मण्डल
5. चौ० रणसिंह दूहन समाज सेवी
6. मा० रामप्रसाद अहलावत पूर्व सरपंच
7. चौ० हरद्वारी सैनी, पूर्व सरपंच
8. चौ० बलवीर सिंह दूहन, पूर्व चेयरमैन व पूर्व सरपंच
9. प्रो० सतबीर सिंह दूहन, होटल उद्यमी दिल्ली, दानवीर एवं समाजसेवी
10. श्री विनोद दूहन, आई.पी.एस.
11. पं० राजकुमार पुत्र पं० गोपीराम उद्योगपति फरीदाबाद
12. प्रो० इन्द्रसिंह अहलावत, असिस्टेंट प्रोफेसर (सेवानिवृत्त)
13. चौ० नरेन्द्र दूहन, आबकारी व कराधान अधिकारी (सेवानिवृत्त)
14. चौ० राजसिंह लाठर (सैनी) बैंक मैनेजर (सेवानिवृत्त)
15. चौ० सुरेन्द्र सिंह, ए.डी.ओ. शुगर मिल, जीन्द
16. चौ० सुरेन्द्र दूहन, मैनेजर लैंड मोर्टगेज बैंक
17. चौ० भूपेन्द्र सिंह दूहन, जिला उद्यान अधिकारी, फतेहाबाद
18. चौ० कर्मवीर दूहन वकील, प्रधान काठ मण्डी, जीन्द
19. श्रीमती कमलेश दूहन, असिस्टेंट प्रोफेसर रा०मा० विद्यालय, हिसार
20. श्रीमती डॉ० अमृता सिंह, एम.बी.बी.एस., एम.डी., आई.ए.एस.
21. श्रीमती सरला दूहन, असिस्टेंट प्रोफेसर, महिला विश्वविद्यालय, खानपुर
22. चौ० जयप्रकाश दूहन, डीपीई (सेवानिवृत्त)

23. चौ० जगजीत सिंह दूहन, सीनियर इन्जीनियर रिफाईनरी पानीपत
24. श्रीमती मोनिका रानी, असिस्टेंट प्रोफेसर, कॉलेज ऑफ एजुकेशन खानपुर कलां
25. श्रीमती सरला दूहन, रीडर, महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां
26. डॉ० हरदीप बाल्याण, एम.बी.बी.एस. पुत्र श्री ऋषिपाल बाल्याण
27. चौ० ऋषिपाल, प्रधान शू-मर्चेन्ट यूनियन जीन्द एवं
    पूर्व प्रधान वैश्य पॉलीटैक्नीक कॉलेज, रोहतक

मैं बहबलपुर को समाज सुधारक, प्रगतिशील, मेहनती, आर्यसमाजी मेल मिलाप, भाईचारा कायम रखने वाला गाँव मानता हूँ। मेरे नौगामा के अन्य गांवों के भाइयों को इस गांव से प्रेरणा लेनी चाहिए।

पदम्श्री सुभाषिणी देवी आचार्या

दुनिया में आना-जाना तो लगा ही रहता है। हर इन्सान जन्म लेता है और मर जाता है। जन्म लेना और मर जाना कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात यह है कि इस जीवन को ऐसा जीओ कि आपका जीवन दूसरों के लिए आदर्श बन जाए। लेकिन कुछ बिरले ही के जीवन का मुख्य लक्ष्य है कि जब तक ये जियेंगे समाज सेवा करते रहेंगे। ऐसी ही एक हस्ती हैं पदम्श्री सुभाषिणी देवी आचार्या। इनका जन्म भगत फूलसिंह ग्राम लाखु बुआना में पटवारी पद पर कार्यरत के घर माता लक्ष्मी देवी की कोख से 15 अगस्त 1914 में पहली सन्तान के रूप में हुआ, जिसका नाम सुभाषिणी रखा गया। जिसका अर्थ है अति सुन्दर भाषण करने वाली बालिका। इनकी माता धार्मिक विचारों की महिला थी। उनके सद्गुण आपको विरासत में मिले। सुभाषिणी के जन्म पर वह सब खुशियाँ मनाई गई जो कि एक गृहस्थ के यहाँ पुत्र जन्म के अवसर पर मनाई जाती हैं। जब ये केवल ढाई वर्ष की थी तब इनकी माता श्रीमती लक्ष्मी देवी का प्लेग की बीमारी के कारण स्वर्गवास हो गया। अत: आपका पालन-पोषण आपकी सौतेली माता धूपकौर (जो आपके ताऊ की पत्नी थी जिसने आपके ताऊ के देहावसान के बाद आपके पिता जी के साथ पुन: विवाह कर लिया था।) ने किया। धूपकौर की कोख से एक पुत्री गुणवती का जन्म हुआ। आपके पिता जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रभाव के कारण पटवारी की नौकरी छोड़कर गुरुकुल खोलने का मन बनाया। इनके पिता जी ने 20 मार्च 1920 को घर परिवार त्याग कर ग्राम

भैंसवाल के बीहड़ जंगल में गुरुकुल की स्थापना की। आपकी पहली पढ़ाई गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ और उसके बाद गुरुकुल देहरादून से अति उत्तम शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहां से विद्याधिकारी नामक परीक्षा उत्तीर्ण की। आपके पिता जी ने सन् 1939 ई० में खानपुर कलाँ में एक प्राईमरी कन्या स्कूल की स्थापना की, जो आगे चलकर गुरुकुल के रूप में विख्यात हुआ। आपका विवाह संस्कार 23 जून, 1931 में ग्राम बहबलपुर (जीन्द) निवासी पं० अभिमन्यु जी के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। उस समय पं० अभिमन्यु जी गुरुकुल झज्जर के मुख्याधिष्ठाता पद पर थे। इनके पिता जी ने यह ने यह शर्त रखी कि विवाह के बाद दोनों कन्या गुरुकुल खानपुर कलां का संचालन करेंगे। सन् 1942 में भक्त जी की मृत्यु के बाद पं० जी ने प्रतीज्ञा करते हुए कहा कि गुरुकुल को मैं चलाऊंगा। पं० जी व सुभाषिणी जी ने अथक परिश्रम करके गुरुकुल को चलाया। उनका सारा जीवन गुरुकुल की सेवा में व्यतीत हुआ। पं० जी की मृत्यु 21 अगस्त 1991 में हुई। आप सन् 1934 में कन्या पाठशाला (भक्ति आश्रम) जीन्द में मुख्याध्यापिका के पद पर भी रही। आपकी कमला और विजया नामक दो पुत्रियाँ हैं। किसी भी संस्था के उत्तम संचालन के लिए धन की सदा आवश्यकता बनी रहती है। गुरुकुल की व्यवस्था के लिए आपको धन की चिन्ता बनी रहती थी। आप अपने पति पं० अभिमन्यु के साथ धन संग्रह हेतु हर बड़े सेठ व आर्यसमाज की संस्थाओं में जाकर धन इकट्ठा किया। हर वर्ष भवन निर्माण करवाती रही चाहे कई बार धन राशि ब्याज पर भी लेनी पड़ी। सन् 1967 ई० में श्री भगत फूलसिंह महिला महाविद्यालय, सन् 1968 ई० में श्री भगत फूलसिंह कॉलेज ऑफ एजुकेशन, वर्ष 1966-67 ई० में उत्तम दवाई आदि का निर्माण करने के लिए सुभाषिणी जी ने कन्या गुरुकुल फार्मेसी का निर्माण, सन् 1973 में श्री माडूसिंह मैमोरियल आयुर्वेदिक महाविद्यालय की स्थापना, सन् 1984 में श्री भगत फूलसिंह महिला तकनीकी संस्थान, वर्ष 2003 में पदम्श्री सुभाषिणी देवी विधि महाविद्यालय की स्थापना के साथ सभी संस्थाओं के मुख्य द्वारों का भी निर्माण करवाया। परम आदरणीय सुभाषिणी जी ने संस्था के संचालन के साथ-साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी आन्दोलन, आर्यसमाज द्वारा संचालित प्रमुख आन्दोलनों में जैसे शराबबन्दी आन्दोलन, गोहाना बन्दी आन्दोलन एवं नारी उत्थान सम्बन्धित कार्यक्रमों में भाग लिया। विभिन्न संस्थाओं ने इन्हें समय-समय पर प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्नों द्वारा सम्मानित किया। 3 अप्रैल, 1976 ई० में भारत के आदरणीय महामहिम राष्ट्रपति श्री फखरूद्दीन अहमद ने उन्हें समाज सेवा के कारण सम्मानार्थ 'पदमश्री' से विभूषित किया। मेरे विचार से यह

हरियाणा की पहली महिला हैं जिसे इतने बड़े सम्मान से नवाजा गया हो। उपरोक्त जानकारी पण्डित जी के भतीजे श्री जे.पी. दुहन रिटायर्ड डी.पी.ई. द्वारा मुझे बताई गई है। इसके बाद पूर्व मुख्यमन्त्री चौ० भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के कार्यकाल में गुरुकुल खानपुर को पहले यहां रिजनल सैंटर दर्जा दिया गया। बाद में श्री फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय का दर्जा दे दिया गया है, जो हरियाणा का पहला महिला विश्वविद्यालय है। चरित्र नायिका लगभग एक माह बीमार रहने के बाद दिनांक 10 मार्च, 2003 को प्रात: 8 बजे हृदय गति अवरोध से यह महान आत्मा इस नश्वर संसार से सदा के लिए विदा हो गई। शेष रह गई उनकी गौरवमयी यशोगाथा। उनके यहां न रहने से होने वाले नुकसान की क्षतिपूर्ति होनी असंभवहै। उनके निधन से समाज व नौगामा खाप को बड़ा धक्का लगा है। उन्होंने समाज सुधार का वह महान् कार्य गुलाम भारत में कर दिखाय जो आज आजाद भारत में भी करना दुश्कर है। उन्हें मैं कोटि-कोटि नमन करता हूँ। धन्य वह माँ जिसने ऐसी पुत्री को जन्म दिया।

नोट : चौ० अभिमन्यु दुहन जाति से जाट थे, वे उस समय के बड़े विद्वान् और गुरुकुल से उच्च शिक्षा प्राप्त थे। उनकी विद्वत्ता के कारण लोग उन्हें पण्डित जी कहा करते थे।

श्री प्रताप सिंह शास्त्री

ऐसे बिरले ही लोग होते हैं जो अपने परिवार से भी ज्यादा समाज व शिक्षा के उत्थान को अपना जीवन का उद्देश्य मानते हैं। उनमें से एक है प्रताप सिंह शास्त्री जी। आपका जन्म सन् 1923 में गांव बहबलपुर के एक आर्यसमाजी विचारों से युक्त परिवार में एक साधारण किसान चौ० बिहारी लाल दूहन आर्य के घर हुआ। आपके पिता एक सामाजिक व्यक्ति थे। श्री बिहारी लाल जी गाँव में पशुओं का देशी दवाइयों से इलाज करते थे, इसलिए लोग उन्हें भगत जी कहते थे। आपके ऊपर आपके बड़े भाई मंगलीराम का विशेष प्रभाव पड़ा। आपका बचपन गाँव की गलियों में बड़े लाड प्यार से गुजरा। आपकी माता भी शुद्ध आर्य विचारों की महिला होने के कारण आप पर उनका भी गहरा प्रभाव पड़ा। आपने प्राईमरी तक की शिक्षा गाँव में प्राप्त करने के बाद आगे की पढ़ाई गुरुकुल मटिण्डू (सोनीपत) में की। बाद पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से प्रथम श्रेणी में शास्त्री व प्रभाकर पास की। इनका विवाह गुरुकुल पढ़ाई के दौरान आर्य परिवार गाँव रोहणा

(रोहतक) के चौ० दफेदार नियादर सिंह दहिया की सुकन्या कृष्णा देवी से हो गया। दहिया साहिब को द्वितीय विश्वयुद्ध में सराहनीय कार्य करने के कारण एक मुरब्बा जमीन मिटंगुमीर (पाकिस्तान) में मिली थी, जिसका स्थानान्तरण भारत पाक बंटवारे के बाद हसनपुर (रोहतक) में हो गया। श्रीमती कृष्णा देवी की कोख से एक पुत्र कर्मबीर सिंह व एक पुत्री कुन्ती देवी पैदा हुई। इन्होंने अपने दोनों बच्चों को अच्छे संस्कार देकर उच्च शिक्षा दिलवाई एवं उनके रिश्ते बढ़िया खानदानी एवं आर्यसमाजी घरों में कर रखे हैं। इनके पुत्र कर्मबीर दूहन ने एम.ए., एल.एल.बी. कर अपने पारिवारिक व्यवसाय को काठमण्डी जीन्द में संभाले हुए हैं। आप 20 वर्ष तक काठमण्डी जीन्द के प्रधान व हरियाणा टिम्बर मर्चेन्ट एसोसिएशन के जनरल सैक्रेटरी रहे हैं। यह समाज की अन्य सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। शास्त्री जी ने वर्ष 1944 में जाट हाई स्कूल जीन्द में भाषा अध्यापक के रूप में सेवा शुरू की जो उस समय रेलवे रोड पर जहां अब कन्या सी० सै० स्कूल है पर थी, बाद में नये भवन नहर के पास बने भवन में चले गए तथा भवन बनाने में आसपास के गाँव में दिन रात लगाकर चन्दा लाने में लग गए। सारा जीवन आर्यसमाज से जुड़े रहे, आर्यसमाज जींद जंक्शन के कई वर्ष तक प्रधान व सचिव रहे। हिन्दी आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया, एक माह पटियाला जेल में भी रहे, देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया। वर्ष 1957 में आपने जुलाना विधानसभा से आजाद प्रत्याशी के तौर पर चुनाव लड़ा और अपने प्रतिद्वंद्वी को कड़ी टक्कर दी। ये कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े रहे हैं। बच्चों की छुट्टियों के दौरान युवा चरित्र निर्माण शिविर लगाते हैं। वर्ष 1982 में सेवानिवृत्त होने के बाद दो वर्ष तक नि:शुल्क पढ़ाते रहे। सादा सरल व्यवहार मिलनसार व अनुकरणीय जीवन रहा है। हमेशा सच बोलना, साफ-साफ बात कहना, निडर व निर्भीकता इनके विशेष गुण थे। इस परिवार का ईमानदारी का रिकार्ड रहा है। यह परिवार पूरे क्षेत्र का एक सम्मानित व प्रतिष्ठित परिवार है। इनके पौत्र विक्रमजीत व विश्वजीत सिंह ने इंग्लैण्ड में कम्प्यूटर इंजीनियर कर वहीं पर नौकरी कर रहे हैं। 27 सितम्बर, 2005 को 82 वर्ष की आयु में आपका निधन हो गया। उनके अनुकरणीय जीवन जिस पर आज भी परिवार उनके बताए व सुझाए रास्ते पर चल रहा है व उनका ऋणी है। मैं अन्त में भगवान से इनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ।

(इनके बेटे कर्मबीर सिंह के सौजन्य से)

दानवीर प्रो० सतबीर सिंह दूहन

कौन किसके करीब होता है, कौन किसका नसीब होता है।
जुड़ जाते हैं रिश्ते नाते, जहां जिसका नसीब होता है।।

नौगामा खाप देवभूमि पर एक लाल सतबीर सिंह दूहन का जन्म 1 नवम्बर, 1948 को गाँव बहबलपुर में चौ० फतेहसिंह एवं माता लक्ष्मी देवी के घर हुआ। इनके पिता जी बहुत ही सरल व सीधे स्वभाव के आर्य समाजी व्यक्ति थे। श्रीमती लक्ष्मी देवी की कोख से एक पुत्र व एक पुत्री पैदा हुई। श्रीमती लक्ष्मी देवी के स्नेह और संरक्षण में इनका लालन-पालन हुआ। अकेला पुत्र होने के कारण घर में लाड़-प्यार भी अधिक मिला। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गांव के स्कूल से हुई। दसवीं की परीक्षा राजकीय उच्च विद्यालय बीबीपुर से स्नातक डिग्री राजकीय कॉलेज जीन्द से तथा मास्टर डिग्री (अर्थशास्त्र) रिजनल सैन्टर रोहतक से अच्छे अंकों से प्राप्त करके बाद 1971 में छाजूराम मैमोरियल जाट कॉलेज हिसार में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर लग गए। इस दौरान इनकी शादी गांव बालसमन्द (हिसार) के चौ० मालाराम बिसला की शिक्षित पुत्री बिमला देवी के साथ हुई। इनकी धर्मपत्नी भी पढ़ी-लिखी सुघड़ गृहिणी हैं। इनकी पत्नी को अपनी सास से धार्मिक प्रवृत्ति तथा दान व समाज सेवा की प्रेरणा मिली। इनकी कोख से दो पुत्र लोकेश व योगेश तथा दो पुत्रियां मीनाक्षी व प्रीति पैदा हुई। इन्होंने अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दिये तथा इन्हें उच्चतम शिक्षा दिलवाई। दोनों बेटों की शादी शिक्षित, सुशील तथा खानदानी परिवारों में दिल्ली में व्यवसायियों की पुत्रियों से कर दी। बड़ी बेटी मीनाक्षी की शादी श्रीमती जयवन्ती श्योकन्द (रि०) आई.ए.एस. अधिकारी एवं (रि०) प्रो० रामकुमार श्योकन्द के पुत्र यशेन्द्र श्योकन्द आई.ए.एस. के साथ तथा छोटी बेटी प्रीति की शादी पानीपत के चौ० जगवीर सिंह राणा के पुत्र जितेन्द्र राणा (आई.पी.एस.) सीनियर सुपरिडेंट पुलिस मोतीहारी (बिहार) के साथ कर रखी है। इन्होंने वर्ष 1980 में हिसार कॉलेज से त्याग पत्र देने के बाद छोटूराम किसान कॉलेज जीन्द में प्रधानाचार्य के पद पर वर्ष 1981 तक रहने के बाद स्वैच्छा से त्याग पत्र देकर अपने व्यवसाय में लग गए। रोहतक रोड पर इनकी माता लक्ष्मी देवी के नाम से लक्ष्मी नगर है तथा इसी नगर में पहले लक्ष्मी भवन में इनका निवास रहा है। जैसा नाम लक्ष्मी देवी इस प्रकार इनके व्यापार में धन-लक्ष्मी की अपार कृपा रही तथा यह अपनी माता को अपना आदर्श मानते हैं। इनके दोनों बेटा

इनके व्यसाय में अपनी पिता की खूब मदद करते हैं तथा हर काम में पूर्ण रूचि लेकर आगे बढ़ रहे हैं। आज यह देहली में होटल व्यवसाय चला रहे हैं तथा वहां पर इनका बड़ा नाम है। दान देने में मेरे नौगामा खाप में इनका कोई सानी नहीं है। जाट धर्मशाला, जीन्द, कुरुक्षेत्र, छोटूराम धर्मशाला केशवपुरम, नांगलोई, महाराजा सूरजमल शिक्षा संस्थान जनकपुरी, जाट कॉलेजी जीन्द, जीन्द शहर की गोशालाओं में लाखों रुपये दान के रूप में दिये। अभी हाल ही में गांव ईक्कस (जीन्द) में चल रहे जाट आरक्षण आन्दोलन में हमारे मामूली के अनुरोध पर एक लाख इक्यावन हजार की राशि दान में दी। यह दान देने में इतनी रूचि रखते हैं कि दिल खोल कर दान देते हैं। इनके पास कोई संस्था बिना धन लाभ लिये नहीं आई है। एक उत्साही व्यक्तित्व, समाजसेवी से राष्ट्रसेवा की ओर जनसमस्याओं के निवारण, सर्व कल्याण, अमन शान्ति में विश्वास मिलनसार, इलाके उन्नतशील कृषक, अति प्रभावशाली दानवीर हमारे मार्गदर्शक, सतत सहयोगी, कुलीन परिवार, अनेक सामाजिक संस्थाओं में नि:स्वार्थ सहभागिता। ईश्वर करे आने वाले समय में यह राजनैतिक जीवन में नई ऊंचाइयों को छूए तथा इनका परिवार खुशहाल बने। स्वास्थ्य लाभ दीर्घ आयु सुखमय जीवन व निरन्तर कामयाबी की प्रार्थना करता हूँ।

❑❑❑

12. गाँव ईक्कस

यह गाँव जीन्द हाँसी रोड खण्ड व विधानसभा क्षेत्र जीन्द में मुख्यालय से 5 किलोमीटर दूरी पर आबाद है। इसका विवरण कुरूनाथ पत्रिका के प्रथम अंक में दिया जा चुका है। इसके नामकरण के बारे में रोचक तथ्य है। जानकार व बुद्धिजीवी लोगों के अनुसार यहाँ पर काफी बड़ा जंगल था। जहाँ आज ढूढू तालाब है वहाँ पर छोटा सा तालाब (डाबडा) जिसका विवरण महाभारत में एकहंस तीर्थ के नाम से आता है। यह एकहंस तीर्थ 21वां तीर्थ है, इसलिए इसका नाम एकहंस से बिगड़ कर ईक्कस पड़ गया। पुराणों में इस तालाब को एक हंस तीर्थ के नाम से वर्णित किया गया है। इस तीर्थ में हंस तैरते रहते थे और मोती चुगकर खाते थे। स्थानीय परम्पराओं के अनुसार भगवान श्री कृष्ण गोपियों से बचने के लिए हंस के रूप में यहीं पर छुपे थे। कुछ लोगों की मान्यता के अनुसार यह तालाब (ढूढू) 21वां होने के कारण ईक्कीस से ईक्कस पड़ गया। राजा जीन्द रघबीर सिंह ने सन् 1875 में ईक्कस या एक हंस वाले गांव का नाम ईक्कस रख दिया। कुछ गाँव के लोगों के मतानुसार कि इस गांव की निकासी रामराय गाँव से है। वहां से 6 वरिष्ठ पुरुष (दादे) यहां आकर बसे। मैं यह जानकारी सही मानता हूँ। यह गाँव सन् 1843 विक्रमी संवत् 1899 ई० में बसा है। रामराय गाँव से इनके पूर्वज यहां पर मोढ़ी गाड़ कर रहने लग गए और आज 6 दादों के पाँच ठोले- 1. गूदड़, 2. भीमा, 3. डागर (नरवाण पाने से) 4. शोभाचन्द, 5. किलोली ठोले (सिम्मल पाने से)। यह गाँव ढुल गोत्र के जाटों का है। बाद में एक पुरुष बेरवाल गोत्र गांव सोरखी से इनकी ध्यानी का बस गया, इनके आज 25 घर हैं। गाँव में जाट, धानक 30, चमार 30, कुम्हार 185, तेली 5, नाई 2, पण्डित 50, लुहार मुसलमान 10, सिलगर 8, झीमर 1, मणियार 1, कुल 581 घर, वार्ड 11, मतपत्र 2189, जनसंख्या 2887 तथा साढ़े हजार बीघे उपजाऊ भूमि है। श्री जितेन्द्र (धौला), श्री अतर सिंह, श्री अमीचन्द कुम्हार, श्री राजबीर सौलगर, श्री सुलतान चमार पांच नम्बरदार व श्री रोहताश चौकीदार है। श्री आजाद सिंह पुत्र श्री रामकिशन सबसे बड़ा जमींदार है। श्री देईराम सबसे बड़ा पुरुष है तथ श्री रूपा झीमर का संयुक्त परिवार है। इस गांव में आर्यसमाज का काफी प्रभाव रहा है तथा गाँव में दादा खेड़ा मन्दिर नहीं है। कौरव-पाण्डवों का युद्ध जब समाप्ति की कगार पर था तो दुर्योधन उस युद्ध से भाग निकला था। वह अपने प्राण बचाने के लिए ढूंढू तालाब में आकर छुप गया था। पाण्डवों द्वारा दुर्योधन को इस तीर्थ में ढूंढ लिये जाने के कारण इस तीर्थ को ढूंढू तीर्थ के नाम से जाना जाता है। इस तालाब में पानी डालने के लिए चितंग नहर से एक मोगा लगा रखा

है। यह गाँव कुरुक्षेत्र के 48 कोस की परिधि में आता है तथा इसे देवभूमि मानते हैं और मृत्यु के पश्चात् फूल (अस्थियां) नहीं उठाई जाती हैं। ढूंढू तीर्थ का जिक्र है, यह स्थान पुरातात्त्विक दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है। यह तीर्थ स्थान पंजाब स्टेट गजेटरयरज खण्ड पृ० 221 पर रिकार्ड हो चुका है। यह स्थान वास्तव में जलदुर्ग था जो वाक्षय, मरू, पाषणा आदि आठ प्रकार के दुर्गों में से एक था और इस प्रकार के दुर्ग 1527 ई० तक व शायद बाद में भी रहे हैं। इस गांव में पूरे हरियाणा में मुर्गी फार्म सबसे अधिक हैं। चौ० जयलाल के पुत्रों ने मुर्गी फार्म खोलने में मुख्य योगदान दिया है। मुर्गी फार्म उद्योग को श्री जगबीर सिंह पुत्र चौ० जयलाल ने शुरू किया। जगबीर सिंह को सरकार की ओर से कर्मयोगी अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है। इस परिवार का बहुत बड़ा कारोबार गांव, अन्टा व अन्य प्रदेशों में भी है। इनकी काफी बड़ी-बड़ी हैचरियां, मुर्गी दाना फैक्ट्रियां हैं। गांव की वर्ष 1952 से आज तक की पंचायतों का ब्यौरा इस प्रकार है :-

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	जाति
1.	चौ० जयलाल ढुल (संयुक्त पंचायत जलालपुर खुर्द से 3 पंच बने)	श्री श्योराम (1952 से 1972)	जाट
2.	चौ० टेकराम	श्री हरनाथ	जाट
3.	श्री रामकिशन	श्री रिसाल सिंह	जाट
4.	श्री जयचन्द	श्री हरिसिंह	जाट
5.	श्री जयकरण	श्री दयालाल	कुम्हार
6.	श्री जयसिंह	श्री चन्द	जाट
7.	श्री रामकिशन	श्री रिसाल सिंह	जाट
8.	श्री धर्मसिंह	श्री श्योकरण	कुम्हार
9.	श्री रोहतास	श्री दीवान सिंह	जाट
10.	श्री ताराचन्द	श्री बिजेराम	जाट
11.	श्री रोहतास	श्री दीवान सिंह	जाट
12.	श्रीमती मूर्ति देवी	पत्नी श्री जयपाल	जाट
13.	श्री चाँदसिंह	श्री बनवारी	कुम्हार
14.	श्रीमती राजवन्ती	पत्नी श्री हरपाल ढुल	जाट

गांव के चिकित्सक अधिकारीगण

1. डॉ० चाँदसिंह ढुल, पूर्व डायरेक्टर पीजीआईएमएस एवं वरिष्ठ प्रोफेसर एण्ड हैड नेत्र चिकित्सा विभाग, रोहतक

2. डॉ० राजेश कुमार पुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह एम.बी.बी.एस.
3. डॉ० बलविन्दर सिंह, एम.बी.बी.एस.
4. डॉ० जगबीर सिंह ढुल, रिटायर्ड प्रोफेसर, विभागीय अध्यक्ष भौतिकी विभाग

गांव के वीर शहीद व स्वतन्त्रता सेनानी (हिन्दी आन्दोलन हैदराबाद)

1. श्री कर्मसिंह, 6 फरवरी से 18 अगस्त, 1939 तक
2. श्री सोहलू राम, 6 फरवरी से 18 अगस्त, 1939 तक
3. शहीद गंगानन्द, 6 फरवरी से 18 अगस्त, 1939 तक
4. शहीद सिपाही सूरत सिंह जाट रेजिमेंट दूसरा विश्वयुद्ध में
5. शहीद राजमल पुत्र श्योराम (1947 की मारकाट) जीन्द में।

सैनिक अधिकारी

1. श्री ओमप्रकाश ढुल, अर्जुन VSM अवार्ड, राष्ट्रपति 1988 (बास्केट बॉल) सीनियर कोच (रि०)
2. स्व० कैप्टन सुधन सिंह, पहला स्नातक (लाहौर)
3. स्व० कर्नल जयलाल ढुल
4. कर्नल राजेन्द्र सिंह ढुल
5. कर्नल यशपाल ढुल
6. मेजर संदीप सिंह ढुल

अन्य सरकारी सेवाओं में :-

गांव के करीबन 50 व्यक्ति सेना में, करीबन 150 अध्यापक, 50 पुलिस में, दो कार्यकारी अभियन्ता, 3 एम.बी.बी.एस. डॉक्टर हैं। करीबन 30 एम.बी.ए. व बी.टेक हैं।

खेल :- इस गांव के लोगों का खेलों के प्रति काफी लगाव रहा है। यहां के लोग अपने बच्चों को अच्छी खुराक के साथ चरित्र निर्माण पर भी काफी ध्यान देते हैं। गांव में आर्यसमाज का खासा प्रभाव देखने को मिलता है। स्व० मा० ओमसिंह संयुक्त पंजाब का कबड्डी टीम का कैप्टन रहा है। श्री बलवीर सिंह उर्फ सुगड़, पी.टी.आई. ओमप्रकाश पी.टी.आई., गजेसिंह पी.टी.आई., सतबीर सिंह कोच, स्व० भीमसिंह पी.टी.आई. व चन्दा सिंह पी.टी.आई. राष्ट्रीय स्तर के कबड्डी के खिलाड़ी रहे हैं। स्व० महेन्द्र सिंह मुख्य अध्यापक स्व० वेदसिंह मास्टर, मेहर सिंह, महेन्द्र सिंह रिटायर्ड लैक्चरार, राज्य स्तर के वालीबाल के खिलाड़ी हुए लड़कियों में बोती देवी पी.टी.आई., सुखवन्ती डी.पी.ई. भी राज्य स्तर की खिलाड़ी रही हैं। नये खिलाड़ियों

में श्री वीरेन्द्र प्राध्यापक, श्री सुरेन्द्र सिंह, श्री रिषी, श्री प्रदीप आदि हैं। श्री मुनीष अच्छा एथलीट है। श्री बारूराम पुत्र श्री वीर सिंह पुत्र श्री बल्लूराम सुखा मशान बच्चों का मशहूर वैद्य था। यह कार्य आजकल उसका लड़का सुरेन्द्र सिंह कर रहा है। बढ़िया भाईचारा है। कैप्टन सुधन सिंह ने सेना में रहते हुए स्कूल के कमरों की नींव रखी तथा कमरे बनने के बाद वर्ष 1927 में चार कलास तक का सरकारी स्कूल मंजूर करवा कर चालू करवाया। इसका फल यह है कि आज पूरा गांव साक्षर है तथा हर घर में लोग सरकारी नौकरियों में हैं।

गांव के प्रथम व द्वितीय क्लास अफसरों की सूची :-

1. श्री रणबीर सिंह, डिप्टी चीफ इंजीनियर (रेल मंत्रालय)
2. श्री संजीत सिंह (S.C., PWD)
3. श्री राजेन्द्र सिंह (डी.एफ.ओ.) रिटायर्ड
4. श्री जितेन्द्र ढुल सु० स्व० श्री बारूराम (कार्यकारी अभियन्ता, बिजली बोर्ड)
5. श्री दलबीर सिंह (रीजनल मैनेजर हरियाणा ग्रामीण बैंक)
6. श्री सोहन लाल गोयल (एस.डी.ओ. बिजली)
7. श्रीमती कृष्णा देवी (लैक्चरार एम.डी.यू, रोहतक)
8. श्रीमती इन्द्रा देवी (लैक्चरार, एम.डी.यू., रोहतक)
9. स्व० महेन्द्र सिंह हैडमास्टर
10. श्री वेद सिंह हैडमास्टर
11. श्री प्रताप सिंह, रिटायर्ड प्रिंसिपल
12. स्व० रूपचन्द तहसीलदार (रिटायर्ड)
13. श्री गणेशी लाल तहसीलदार (रिटायर्ड)
14. श्री पं० किशन लाल, तहसीलदार (रिटायर्ड)
15. श्री जयसिंह, तहसीलदार (रिटायर्ड)
16. श्री बनीसिंह, तहसीलदार (रिटायर्ड)
17. श्री महेन्द्र सिंह लैक्चरार स्कूल (रिटायर्ड)
18. श्री सतबीर सिंह कबड्डी कोच (रिटायर्ड)
19. स्व० चेतराम वेलफेयर अफसर
20. स्व० धर्मसिंह तहसीलदार
21. श्री राजबीर सिंह फिसरी अफसर
22. श्री जयराम लैक्चरार स्कूल

23. श्रीमती सरोज देवी लैक्चरार स्कूल
24. श्री सुरेश गोयल लैक्चरार स्कूल
25. श्री रोशन लाल छाछिया, लैक्चरार स्कूल
26. श्री जसबीर सिंह बैंक मैनेजर
27. श्री सुनील सु० श्री प्रताप सिंह बैंक मैनेजर
28. श्री दिलबाग सिंह, रेन्जर वन विभाग
29. श्री जरनैल सिंह एस.डी.ओ. दिल्ली
30. श्री ईश्वर सिंह इन्जीनियर, इंग्लैण्ड
31. श्री प्रदीप सिंह सु० श्री सतपाल इन्जीनियर अमेरिका
32. श्री कृष्ण कुमार इन्जीनियर इंग्लैण्ड
33. श्री जगबीर सिंह ढुल, संस्थापक एवं एम.डी. स्काईलार्क हैचरी ग्रुप लिमिटेड कर्मयोगी व अन्य अवार्डों से सम्मानित समाजसेवी
34. श्री सुरेन्द्र सिंह ढुल, निदेशक, स्काईलार्क हैचरीज ग्रुप बोहली तहसील सफीदों (जीन्द) दानवीर

गांव के पुराने पंचायतियों में श्री रिसाल सिंह, जयलाल, राजमल, पं० मांगेराम, श्री वीरसिंह, राजेराम, सरदारा, स्व० जयसिंह पूर्व सरपंच आदि हुए हैं। आजकल के पंचायतियों में श्री रणधीर सिंह, श्री वीरभान प्रधान, जयबीर सिंह, सत्यवान सिंह, धूपसिंह, सतबीर सिंह फौजी, सुरजीत सिंह, हरपाल सिंह, गजेसिंह, मोहित, जितेन्द्र (धौला), सतबीर कोच, मा० धज्जासिंह आदि हैं।

अन्य सुविधाएँ :- गांव की सभी गलियां पक्की दोनों तरफ नालियां बनी हैं। पशु हस्पताल, उपस्वास्थ्य केन्द्र, डाकघर, हरियाणा ग्रामीण बैंक, 100 प्रतिशत घरों में शुलभ शौचालय, तीन तालाब, युवा क्लब, जे.बी.टी. प्रशिक्षण केन्द्र, 10+2 का स्कूल, लड़कियों का हाई स्कूल, प्राईमरी स्कूल, दूरसंचार के चार टावर लगे हैं, बढ़िया उपजाऊ जमीन है।

कैप्टन सुधन सिंह ढुल

कैप्टन सुधन सिंह का जन्म 1896 ई० में चौ० तोखाराम ढुल के घर गांव ईक्कस में हुआ। इनका बचपन बड़े लाड़ प्यार से बीता। इनके दादा का नाम रामजस था, जो मेहनती किसान थे। इनका विवाह छोटी आयु में गांव नन्दगढ़ (जुलाना) की बादामो देवी के साथ हो गया। श्रीमती बादामो देवी धार्मिक विचारों की औरत थी। इन्होंने प्राईमरी की शिक्षा जीन्द रियासत के स्कूल से पास करने के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए लाहौर जाना पड़ा क्योंकि इस समय इस क्षेत्र में स्कूल नहीं थे। इन्होंने लाहौर से बी.ए. उसके बाद एल.एल.बी. अच्छे अंकों से पास करने के बाद सेना में सीधे लेफ्टीनेंट भर्ती हो गए। वर्ष 1919 में इनके घर एक पुत्र जगजीत सिंह का जन्म हुआ। 10वीं पास करने के बाद जगजीत सिंह भी सेना में भर्ती हो गया और इसकी शादी भी छोटी सी आयु में गाँव बास (हाँसी) निवासी चौ० गोपालाराम मोर की सुकन्या राजकौर से हो गई। श्रीमती राजकौन अनपढ़ जरूर थी परन्तु उनके दिल में अतिथि भाव भरा हुआ था। घर में आने वाले का पूरा आदर किया जाता था। इनकी कोख से तीन पुत्र व चार पुत्रियां पैदा हुई। इन्होंने अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दिये और अच्छी शिक्षा दिलाकर इनकी शादियां अच्छे खानदारी घरों में की। इनका बेटा राजेन्द्र सिंह वन मण्डल अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त है। उमेद सिंह बी.एस.एफ. में भर्ती होकर ट्रेनिंग लेने के बाद नौकरी छोड़कर खाद्य एवं आपूर्ति विभाग में भी नौकरी की। इस विभाग में कई वर्ष रहने के बाद यहां से नौकरी छोड़कर गाँव की राजनीति में लग गए ओर गांव की पंचायत में पंच बने। उसके बाद ब्लाक समिति के सदस्य रहने के समय राजनीति में भी जुड़कर चौ० ओमप्रकाश चौटाला का पूरा साथ दिया। सफीदों में गैस एजेंसी चलाई। अभी हाल ही में इन्होंने अपनी माता स्वर्गीया श्रीमती राजकौर के नाम से गांव के तालाब पर त्रिवेणी लगाने साथ-साथ स्कूलों एवं अन्य स्थानों पर ढाई हजार के करीब पौधारोपण किया। उसके बाद पंचकूला में मॉल बनाया, इनके बेटे राहुल ढुल का जयपुर में ज्वैलरी का शौरूम है। यह आजकल पंचकूला में ही निवास करते हैं तथा इनेलो पार्टी जिला पंचकूला के संगठन सचिव हैं। श्री दिलबाग सिंह वन रजिक अधिकारी के पद पर हैं। जगजीत सिंह सेना में सूबेदार की पैंशन लेकर गांव आ गए तथा कुछ समय बाद वह 1979 में चल बसे। सूबेदार जगजीत सिंह की दोहती सोनिया नैन गाँव कालवान (नरवाना) इस वर्ष भारतीय आयकर सेवा में चुनी गई है। कै० सुधन सिंह ने सेना में रहते हुए स्कूल के दो कमरों की नींव रखी तथा कमरे बनने के बाद वर्ष 1927 में चार क्लास तक का सरकारी स्कूल मंजूर करवा कर चालू करवाया,

इसका फल गाँव व पड़ोस के गाँवों के लोगों को भी मिला तथा आजकल यह गाँव पूरा साक्षर है तथा हर घर में नौकरी है। कै० सुधन सिंह आर्यसमाजी विचारों के व्यक्ति थे। इनका परिवार किसी भी सामाजिक, धार्मिक एवं कौमी संगठन में शारीरिक व आर्थिक तौर पर अपनी भागीदारी दर्ज कराता है। कैप्टन साहिब नौगामा खाप के प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्तियों में भी प्रथम श्रेणी के महानुभाव थे। मेजर के पद पर पदोन्नत होने के बाद हैदराबाद में ट्रेनिंग पूरी होने पर इनकी बदली संगरूर कैंट में हो गई और यह गाड़ी से संगरूर जा रहे थे। इन्होंने जाखल रेलवे स्टेशन पर गाड़ी बदलनी थी और यह रेलवे के रेस्ट हाउस में आराम करने लगे। कुछ ही देर में इनके सीने में दर्द हुआ और यह हृदय गति रूक जाने के कारण 25 दिसम्बर 1937 को इनकी मृत्यु हो गई। अन्त में मैं उस प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति दे तथा परिवार उनके बताए रास्ते पर चलें।

(इनके पोते उमेद सिंह के सौजन्य से)

चौ० जयलाल ढुल

अगर कर्म तेरे अच्छे हैं, तो किस्मत तेरी दासी है।
अगर दिल तेरा साफ है तो घर ही मथुरा-काशी हैं।।

जीन्द जिला की देवभूमि नौगामा खाप के ईक्कस गांव में इनका जन्म सन् 1920 में चौ० श्योराम नामक साधारण किसान के घर हुआ। इनकी माता का नाम धाई देवी था। चौ० श्योराम के पांच पुत्र श्री राजमल, श्री शंकर लाल, श्री दीवान सिंह, श्री चन्दूराम व सबसे छोटे जयलाल पैदा हुए। इनकी माता जी धार्मिक विचारों से ओतप्रोत तथा समाज सेवा में अहम भूमिका निभाती थी। इनका बचपन बड़े लाड़ प्यार से बीता। इनके पिता जी ने सभी बेटों को शिक्षा दिलाई तथा सभी सुख सुविधाएं उपलब्ध कराई। इन्होंने प्राईमरी शिक्षा कक्षा चार तक गाँव से इसके बाद जाट हाई स्कूल से नौंवी कक्षा पास की। पिता जी का साया सिर से उठने के कारण घर के काम में जरूरत होने पर पढ़ाई छोड़ कर खेती-बाड़ी में अपना हाथ बंटाने लग गए। इनके पिता जी उन्नत एवं आधुनिक किसान थे। युवा होते ही इनका

विवाह श्रीमती शान्ति देवी पुत्री चौ० आशाराम राठी गांव बख्ता खेड़ा (जुलाना) से हो गया। इनकी पत्नी को अपनी सास से धार्मिक प्रवृत्ति तथा दान व समाज सेवा की प्रेरणा मिली तथा इन्होंने भी समाज सेवा में अपनी अहम भूमिका निभाई। श्रीमती शान्ति देवी की कोख से तीन पुत्र ओमप्रकाश (छोटा ओम), जगबीर सिंह, सुरेन्द्र सिंह व चार कन्याएं पैदा हुई। इन्होंने अपने सभी बच्चों को शिक्षित करके उनके रिश्ते अच्छे खानदानी घरों में कर रखे हैं। इनका एक जमाई चौ० जसबीर सिंह देशवाल गांव अन्टा सफीदों से विधायक है। इनका बड़ा बेटा ओमप्रकाश सेवानिवृत्त पी.टी.आई. है जो अपने समय का कबड्डी का नेशनल स्तर का खिलाड़ी छोटा ओम के नाम से मशहूर है। आजकल यह छत्तीसगढ़ में कृषि का बहुत बड़ा फार्म लेकर खेती बाड़ी का काम करता है। दूसरा लड़के जगबीर सिंह ने कई वर्ष पहले गांव में मुर्गी फार्म का कार्य शुरू किया था। इसके बाद पोल्ट्री फार्म की जानकारी विदेशों से लाकर गांव अन्टा में इनके रिश्तेदारों के साथ मिलकर मुर्गी पालन के साथ हैचरी लगाकर कार्य शुरू किया। सच्ची लगन व ईमानदारी से कार्य करके गांव ईक्कस में 100 के करीब मुर्गी फार्म खुलवाए। आज इनका व्यवसाय कई राज्यों में फैला हुआ है। इनका कारोबार उत्तर भारत में नं० एक पर है। यह सब जगबीर सिंह के दिमाग की देन व मेहनत का फल है। आजकल जगबीर सिंह स्काईलार्क ग्रुप के एम.डी. के पद पर हैं तथा सारी व्यवस्था खुद संभालते हैं। जगबीर सिंह को उत्कृष्ट कार्य करने के लिए कर्मयोगी अवार्ड के साथ दर्जनों अन्य अवार्डों से नवाजा जा चुका है। इनका छोटा बेटा सुरेन्द्र सिंह स्काईलार्क ग्रुप के निदेशक पद पर जीन्द कार्यालय में बैठ कर पूरे कारोबार को संभालते हैं। इसके इलावा मा० ओम सिंह के पुत्र राजेश, सुनील, जगबीर सिंह का बेटा राजेश तथा सुरेन्द्र का बेटा डॉ० नितेश भी इस कारोबार में अलग जगहों में अपनी-अपनी ड्यूटियों को बड़ी जिम्मेदारियों से निभा रहे हैं। चौ० जयलाल ने अपने चारों बड़े भाइयों के बच्चों में कोई अन्तर नहीं समझा तथा उनकी हर प्रकार से हमेशा मदद की, क्योंकि इनके बड़े भाई के देहान्त के बाद तो एकएक पूरे परिवार की जिम्मेदारी इनको ही संभालनी पड़ी। चौ० जयलाल वर्ष 1952 से 1972 तक गांव के सरपंच तथा एक योजना पंच भी रहे। इस दौरान गांव में विकास के काफी कार्य करवाए, उन्होंने नौगामा खाप के पंचायतों में कई मौकों पर प्रधान की भूमिका निभाई तथा जिस मामले में पंचायत होती थी उसका निपटारा जरूरत होता था। हमेशा न्याय करवाना व निष्पक्ष फैसला इनकी फितरत में था। इनकी दान करने में विशेष रूचि रही है। एक कमरा जाट हाई स्कूल जीन्द, एक-एक कमरा जाट धर्मशाला जीन्द व कुरुक्षेत्र में एक कमरा

गांव के स्कूल के साथ समय-समय पर जीन्द जिले की गऊशालाओं व गुरुकुलों में भी धन से काफी योगदान किया है।

इनके योगदान से आज गांव में सरकारी जे.बी.टी. (डाईट) स्कूल चल रहा है। इस कारण आज हर घर में एक अध्यापक जरूर है। आज चौ० श्योराम का बहुत बड़ा परिवार है जो गांव के साथ-साथ बाहर भी रहता है। इस परिवार में मेहर सिंह इन्टरनेशनल स्पोर्ट्स मैन, वेदसिंह मुख्याध्यापक (रिटायर), बालीवाल के इन्टरनेशनल खिलाड़ी, जयसिंह नायब तहसीलदार, महेन्द्र सिंह स्कूल प्राध्यापक, सुखबीर सिंह पूर्व युवा इनेलो अध्यक्ष हरियाणा, आजाद सिंह बी.एल.डी.ए. (रिटायर) हुए हैं। इन सभी को इस मुकाम पर पहुंचाने में चौ० जयलाल का मुख्य योगदान रहा है। आपने हमेशा गरीबों व बेसहारा लोगों की हर प्रकार से मदद की। इनके बेटों द्वारा हर वर्ष गांव के स्कूल में नेत्र कैम्प का आयोजन किया जाता है जिसमें डॉ० चाँदसिंह ढुल, डायरेक्टर पीजीआई रोहतक की टीम नि:शुल्क सेवा देती है और आंखों के सभी आप्रेशन, दवाइयां व चश्मे व आंखों में लगने वाले लैंस आदि का खर्चा यह परिवार देता है, जिसमें हर वर्ष गांव के तथा आसपास के गांवों के लोगों को काफी लाभ होता है। सच बोलना, साफ-साफ बात कहना, निडर निर्भीकता इनके गुण थे। इस परिवार में पीढ़ियों से देशभक्ति में आस्था रही है। यह परिवार पूरे क्षेत्र नौगामा का एक सम्मानित व प्रतिष्ठित परिवार है। गांव के छोटे-मोटे झगड़ों का निपटारा गांव में करवा देते थे। दिनांक 3 मई, 2013 को 94 वर्ष की जीवन यात्रा के बाद इस महान् आत्मा ने देह त्याग दिया और एक युग के समान पुरुष की कमी हमेशा के लिए हो गई। इन्होंने स्वयं के परिवार को संभाला व सभी बच्चों को सही मार्गदर्शन करके अपने ही पद चिह्नों पर चलाते गए। आज ये भी हमारे मध्य अपने संस्कारों, परोपकारों व जनहित के कार्यों के रूप में मौजूद हैं। ऐसे व्यक्ति को हम हमेशा याद करें व आने वाली पीढ़ियों को उदाहरण देंगे। मैं अन्त में भगवान से इनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ।

वंशावली : अमन व वंश पुत्र श्री राजेश, सुनील पुत्र श्री ओमप्रकाश, वीर पुत्र विकास पुत्र श्री जगवीर सिंह, डॉ० नीतिश कुमार पुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह, सपुत्रान श्री जयलाल पुत्र श्री श्योराम पुत्र श्री सहजराम पुत्र श्री नन्दरूप पुत्र श्री सलतनिया, पुत्र श्री रतीराम पुत्र श्री जयराम ढुल।

(डॉ० नितेश ढुल के सौजन्य से)

डॉ० चाँद सिंह ढुल : जीवन परिचय

डॉ० सी.एस. ढुल का जन्म 19 जनवरी, 1954 को जीन्द जिले के गाँव इक्कस में एक आर्यसमाजी परिवार में हुआ। उनका जन्म बड़े भाई के जन्म के सात साल बाद रात नौ बजे हुआ जब चन्द्रमा प्रकाश में अपनी रोशनी बिखेर रहा था। इसलिए परिवार ने पुत्र का नामकरण भी चाँदसिंह ही कर दिया। शेरसिंह एक किसान परिवार से सम्बन्ध रखने वाले समाजसेवी व वैद्य थे जो बच्चों की बीमारियों का नि:शुल्क इलाज करते थे। डॉ० चाँदसिंह की प्राइमरी शिक्षा इनके दादा जी के आशीर्वाद एवं अनुग्रह से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में हुई। डॉ० ढुल का मानना है कि उनकी प्रगति में पारिवारिक व गुरुकुल काँगड़ी में मिली शिक्षा और संस्कारों का बहुत बड़ा योगदान है। उनके पिता श्री जोधसिंह ने राजकीय कॉलेज नाभा (पंजाब) से शिक्षा प्राप्त करके सेना में लेफ्टीनेंट के पद पर कार्य संभाला परन्तु दादा जी के आग्रह पर जीन्द के जाट हाई स्कूल में अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ देने के लिए व समाज सेवा के जुनून में उन्होंने अपनी लेफ्टीनेंट की नौकरी भी छोड़ दी।

डॉ० ढुल ने अपनी दसवीं की शिक्षा एस.डी. उच्च विद्यालय, जीन्द से प्राप्त की। पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ की मैरिट सूची में स्थान पाया। 1971 में मैरिट के आधार पर इनका प्रवेश पी.जी.आई.एम.एस. रोहतक में एम.बी.बी.एस. में हुआ। 1976 में एम.बी.बी.एस. पास होने तक पाँच वर्ष उनको दसवीं की मैरिट के आधार पर छात्रवृत्ति प्राप्त होती रही।

सन् 1979 में इनका विवाह डॉ० इन्दिरा ढुल से हुआ। डॉ० इन्दिरा ढुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के शिक्षा विभाग में प्रोफेसर, डीन अध्यक्ष व विश्वविद्यालय की डीन कॉलेज डिवेल्पमेंट कौंसिल के पदों पर अपनी सेवाएँ दे चुकी हैं। इनके दो पुत्र तुषार व चिराग हैं। बड़ा पुत्र तुषार मारूति गुड़गांव में सहायक मैनेजर के पद पर तथा पुत्रवधु डॉ० पूनम कॉलेज ऑफ एजुकेशन सिधरावली में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत है। छोटा पुत्र चिराग अमेरिका के सियेटल शहर में अमाजोन कम्पनी में प्रोग्राम मैनेजर के पद पर व पुत्रवधु डॉ० सुमेधा वहीं पर दँत चिकित्सक के पद पर अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

डॉ० ढुल ने 1978 में नेत्र विभाग, पी.जी.आई.एम.एस. में अपनी सेवा रजिस्ट्रार के पद से आरम्भ की तथा 1981 में नेत्र विभाग में एम.एस. की डिग्री प्राप्त की। इसी विभाग में विभिन्न पदों पर पदोन्नत होते हुए 1994 में प्रोफेसर के पद पर कार्यभार संभाला तथा 2004 में विभागाध्यक्ष का पद ग्रहण किया। इन्होंने वर्ष 2006 में अनथक

प्रयास करके हरियाणा सरकार व तत्कालीन मुख्यमन्त्री के सहयोग से नेत्र विभाग, पी.जी.आई.एम.एस. रोहतक को अपग्रेड करके क्षेत्रीय नेत्र विज्ञान संस्थान के रूप में भारत सरकार से मंजूरी दिलाई।

वर्ष 1989 में लंदन विश्वविद्यालय ने इनको फैलोशिप प्रदान की तथा इसी वर्ष इन्होंने मरफील्ड अस्पताल, लंदन (Moorfield Hospital, London) व नेत्र विज्ञान संस्थान, लंदन से सामुदायिक क्षेत्र स्वास्थ्य में डिप्लोमा प्राप्त किया। अब तक डॉ० ढुल के 208 शोध पत्र विभिन्न राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शोध पत्रिकाओं में छप चुके हैं तथा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलनों में पढ़े जा चुके हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की 17 पुस्तकों में इनके अध्याय भी प्रकाशित हो चुके हैं। इनकी शोध में रूचि को देखते हुए अन्तर्राष्ट्रीय नेत्र विज्ञान एकेडमी बैल्जियम ने 1989 में इनके एक शोध पथ पर इनको अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण पद व पी-एच.डी. (Hony.) की उपाधि से सुशोभित किया।

इनकी सेवाओं को देखते हुए हरियाणा सरकार ने डॉ० चाँदसिंह को 2006 में पी.जी.आई.एम.एस. के चिकित्सा अधीक्षक का कार्यभार सौंपा जिसे इन्होंने पूरी तन्मयता से निभाया। उनके उत्कृष्ट योगदान को देखते हुए हरियाणा सरकार ने वर्ष 2009 में इन्हें संस्थान के निदेशक पद पर नियुक्त किया जिसे इन्होंने गरिमापूर्वक संभाला। अपने निदेशक के कार्यकाल में इन्होंने अपने अथक, प्रयास व हरियाणा सरकार के सहयोग से मरीजों का मिलने वाली सेवाओं में सुधार किया। इसके परिणामस्वरूप मरीजों की संख्या प्रतिदिन ओ.पी.डी. में लगभग 4100 से बढ़कर 6000 तक पहुँच गई। मरीजों को करीब 300 दवाइयाँ पी.जी.आई.एम.एस. ओपीडी व वार्डों में मुख्यमंत्री मुफ्त इलाज योजना के तहत नि:शुल्क उपलब्ध कराई गई। यहाँ तक कि कैंसर के इलाज की दवाई भी बिना शुल्क उपलब्ध करवाई गई। दवाई लेने में मरीजों की सुविधा को देखते हुए ओ.पी.डी. में करीब 28-30 दवा वितरण काउंटर चालू करवाए गए। इन्होंने एम.बी.बी.एस. की सीट संख्या 150 से 200 बढ़वाने में भी अपना योगदान दिया। इसी अवधि में 7 सुपरस्पेशलिटी विभाग व नए कोर्स आरम्भ किए गए। डॉ० ढुल ने मानसिक चिकित्सा विभाग को Centre of Excellence का दर्जा दिलवाने में अपना योगदान दिया। मरीजों की सुविधा के लिए नई ओ.पी.डी, नर्सिंग कॉलेज, मानसिक स्वास्थ्य संस्थान के नए भवन तैयार कराए व नए आप्रेशन

थियेटर व ट्रामा सैंटर की शुरुआत करवाई।

डॉ० ढुल स्वास्थ्य विज्ञान, विश्वविद्यालय, रोहतक व अन्य विश्वविद्यालयों के मनोनीत सदस्यों के रूप में व विभिन्न Statutory Bodies के चेयरमैन अथवा सदस्य के रूप में अपना योगदान देते रहे हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) व MCI व UPSC जैसी महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय आयोग व कौंसिल की कमेटियों में भी अपनी सेवाएँ समय-समय पर देते रहे हैं।

नि:संदेह डॉ० सी.एस. ढुल एक कुशल चिकित्सक ही नहीं एक संघर्षशील, मेहनती, मिलनसार व मधुरभाषी समासेवी इंसान हैं जो ग्रामीण निर्धन एवं असहाय व्यक्तियों की सहायता व सेवा करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। प्रतिवर्ष ग्रामीण क्षेत्रों में वर्ष 1984 से अब तक करीब 369 नेत्र रोग जाँच शिविर लगाकर अपनी सेवाएं दे चुके हैं। डॉ० ढुल सोशल मीडिया एवं इलैक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से नेत्र चिकित्सा सम्बन्धी जानकारी आम जन तक पहुँचाते रहते हैं। क्षेत्रीय नेत्र विज्ञान संस्थान पी.जी.आई.एम.एस. रोहतक के आचार्य एवं अध्यक्ष पद पर रहते हुए उनका प्रयास है कि नेत्र रोगियों को इस संस्थान में हर प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त करवाई जाएं तथा उनको किसी और संस्थान पर इलाज के लिए ना भटकना पड़े तथा चिकित्सक विद्यार्थियों को उच्चकोटि की शिक्षा इसी संस्थान में मिले। मैं प्रभु से इनकी दीर्घ आयु एवं स्वस्थ रहने की कामना करता हूँ।

❑❑❑

13. गुलकनी

यह गाँव भी नौगामा खाप खण्ड जीन्द विधानसभा क्षेत्र जुलाना में जीन्द हाँसी मार्ग पर जीन्द मुख्यालय से 13 किमी की दूरी पर है। चितंग नहर के किनारे आबाद है। इसके आसपास राजपुरा (भैण) रामराय, बागनवाला, राजस्थल, मलिकपुर, मिर्चपुर आदि गाँव हैं। इस गाँव की निकासी गाँव राजपुरा (भैण) से विक्रमी संवत् 1931 सन् 1875 ई० में तीन पूर्वज यहां आकर बस गए। अब उनके तीन पाने (ठोले) हैं। इस गाँव के नामकरण के बारे में रिटायर्ड मुख्याध्यापक राजसिंह लौहान (70) के अनुसार गुणों की कली के रूप में बसाया गया गाँव जो फूल बन गया इसे पहले गुणकली के नाम से जाना जाता था। अब सभी सरकारी रिकार्ड में इसका नाम गुनकली है। इसका नाम गुलकणी राग का थाट बिलावल है। इसे दूसरे पहल में गाया व बजाया जाता है। यह 16 रागों के नाम से बसाये गाँवों में से एक है। राजा सरूपसिंह व राजा रघबीर सिंह के संगम काल में बसे गांव का नामकरण गुणकली (गुनकली), भैरोखेड़ा, जैजै वन्ती, मलार, मालवी, पीलू, मालसरी आदि की भाँति 16 प्रसिद्ध रागों में से एक है। इन 16 रागों पर बसे गांवों में उपरोक्त 7 गाँव जीन्द में और 9 गाँव नन्दगाँव, सारंगसत, टोड़ी, बिलावल, हिन्डोल, वृन्दावन, असावरी, जयश्री, भौरवी या गोप कल्याण आदि गांव दादरी में हैं।

(जीन्द इतिहास के सौजन्य से, लेखक : नफेसिंह सुलकलान)

गाँव प्रारम्भ से ही आर्यसमाजी गाँव रहा है। एक आर्यसमाज मन्दिर है जिसे बलिदान स्मारक के नाम से जाना जाता है। इसमें स्वामी कर्मपाल जी रहते हैं। 1957 में हिन्दी को मातृभाषा का दर्जा दिलाने के लिए आर्यसमाज के नेतृत्व में एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन किया गया। समझौते के बाद जब आन्दोलनकारियों को रिहा किया गया तो अम्बाला से रिहा होकर आन्दोलनकारियों को रेलगाड़ी मोहरी रेलवे स्टेशन पर मालगाड़ी से टकरा गई, जिसमें गाँव गुनकली का स्वर्णसिंह पुत्र श्री चन्दगीराम व श्री अमरसिंह पुत्र श्री मामचन्द गाँव राजपुरा भैण शहीद हो गए। दोनों गाँवों के लोगों ने इन शहीदों के नाम पर यहां बलिदान स्मारक बना दिया, जिसमें हर वर्ष आर्यसमाज के समारोह आयोजित होते हैं। इससे पहले जत्थों में इनके बड़े भाई जागरराम व मुन्शीराम भी जेल काट चुके थे।

गाँव की जनसंख्या 2295, कुटियां 456, मतदाता 1589 है। गाँव की जोत भूमि का कुल रकबा 9 हजार बीघा है। इसमें साढ़े चार हजार बीघा राजपुरा भैण के रकबा से तथा इतनी ही जमीन (900 एकड़) रामराय के रकबा से जो नहर से पार होने के कारण

व जंगल पड़े हुए थे जो प्रारम्भ में ही सरदार को बेच रखी थी। सरदार की केवल दो लड़कियां पवित्रकौर और प्रीतमकौर थी। प्रीतम कौर की एक लड़की पूर्व मुख्यमन्त्री स्व० प्रतापसिंह कैरों के सुपुत्र सरदार सुरेन्द्र सिंह के साथ विवाही गई। सरदार हर वर्ष ठेकेदारों (मुजारों) को बोली पर जमीन दे देता था और फसल का तीसरा भाग वसूल करता था। सन् 1960 में मुजारों ने मालिकाना हक के लिए कोर्ट में केस कर सन् 1964 में कुल 72 रुपये एकड़ अदा करके कोर्ट द्वारा मालिकाना हक पा लिया।

गांव में तीन पाने (ठोले) जाटों के तीन बैरागियों के तीन चमारों के व अन्य जातियाँ पण्डित, दर्जी, बाल्मीकि, लुहार, तेली, राजपूत, नाई, कुम्हार व धोबी बसते हैं। जाट लोहान गोत्र, बैरागी चौहान, भारद्वाज व धनाणिये चमार गोरिये व लेकरे, नाई बाजवान, पण्डित नागवान वत्स व अत्री गोत्र के बसते हैं। गांव में 10 वार्डों से 10 पंच बनते हैं।

पंचायत का ब्यौरा सन् 1952 से आज तक

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	जाति
1.	श्री रतन सिंह पंच	श्री चन्दगीराम	संयुक्त पंचायत राजपुरा के साथ सरपंच श्री झुण्डाराम सु० तुलसीराम था
2.	श्री छेलूराम	श्री बिजेराम	जाट
3.	श्री रामभगत	श्री किशना	जाट
4.	श्री फत्तेसिंह पंच	श्री रामजी लाल	जाट
5.	श्री रामप्रसाद	श्री सुखदास	बैरागी
6.	श्री धारासिंह	श्री गोपीराम	जाट
7.	रामप्रसाद	श्री सुखदास	बैरागी
8.	श्री रामकिशन	श्री छग्गाराम	हरिजन
9.	श्री कर्मबीर	श्री दलीपसिंह	जाट
10.	श्री धर्मबीर	श्री दलीपसिंह	जाट
11.	श्री धर्मबीर	श्री गोवर्धन	हरिजन
12.	श्री अजमेर सिंह	श्री उमेदसिंह	बैरागी
13.	श्री जयदीप लोहान बी.ए.	श्री ओमप्रकाश लोहान	जाट

श्री धारासिंह, श्री छज्जूराम, श्री जोरासिंह, श्री राजाराम एस.सी., श्री पालाराम बी.सी., श्री रोहतास बी.सी. छः नम्बरदार, श्री काला चौकीदार है। गांव का सबसे बड़ा जमींदार श्री राजाराम पुत्र श्री बलमत सिंह है। सबसे बड़ा वरिष्ठ नागरिक श्री रामस्वरूप

नाई 90 वर्ष है। गांव में 5 चौपाल, 3 तालाब, 4 मन्दिर, 2 स्कूल, एक प्राईवेट एस.के. हाई स्कूल है। तीन आंगनवाड़ी केन्द्र, गांव की सभी गलियां पक्की व मकान भी पक्के हैं। गांव में काफी सुविधा शहर जैसी हैं। गांव में आर्य युवा क्लब है। गांव के लोग खेती मन लगाकर करते हैं साथ ही अच्छे दुधारू पशु पालने का शोक भी रखते हैं। गांव के पुराने पंचायती जिनको आस पास के गांवों में लोग जानते थे–श्री गोपीराम, श्री छैलूराम, श्री चतरसिंह, श्री हरिसिंह, श्री सुखदास, श्री रतीराम, श्री देईराम, श्री छोटूराम, श्री मांगेराम, श्री लीलूराम आदि थे। आज के पंचायती जो गांव नौगामा खाप के कामों में भाग लेते हैं। श्री रामप्रसाद, दीवाना, मनोहरा, प्रकाश रोहिल्ला, प्यारासिंह, बनीसिंह, मा० राजसिंह, अशोक, रामफल, पं० छोटूराम पीटीआई, बलबीरा, रामचन्द्र, श्री जयसिंह व मा० नारायणसिंह रोहिल्ला आदि।

गांव के गणमान्य, सम्मानित व पढ़े-लिखे सज्जन

1. श्री चतरसिंह गांव का पहला सरकारी सेवा में सात भाषाओं हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेजी, अरबी, उर्दू, फारसी, लाड़ी (बनिये वाली) का ज्ञाता समाजसेवी, सदाचारी पुरुषथा।
2. श्री राजसिंह पुत्र श्री चतरसिंह रिटायर्ड मुख्याध्यापक पहला स्नातक।
3. श्री राजसिंह, एस.सी. पहला राजपत्रित अधिकारी।
4. श्री बदलूराम स्वतन्त्रता सेनानी (गुलबरणा जेल में रहा)
5. शहीद श्री स्वर्णसिंह, हिन्दी आन्दोलन वर्ष 1957
6. कैप्टन मनीष लोहान, एच.सी.एस., आई.ए.एस.
7. श्री अमरनाथ (S.E, PWD B&R)
8. श्री अंकुर लोहान उर्फ छोटू (All India Engg. Service)
9. श्री जगबीर लोहान मैनेजर, पी.एन.बी.
10. श्री चतर सिंह, मैनेजर स्टेट बैंक ऑफ पटियाला
11. श्री कृष्ण कुमार मैनेजर, केनरा बैंक
12. श्री सुखदेव लोहान, डी.ओ. को-आप्रेटिव बैंक
13. मा० नारायण सिंह रोहिल्ला, प्रधानाचार्य (रिटायर्ड)
14. श्रीमती अंजु लोहान, असिस्टेंट प्रोफेसर
15. श्री अंकित लोहान, एस.डी.ओ. लोकल बाडी
16. श्रीमती सुनैना लोहान, असिस्टेंट काऊन्टरी एण्ड टाउन प्लानिंग अधिकारी
17. श्री ओमप्रकाश चौहान, एस.डी.ओ. खेती बाड़ी

18. डॉ० सतबीर सिंह शर्मा, भारतीय टीम का बेस्ट नेटर (बालीबाल)
19. डॉ० दयानन्द लोहान, वी.एल.डी.ए. (रि०) वजन की कुश्ती में कई बार विजयी रहा।
20. श्री कृष्ण कुमार हैड मास्टर
21. श्री सुरेश शर्मा, हैड मास्टर

शहीद स्वर्णसिंह लोहान

स्वर्णसिंह लोहान का जन्म एक आर्यसमाजी संयुक्त परिवार में एक साधारण किसान चौ० चन्दगीराम के घर माता श्रीया देवी की कोख से अगस्त 1923 को हुआ। आपके पिता जी बड़े मेहनती किसान थे। आपका बचपन घर के आंगन में बड़े लाड़ प्यार से बीता। आपकी माता का मृदु स्वभाव होने के कारण आप पर उनका गहरा प्रभाव पड़ा। गांव में स्कूल न होने के कारण आप अनपढ़ रह गए, परन्तु गचपन से ही प्रखर बुद्धि के रहे। आप का विवाह बहुत ही छोटी सी आयु में गांव उमरा-सुलतानपुर वासी चौ० मातूराम श्योराण की पुत्री शान्ति देवी के साथ हो गया। इनकी कोख से दो पुत्र ओमप्रकाश व राजबीर सिंह पैदा हुए। आपका पुत्र ओमप्रकाश जब तीन वर्ष का तथा राजबीर 3 मास मास का था जब आप रेल दुर्घटना में शहीद हो गए। आपके बच्चों का पालन-पोषण आपके ताऊ चौ० जागर सिंह व चौ० रतन सिंह ने किया तथा इन बच्चों को शिक्षित करके इनके रिश्ते अच्छे खानदानी घरों में करवा दिए। इन्होंने अपने दोनों बच्चों का नामकरण यज्ञ हवन करवाकर आर्यसमाज विधि द्वारा करवाया। आपके आसपास व पड़ौस में कोई झगड़ा आपस में हो जाता तो उनको समझा-बुझाकर झगड़ा शांत करवा देते थे। दूसरे के कामों को हमेशा अपना काम मानकर करते थे। अमर सिंह व आप बचपन के पक्के दोस्त थे तथा इन दोनों के खेत भी साथ-साथ थे तथा खेती-बाड़ी में एक-दूसरे की मदद करते थे। आप बड़े हंसमुख स्वभाव व बड़े डिलडौल वाले थे। बचपन से ही कुश्ती लड़ने का भी शौक था। एक दिन आप अमरसिंह व अन्य साथियों के साथ दिल्ली देखने के लिए चले गए। रात होने पर वहीं रूक गए। उसी रात को डिप्टीगंज (पहाड़गंज) में आर्यसमाज का जलसा हो रहा था। वहां आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान् और संन्यासी स्वामी दर्शनानन्द जी का हिन्दी लागू करने पर भाषण चल रहा था। इस भाषण का इनके ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा तथा गांव में आकर हिन्दी लागू करने के प्रचार में लग गए। इस समय हिन्दी भाषा लागू करवाने के लिए आन्दोलन का पहला जत्था जा चुका था। इसमें इनके बड़े भाई जगतसिंह व

रतनसिंह के साथ अमरसिंह के बड़े भाई मुंशीराम आर्य व धर्मसिंह भी जेल काटके आ चुके थे। वे इनको जेल में दी गई यातनाओं के बारे में बताया करते थे। इनकी बात सुनकर यह कहते थे कि आप हमें तो ऐसी जगह जाने नहीं देते। इनके अन्दर पूरा जोश था। अगस्त में संयुक्त पंजाब में हिन्दी को पंजाबी भाषा के साथ लागू करने का आन्दोलन पूरे यौवन पर था। यह काफी साथियों के साथ इसमें शामिल हो गए और इस दौरान इनकी गिरफ्तारी हो गई और इनको अम्बाला की सैन्ट्रल जेल में बंद बना दिया गया। इनका आन्दोलन सफल रहा और सरदार प्रतापसिंह कैरों को झुकना पड़ा तथा प्रदेश में हिन्दी भाषा को भी लागू करना पड़ा। सरकार से समझौता होने पर दिनांक 31 दिसम्बर 1957 को इनकी रिहाई हो गई और यह अपने साथियों के साथ सायं की रेल द्वारा अपने घरों को आ रहे थे। मोड़ी रेलवे स्टेशन नजदीक अम्बाला पर पहले से खड़ी मालगाड़ी से इनकी तेजगति से चल रही गाड़ी टकरा गई और बहुत बड़ा रेल हादसा हुआ जिसमें काफी लोग मारे गए और काफी घायल हुए। आप और गांव राजपुरा के अमरसिंह की मौके पर ही मौत हो गइ। गाँव राजपुरा के अन्य साथी स्वरूपसिंह की एक टांग कट गई। उस समय श्री लाल बहादुर शास्त्री जी रेलमंत्री थे, उन्होंने सभी मरने वालों को आर्थिक राहत के साथ-साथ शहीदों का दर्जा दिलवाया। उस समय पंजाब के मुख्यमन्त्री सरदार प्रताप सिंह कैरों थे। राजपुरा व गुनकली के लोगों ने इन दोनों शहीदों के नाम से गांव में करीबन 3 एकड़ जमीन में बलिदान स्मारक वर्ष 1958-59 में बना दिया था। आजकल इस स्मारक की देखरेख स्वामी कर्मपाल जी कर रहे हैं। इन शहीदों की सहादत को हर वर्ष 31 दिसम्बर व 1 जनवरी को बड़े धूमधाम से मनाया जाता था। आप खेतीबाड़ी के काम में तो दक्ष थे ही, इसके साथ ही रस्सा बांटना, खाट भरना, छिक्की बनाना, टोकरे में रस्सा डालना, पीढ़ी भरना, पालने में रस्सी डालना आदि काम बड़ी सफाई से करते थे। कुछ समय पहले समाचार पत्रों के माध्यम से समाचार छपा था कि हरियाणा सरकार हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन में शहीद हुए लोगों के परिवारों के सदस्यों को मान सम्मान देगी और आर्थिक सहायता भी प्रदान करेगी। इनकी शहाद की खबर पूरे नौगामा खाप के गांव के लोगों में जंगल की आग की तरह फैल गई। लोग अन्त्येष्टि में बड़ी संख्या में शामिल हुए और हर एक के मुंह से यह निकल रहा था कि अमरसिंह व स्वर्णसिंह अमर रहो। दूसरे दिन वैदिक रीति से इनका अन्त्येष्टि संस्कार हुआ। धन्य है वो मां

जिसने ऐसे पूत को जन्म दिया। अन्त में मैं भगवान से इनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ।

वंशावली : अभिषेक पुत्र यशवीर सिंह व नरवीर सिंह पुत्र श्री ओमप्रकाश, सौरभ पुत्र सोमबीर पुत्र शहीद राजबीर सुपुत्रान शहीद स्वर्णसिंह सुपुत्र चौ० चन्दगीराम सुपुत्र चौ० नानकसिंह सुपुत्र चौ० धनिया राम लौहान।

(इनके बेटे प्रकाश लोहान के सौजन्य से)

मा० राजसिंह लोहान

आपका जन्म 2 अक्तूबर, 1946 को ग्राम गुलकनी में चौ० चतरसिंह लोहान पटवारी एवं माता छोटो देवी के घर हुआ। आपके पिता पहले सरकारी सेवा में होते हुए डब्ल्यू.बी.एन. जो पद नायब तहसीलदार के बराबर होता था से सेवानिवृत्त हुए तथा वह सात भाषाओं के जानकार थे। आपके जीवन पर आपके पिता का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा तथा आपका बचपन बड़े लाड़-प्यार से गुजरा। प्राथमिक शिक्षा पैतृक गांव, मिडल रामराय से दसवीं जाट हाई स्कूल से पास करने के बाद स्नातक डिग्री राजकीय कॉलेज जीन्द से पास करने के बाद बी.एड. कैथल से अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की। आप स्कूल तथा कॉलेज के समय के अच्छे खिलाड़ी रहे। राजकीय कॉलेज जीन्द की बालीवाल टीम के कैप्टन रहे तथा ग्रामीण कॉलेज शिक्षा कैथल के बेस्ट एथलीट रहे तथा कॉलेज कलर भी प्राप्त किया। आपका विवाह जुलाना कस्बे के चौ० प्रतापसिंह लाठर की पुत्री कृष्णा देवी के साथ हो गया। कृष्णा देवी धार्मिक विचारों की महिला है जिसमें अतिथि सत्कार कूट-कूट कर भरा हुआ है। इनकी कोख से पांच कन्याएँ व एक पुत्र विनोद लोहान पैदा हुआ जो आज कल पुलिस विभाग में निरीक्षक के पद पर कार्यरत है। इन्होंने अपने सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवाकर उनके रिश्ते बढ़िया एवं खानदारी घरों में कर रखे हैं। आप वर्ष 1971 में एस.एस. मास्टर के पद पर सरकारी नौकरी में लग गए तथा मन लगाकर जहां पर भी रहे बच्चों को अच्छे संस्कार पैदा करने की शिक्षा दी।

विशेष सम्मान : गृह मामला मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वर्ष 1981 की जनगणना में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए भारत के राष्ट्रपति द्वारा इन्हें काँस्य पदक प्रदान किया गया। राजकीय उच्च विद्यालय रामराय का अंग्रेजी विषय का बोर्ड की 1991 में हुई मैट्रिक परीक्षा परिणाम में राज्यभर के दस हजार एस.एस. मास्टरों में छप्पनवें स्थान पर रहा। सेवानिवृत्ति की आयु तक राज्य व राष्ट्रीय बालीवाल (शूटिंग) में चुस्त खिलाड़ी

की तरह भाग लिया तथा अम्बाला में हुई राष्ट्रीय चैम्पियनशिप प्रतियोगिता वालीबाल में चाँदी का पदक प्राप्त किया।

समाजसेवी के रूप में : राजपुरा (भैण) व मिर्जपुर के कॉलेज के लड़कों का मुकदमा, गुनकली व राखगढ़ी कॉलेज के छात्रों का मुकदमा, बहबलपुर का आसपास के गांवों के लड़कों का विवाद निपटाना। ओमसिंह गुनकली व महेन्द्रसिंह थानेदार का जमीन का मुकदमा व अन्य नौगामा खाप के विवादों का निपटारा करवाने में अहम भूमिका अदा की। तीन योजना अध्यापक संघ जिला जीन्द का लेखाकार रहा एवं योजना जिला प्रधान रहे। सेवाकाल के अन्तिम के वर्षों में राजपुरा (भैण) मिडल स्कूल में सेवा के दौरान उच्च विद्यालय और बाद में 10+2 तक बनवाने में गांव वालों के सहयोग से 6 एकड़ के नाजायज कब्जों को खाली करवाकर 2 एकड़ के तालाब को कार सेवा द्वारा मिट्टी से भरवाया। गांव से चन्दा करके 6 एकड़ की चारदीवारी, प्राईमरी स्कूल का भवन 10+2 को दो मंजिला भवन और एक बड़ा हाल बनवाकर अक्तूबर 2004 में सेवाकाल को सम्मानपूर्वक अलविदा कर अब समाज की सेवा में लगे हुए हैं। मैं भगवान से इनके दीर्घ आयु एवं स्वस्थ रहने की कामना करता हूँ।

इनकी वंशावली : पुत्र विनोद पुत्र श्री राजसिंह पुत्र चतरसिंह पुत्र श्योलाल पुत्र सदाराम लोहान।

(इनके पुत्र विनोद लोहान के सौजन्य से)

❑❑❑

14. गाँव रामगढ़

यह गाँव खण्ड जीन्द विधानसभा क्षेत्रफल जुलाना में जीन्द-भिवानी रोड पर गांव धिमाना से पश्चिम दिशा से लिंक रोड पर 1.5 किलोमीटर दूरी पर आबाद है। आज से करीबन 144 वर्ष पूर्व सन् 1871 में अजायब-भूराण निवासी चौ० रामजस राठी ने जीन्द के राजा से माल पर जमीन लेकर छोटा सा मकान बनाकर रहने लग गये। यहां पर गहरा जंगल हुआ करता था। इसी वर्ष जैला खेड़ा जो छोटा सा ढाणी नुमा गांव था उसके सभी लोग यहां आकर बस गए जो सैनी जाति से सम्बन्ध रखते थे। आज इनके 65 घर हैं। जैला खेड़ा बीड़वन के साथ थेह के रूप में है। चौ० रामजस राठी ने वर्ष 1874 में राजा रघुबीर सिंह को जमीन वापिस देकर अपने गांव चला गया क्योंकि उससे जमीन माल नहीं अदा किया गया। इसके बाद जमीन को राजा ने फज्जू शेख व नानूराम महाजन को ठेके पर दे दिया। फज्जु शेख का परिवार पाकिस्तान चला गया। नानू सेठ जीन्द शहर में रहने लग गया। गांव छोड़ने से पहले फज्जु शेख व नानू महाजन घोड़ियों पर चढ़कर गांव बीबीपुर व लादाण चौपाड़ में लोगों को इकट्ठा करके गांव बसाने बारे बात की, उस समय के मौजिज चौ० गुलाबसिंह व नेतराम ने उनसे कहा कि आप अजायब भूरान जाकर रामजस राठी के परिवार वालों से सहमति लेकर आओ। रामजस राठी के परिवार वालों से सहमति हो जाने के बाद इनके पूर्वज चौ० गुलाब सिंह ने अपने चार पुत्रों में से ङ्घसंघराम व जयराम को गांव बसाने के लिए उनके साथ भेज दिया। इस गांव का नामकरण रामजस राठी के नाम से रामगढ़ पड़ गया। इन दोनों ने राजा से मामूली कीमत पर 300 बीघा जमीन मोली ले ली। बाद में इन्होंने और जमीन खरीद ली थी। गांव में प्राईमरी स्कूल, पशु अस्पताल, 3 चौपाड़, 3 मन्दिर, वाटर वर्क्स, 2 तालाब, सभी गलियों में नालियां व पक्की सड़क, सभी घरों में पानी टूटियों से आता है। 2 सफाई कर्मचारी (नरेगा द्वारा) हैं। गांव में 1300 मत पत्र, 272 घर, वार्ड सं० 7, जनसंख्या 1790 है। जाटों के घर 39 बैरागी 80 घर, धानक 30, जट्ट सिक्ख 5, सैनी (तंवर, कटारिये) 65, अहीर 28, चमार 20 घर तथा 5 घर वाल्मीकि हैं। सरकार ने दो पंच बागनवाला से जोड़ कर रामगढ़-बागनवाला की एक पंचायत बना दी है।

गांव में आज तक के सरपंचों की सूची

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	जाति	कार्यकाल
1.	श्री रणजीत सिंह	श्री नानूराम	महाजन	6 योजना
2.	श्री इन्द्रसिंह	श्री उदेराम	जाट	

3.	श्री जिलेसिंह	श्री दूलीचन्द	जाट
4.	श्री रिसाल सिंह	श्री प्रभुराम	बैरागी
5.	श्री बलवीर सिंह	श्री हरनारायण	सैनी
6.	श्री रामकिशन	श्री नन्हीयाराम	सैनी
7.	श्रीमती गदौरी पत्नी श्री बनवारी लाल		चमार
8.	श्री बूटासिंह	श्री इन्द्रसिंह	जट्ट सिख
9.	श्रीमती रतनी देवी	पत्नी श्री पालेराम	बैरागी
10.	श्री अनिल कुमार	श्री रलदूराम	सैनी
11.	श्री श्योपाल	श्री रामभगत	धानक
12.	श्री रामफल सैनी	श्री बलबीर सिंह	सैनी

गांव के नम्बरदार

1. श्री सुखबीर जागलान, 2. श्री बलवीर सिंह सैनी, 3. श्री रणधीर सिंह बैरागी, 4. सुमित्रा जैन। श्री जसबीर सिंह बाल्मीकि चौकीदार है।

गाँव की जमीन उपजाऊ है। नजर तथा नलकूपों से सिंचाई होती है। लोग खेती बाड़ी, पशु पालन, दूध बेचना, सब्जी की खेती करना आदि से जुड़े हुए है। गांव का श्री सुखबीर जागलान नम्बरदार सबसे बड़ा जमींदार है। श्री महावीर सिंह यादव का गांव में संयुक्त परिवार है तथा श्री भगतराम सैनी (कटारिया) सबसे बड़ा पुरुष है। इस गांव का स्व० धनसिंह सैनी, सहायक आबकारी व कराधान अधिकारी था। गांव का चौ० उदेराम नम्बरदार नौगामा खाप का पंचायती व सामाजिक व्यक्ति था। आज के पंचायतियों में चौ० रिसाल सिंह बैरागी, श्री बलवीर सैनी, सरदार बूटा सिंह, श्री जिलेसिंह पूर्व सरपंच, श्री कृष्ण चन्द्र व महावीर यादव हैं।गांव में आपसी भाईचारा बढ़िया है। इस गांव का ढाणी की गोशाला में बड़ा योगदान है।

❑❑❑

15. ईटल खुर्द (सिसर)

यह गाँव खण्ड जीन्द विधानसभा क्षेत्र जीन्द में मुख्यालय से जीन्द-बरवाला रोड पर 14 किलोमीटर की दूरी पर है। यह ईटल कलां, मिर्जपुर, राजपुरा भैण, संगतपुरा, जाजवान से घिरा हुआ गांव है। जीन्द का इस मार्ग पर यह अन्तिम गाँव है। यह गाँव रूडा गिल व अमीचन्द बुरा के आशीर्वाद से विक्रमी संवत् 1917 सन् 1860 में आबाद हुआ है। इससे पहले शेख (मुस्लिमों) का परिवार एक तालाब पर रहता था जो बाद में बाहर चला गया, उनके नाम से खेतों में हिन्दूवाला तालाब है। रोहनात (हाँसी) में बूरा गोत्र के गाँव हैं। सन् 1857 के गदर में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में अग्रिम होने के कारण रोहनत गाँव को अंग्रेजों ने तोड़ दिया था। अपनी रक्षा के लिए बचे हुए लोगों ने हांसी से भाग कर जान बचाई इसके बाद अंग्रेजों ने उनके ऊपर भी गिरड़ा फिरवा दिया जिससे हांसी की सड़क खून से लाल हो गई जो आज भी लाल सड़क के नाम से मशहूर है। इनका पूर्वज अमीचन्द बूरा किसी कारण बच जाने के बाद अपने परिवार के साथ अपने रिश्तेदार के यहां गाँव पुट्ठी (हिसार) चला गया। इनका बुजुर्ग मौजीराम गिल गांव सैमाण (टोहाना) का रहने वाला था तथा वह अपनी सुसराल पुट्ठी में घरजमाई के रूप में बस गया क्योंकि उसके साले नहीं थे। पंजाब में गिल जाट अपना गोत्र शेरगिल लिखते हैं तथा कुछ गोत्र के लोग खाखट गोत्र लिखते हैं। जानकार लोगों के अनुसार गरीड़, गिल व खाखट को एक ही गोत्र माना जाता है। गुरु गोविन्द सिंह ने सन् 1746 ई० में बैसाखी के दिन हिन्दू धर्म बचाने के लिए कैम्प में प्रत्येक पुरुष को अपने नाम के पीछे सिंह व स्त्रियों के नाम के पीछे कौर का प्रयोग करने को कहा था। लेकिन जाटों में कौर व सिंह का प्रयोग आदिकाल से होता आया है। रूडा गिल व अमीचन्द बूरा दोनों शेरसिंह मर्द आदमी थे, जो मुठभेड़ में 10-10 आदमियों का मुकाबला अकेले कर लेते थे। ये ताकत के बल पर अपना पूरे पुट्ठी गांव में प्रभाव रखते थे। दादा मौजीराम के रूड़ा व रोढ़ाराम दो पुत्र थे। रोढ़ा राम के वंशज आज भी पुट्ठी गांव में बसते हैं। रूड़ा राम के चार पुत्रों मोही हुकमी, माईराम, रंगीराम तथा अमीचन्द बूरा के तीन पुत्रों रामदियाल, जोतराम, सादीराम के वंशज इस गांव में रहते हैं। इन दोनों गोत्र के पूर्वज सिख धर्म को मानने वाले थे तथा अपने नाम के साथ सिंह लिखते थे। इन दोनों गोत्रों के भाइयों ने सिर जोड़कर गांव का नाम सिंहसर रखने पर सहमति बनी बाद में बिगड़ कर इसे सीसर कहने लग गए। बाद में जीन्द के राजा रघबीर सिंह ने सन् 1875 ई० में नाम बदलकर ईटल खुर्द कर दिया। वैसे ईटल के साथ इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। पैतृक गांव को कलां व इससे निकले

गांव को खुर्द कहा जाता है। जीन्द के राजा रघबीर सिंह ने नये गांव बसाने का हुकम दिया, उसने भोलाराम नम्बरदार भैण को कहा कि यहां पर गांव बसाओ। भोला नम्बरदार की रिश्तेदारी पुट्ठी गांव में थी। उसने पुट्ठी जाकर कहा कि आप दो तीन आदमी दे दो जो मेरे साथ जाकर मेरे गाँव के पास गांव बसा सकें। सबकी निगाह उन दोनों रूड़ाराम व अमीचन्द पर गई तथा उनको भोलाराम के साथ जाने को राजी कर लिया, उन दोनों ने कहा कि हमारे साथ एक आदमी पुट्ठी का भी भेजो। गांव वालों ने उन दोनों बुजुर्गों के साथ माईधन पानू गोत्र का बुजुर्ग भी भेज दिया। इस प्रकार रूड़ाराम के चार नौजवान पुत्रों व अमीचन्द के तीन नवयुवक पुत्रों ने अपने अपने पिताओं के आशीर्वाद से गांव बसा दिया। माईधर पानू छः माह रहकर अपनी 1200 बीघे जमीन भोला नम्बरदार को बेचकर पुट्ठी वापिस चला गया। गांव में जोत भूमि 6 हजार बीघा है, जनसंख्या 1726 घर 337, मतपत्र 1250 वार्ड 8 हैं। इसमें 94 घर गिल पाने के, 92 के करीब बूरा पाने के, 20 घर दर्जियों के जो पुट्ठी से ही आए हैं, 2 घर नाई, 6 घर पंडितों के, 5 घर बाल्मीकि के, 2 घर लोहान जाटों के हैं। एक सरपंच, एक चौकीदार, 8 पंच, तीन नम्बरदार श्री जिलेसिंह गिल, श्री भीमसिंह गिल व सुरेन्द्र लोहान हैं। गांव का सबसे बड़ा जमींदार राममेहर पुत्र जोगीराम है तथा श्री वजीर सिंह लोहान 90 वर्षीय सबसे बड़ा बुजुर्ग है। भोला नम्बरदार के वंशजों की भैण व सिसर दोनों गांवों में जमीन व दोनों गांवों की नम्बरदारी है। यह राजा जीन्द के करीबियों में माना जाता था। राजा ने भोला नम्बरदार के लिए चितंग नहर से अलग मोगा (मोरी) लगा रखी थी। गांव में पांच कुए हैं। आजकल इसमें से दो का पानी प्रयोग नहीं किया जाता। पीने के पानी की सप्लाई पाईपों द्वारा ईटल कलां गांव से होती है। एक काफी पुराना माता का मन्दिर है। गांव की फिरनी तथा सभी गलियां पक्की बनी हुई हैं। मिडल स्कूल, आंगन बाड़ी केन्द्र 90 प्रतिशत घरों में शुलभ शौचालय, मुख्य फसल गेहूं, जीरी, कपास, बाजरा ही बोया जाता है। खेती के लिए पानी 6-ए राजवाहा व नलकूपों से लगता है।

गांव में आज तक के सरपंचों के नाम

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	जाति
1.	श्री रिसाल सिंह न्याय पंच	श्री रणजीत सिंह	जाट
	श्री गिरधाला पंच	श्री अमीलाल	ब्राह्मण
	(संयुक्त पंचायत जाजवान के साथ)		
2.	श्री मथुराराम	श्री नेकीराम	जाट
3.	श्री मथुराराम	श्री नेकीराम	जाट

4.	श्री भालसिंह	श्री रिसाल सिंह	जाट
5.	श्री भालसिंह	श्री रिसाल सिंह	जाट
	(कुछ समय के लिए दिलबाग बूरा व श्री भलेराम पर चार्ज रहा है)		
6.	श्री जोगीराम	श्री शीशराम	जाट
7.	श्री जोगीराम	श्री चन्दूराम	बाल्मीकि
8.	श्री सूरजमल पहलवान	श्री बनीसिंह	जाट
9.	श्रीमती गीना	पत्नी श्री छबीलाराम	चमार
10.	श्री मियासिंह	श्री हरिसिंह	जाट
11.	श्रीमती माया देवी	पत्नी श्री शीयाराम	जाट
12.	श्री ऋषिराम	श्री बलवीर सिंह	बाल्मीकि
13.	श्री विकास बूरा	श्री धर्मपाल बूरा	जाट

गाँव के लोग परिश्रमी हैं तथा मन लगाकर खेती-बाड़ी व पशु पालन के साथ काफी सरकारी सेवाओं में भी हैं। गाँव के पुराने पंचायतियों में स्व० भालसिंह पूर्व सरपंच श्री गिरधाला शर्मा, तुलसाराम, श्री भगवान सिंह, फूल्लूराम नम्बरदार, हरिसिंह आदि हुए हैं तथा आज के पंचायतियों में जो नौगामा खाप पंचायतों में भाग लेते हैं उनमें श्री सूरजमल बूरा पहलवान, सतपाल, मियासिंह बूरा, प्रदीप गिल, रामचन्द्र रोहिल्ला, धनराज गिल, रिषीपाल, बीरसिंह आदि हैं। गाँव का भाईचारा बढ़िया है। गांव के लोग सामूहिक कार्य में सभी एक हो जाते हैं।

गाँव के गणमान्य, सम्मानित, अधिकारी व वकील आदि

1. श्री गोपीराम गिल, मुख्याध्यापक (सेवानिवृत्त)
2. कैप्टन कपूर सिंह गिल, सेवानिवृत्त, पूर्व सचिव जिला सैनिक बोर्ड जीन्द
3. श्री जयप्रकाश बूरा, खण्ड शिक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
4. डॉ० खजान सिंह बूरा, अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक अमेरिका
5. श्री नवजीत सिंह बूरा, Asstt. XEN खेदड़ प्लांट
6. श्री भरतसिंह गिल, स्वतन्त्रता सेनानी
7. श्री सूरजमल पहलवान, पूर्व सरपंच एवं सदस्य सर छोटूराम विचार मंच
8. श्री भलेराम गिल, स्वतन्त्रता सेनानी (आई.एन.ए.)
9. श्री सुभेराम गिल, स्वतन्त्रता सेनानी (आई.एन.ए.)
10. श्रीमती डॉ० पिंकी बूरा, फूड एण्ड न्यूट्रेशन में प्रो० एण्ड हैड ऑफ डिपार्टमैंट (HAU) Hissar

11. श्री अभिजीत बूरा, (एन.आर.आई.) मैनेजर अमरीका
12. श्रीमती सावित्री बूरा, स्कूल प्राध्यापिका (हिन्दी)
13. श्री केदार सिंह गिल, स्वतन्त्रता सेनानी
14. श्री जयपाल बडगुजर, एक्स.ई.एन.
15. श्रीमती कौशल्या बड़गुज्जर, असिस्टेंट प्रोफेसर
16. प्रदीप गिल, इनेलो प्रदेश प्रभारी एवं एम.डी. बाल विकास सी० सै० स्कूल, जलालपुर कलां रोड, जीन्द जँक्शन
17. अनिता गिल पत्नी श्री प्रदीप गिल, पूर्व जिला पार्षद
18. स्व० विजय सिंह गिल, एस.डी.ओ. (सेवानिवृत्त)
19. श्री बलजीत गिल, एस.डी.ओ. (रि०)
20. श्री धूपसिंह गिल, एस.डी.ओ. (रि०)
21. श्री दलीप सिंह गिल वकील, पूर्व ए.आई.सी.सी. सदस्य
22. श्री फूल कुमार गिल, मुख्याध्यापक
23. श्री जगफूल गिल, जिला उद्यान अधिकारी
24. श्री इन्द्रजीत गिल वकील आयकर, बिक्रीकर
25. श्री जितेन्द्र सिंह गिल, विकास अधिकारी, एल.आई.सी.
26. श्री राजेश गिल वकील
27. श्री कर्मपाल गिल, मुख्य ब्यूरो दैनिक जागरण

चौ० गुगन सिंह गिल

चौ० गुगन सिंह का जन्म चौ० शीशराम के घर गांव ईटल खुद में 1887 ई० में अष्टमी से अगले दिन गुगानौमी के दिन हुआ था। इसीलिए उनका नामकरण गुगन सिंह कर दिया। वह अपनी माता-पिता की इकलौती संतान थे। इनका विवाह 14 वर्ष की आयु में लाखन माजरा (रोहतक) की इन्द्राणी से हो गया। इनकी कोख से चार पुत्र किशन लाल, चन्दनसिंह, रामस्वरूप तथा भरतसिंह व दो पुत्री पैदा हुईं। जब इनकी आयु 17-18 वर्ष थीउनके पिता का देहान्त हो गया और घर का सारा भार उनके कन्धों पर आ गया। इसके बाद वह बहुत मेहनत से खेती-बाड़ी करने लग गए। एक दिन जब वह बैलों को लेकर हल जोतने खेत में जा रहे थे तो रास्ते में ही पौ फट गई (सवेरा हो गया) तो वहीं बैठ कर रोने लग गए, पीछे से पहुँचे उनके ताऊ नेकी राम ने पूछा बेटे गूगन क्यों रो रहे हो तो वह कहने लगे ताऊ खेत में पहुँचने से पहले ही सवेरा हो गया मैं कब हल जोडूंगा और क्या कमाऊंगा। उनके ताऊ ने समझाया कि बेटा कोई बात नहीं तुम्हारे जितनी उम्र के लड़के तो डांगर चराने जाते हैं जो दिन निकलने के बाद घर के बाहर निकलते हैं। ऊठ खड़ा हो और हल जोत। युवा अवस्था में इतनी लगन हो तो आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि उन्होंने आगे चलकर कितनी कमाई की होगी। बेटा भरतसिंह सेना में भर्ती हो गया। वह अपनी ट्रेनिंग पूरी करके पहली बार घर पर छुट्टी आया था तभी दूसरा विश्व युद्ध शुरू हो गया, छुट्टी रद्द होने पर वह जर्मन में युद्ध बन्दी हो गया और बन्दी कैम्प में ही उसकी मृत्यु हो गई। चन्दनसिंह, किशनलाल, रामस्वरूप ने उनके साथ मिलकर मेहनत के बल पर तीन हलों की खेती में दो जोड़ी बैलों व एक ऊँट से जमीन जोती, जब तीन हलों से भी काम नहीं चला तो वर्ष 1957 में उन्होंने जमर्नी का बना हुआ 60 हार्स पावर का MAN ट्रैक्टर जो उस समय 16000 रुपये का खरीदा था। चौ० गूगन सिंह के पास पैत्रिक 44 एकड़ जमीन थी, पिता पुत्रों ने मेहनत के बल पर अपने जीवन काल में 80 एकड़ जमीन खरीद ली थी। चौ० गूगन सिंह एक त्याग की मूर्ति थे। उन्होंने खरीदी हुई 80 एकड़ जमीन में से 40 एकड़ जमीन अपने ताऊ चौ० नेकीराम के पुत्रों गंगाराम व मसुदी राम के नाम कराई और पैसों के लिए कभी कोई दबाव नहीं दिया जब उन्होंने दिये ले लिये। आज के जमाने में भाइयों के लिए इतना बड़ा त्याग कोई फरिश्ता ही कर सकता है। वह बहुत ही मेहनती, दूरदर्शी व बात के धनी के साथ बड़े दानी व कोमल हृदय वाले इन्सान थे। वे बेहद सफाई पसन्द तथा सुन्दर मकान बनाने के शौकीन थे। वर्ष 1950 के दशक में उनके लम्बे चौड़े नौहरे में बैठक में 50 निवार के पलंग जिन पर सफेद चादर सिली हुई थी

बैठक की शोभा बढ़ाते थे। उनके द्वारा बनाया हुआ पटियाला चौक पर गिल भवन जीन्द शहर में एक चिन्हित भवन काफी पुराना है। मिर्जपुर का डूम (मिरासी) गाया करता था- ''**गूगन जाट है सीसर में कलका गण्डासा (चक्कर आला) लुआरा सै, घोड़ा बादामी राखे चढ़ण ने, अर बड़ा फरसी (पीतल) होक्का बन्धारा सै।**'' उसने बादामी रंग का घोड़ा खरक कैलंगा (रोहतक) से 100 रुपे में वर्ष 1940 में खरीदा था। इनके आठ पोते हुए जिनमें चार पोते सरकारी सेवाओं में राजपत्रित अधिकारी बने। उनमे विजय सिंह ने वर्ष 1964 में सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा करने के बाद गांव का पहला जे.ई. लगा और वर्ष 1999 में उप मण्डल अधिकारी सेवानिवृत्त हुआ। बलजीत सिंह गिल व धूपसिंह गिल PWD (B&R) में जे.ई. के पद पर तैनात हुए और दोनों उपमण्डल अधिकारी के पद से रिटायर हुए।

कैप्टन कपूर सिंह गिल वर्ष 1964 में भारतीय सेना में सैकेण्ड लेफ्टीनेंट बना जिसने 1965 के भारत-पाक युद्ध में स्यालाकेट सैक्टर में भाग लिया तथा वर्ष 1969 में फौज के लिए स्वास्थ्य दृष्टि से अयोग्य होने के कारण पैंशन भेज दिया। यह गांव के पहले एकमात्र सैन्य अधिकारी हैं और खाप के तीसरे नम्बर के हैं। कॉलेज में पढ़ते-पढ़ते सीधा कमीशन पाने वाले नौगामा के पहले अधिकारी बने। इन्होंने छोटूराम पोलीटैक्नीकल रोहतक में डिप्लोमा इन्जीनियरिंग के अन्तिम वर्ष में होते हुए कमीशन के लिए चयनित हुए तथा पढ़ाई बीच में छोड़कर ओ.टी.एस. मद्रास से ट्रेनिंग लेकर सेना में कमीशन प्राप्त किया। आप वर्ष 1977 में जिला सैनिक बोर्ड में सचिव के पद पर लगे व 22 वर्ष तक 7 जिलों में अपने पूर्व सैनिक भाइयों व उनके परिवारों की सेवा की। जून, 1982 में पूरे भारत वर्ष में पूर्व सैनिकों के लिए भिवानी में सीएसडी कैन्टीन खुलवाई जिसके बाद पूर्व सैनिकों के लिए सीएसडी कैन्टीन खोलने का प्रावधान हुआ। तदानुसार वर्ष 1988 में जीन्द तथा वर्ष 1992 में कैथल में कैन्टीन खुल गई। आप 22 वर्ष की सेवा के बाद वर्ष 1999 मं सेवामुक्त हुए। अत: आज दो पैंशन (भारत सरकार रक्षा मंत्रालय व हरियाणा सरकार से) ले रहे हैं। कैप्टन गिल व इनकी धर्मपत्नी ब्रह्मलता गिल गांव का पहला जोड़ा है जो वर्ष 1999 से 2017 के बीच इंग्लैण्ड, अमेरिका व कनाड़ा का 7 बार (3 से 6 मास प्रवास) भ्रमण कर चुके हैं। चौ० गूगन सिंह के पोतों के साथ उनके दो पड़पोते कर्मपाल गिल चीफ ब्यूरो दैनिक

जागरण, राजेश कुमार गिल जीन्द कोर्ट में सीनियर एडवोकेट हैं। कैप्टन गिल की बड़ी बेटी गीता गांव की पहली स्नातक बेटी है, वर्ष 1981 में बी.ए. में पढ़ते समय पंजाब, हरियाणा एवं हिमाचल में एन.सी.सी. की बेस्ट कैडेट घोषित हुई थी। यह खिताब पाने वाली खाप की एकमात्र पहली बेटी है। वर्ष 1995 में DAFFODIL FLORIST के नाम से पुष्प सज्जा का काम शुरू किया और वह दिल्ली तथा गुरुग्राम की पहली FLOWER DECORATER है। वर्ष 1997 से 2005 तक पी.एम. हाउस व आर्मी हाउस की पुष्प सज्जा तथा इण्डिया गेट पर शहीदी स्मारक पर चढ़ाई जाने वाले पुष्प चक्र इन्हीं द्वारा तैयार किए जाते थे। भारत के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जब वर्ष 2005 में हिसार छावनी में आए तो उनके स्टेज पर पुष्प सज्जा का जिम्मा आर्मी हैडक्वाटर ने गीता को सौंपा था। गीता कई विदेशों यूरोप, अमेरिका व कनाड़ा का भ्रमण कर चुकी है। टोरन्टो (कनाड़ा) में भारत के स्वतन्त्रता दिवस परेड में भी दो बार हिस्सा ले चुकी है। पूनम गिल नेहरा पुत्री कैप्टन गिल जो आज कल कनाड़ा निवासी हैं ने वर्ष 1995 में एम.एस.सी. (भूगोल) में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान ग्रहण किया तथा उसने राजकीय (पी.जी.) कॉलेज, हिसार में मिस एस.एस.सी. 1995 के खिताब से नवाजा गया। यह गांव की पहली पोस्ट ग्रेजुएट बेटी है। इन तीनों ने भी चौ० गूगन सिंह गिल की शोहरत को और चमकाया है। उनके समय में जीन्द संगरूर जिले की तहसील होती थी। जीन्द तहसील में चौ० गुगन सिंह का नाम था और दूर-दूर तक उनको जानते थे। चौ० गूगन सिंह उनके परिवार के सदस्यों, बेटों, पोतों, पोतियों के नाम गांव तथा नौगामा खाप में कई कीर्तिमान हैं। ऐसे महान आत्मा का 88 वर्ष की आयु में अक्तूबर 1975 में गांव के अव्वल परिवार और नौगामा खाप के एक स्तम्भ का देहान्त हो गया। उस समय उसके परिवार में 50 सदस्य थे जो आज गांव जीन्द, हिसार, गुड़गांव तक ही सीमित नहीं वरन् अमेरिका, कनाड़ा व आस्ट्रेलिया तक फैले हैं। अन्त में मैं प्रभु से उनकी आत्मा की शान्ति की प्रार्थना करता हूँ।

उनके पौत्र कै० कपूर सिंह गिल के सौजन्य से

❑❑❑

16. गाँव गोबिन्दपुरा (शादीपुरा)

यह गाँव खण्ड जीन्द विधानसभा क्षेत्र जुलाना लोक सभा क्षेत्र सोनीपत में नई अनाज मण्डी के साथ रेलवे लाईन से दूसरी तरफ आबाद है7 आज से करीब 300 वर्ष पूर्व विक्रमी संवत् 1772 सन 1715 ई० में चौ० शादीराम जाट नामक व्यक्ति ने दोलड़ी गांव से आकर राजा जीन्द से मालियाना पर जमीन लेकर बस गया और इसी के नाम से इस गांव का नामकरण शादीपुरा हो गया। महाराजा जीन्द ने सरदार शेरसिंह सिबिया को वर्ष 1948 में 14000 बीघे जमीन देकर इस गांव का मालिक बना दिया और वर्ष 1950 में इस गांव का नाम गुरु गोविन्द सिंह महाराज के नाम से रिकार्ड में गोविन्दपुरा हो गया। इस गांव में 250 घर चमार, 40 घर सैनी, 30 घर कुम्हार, 30 घर अहीर, 5 घर जट्ट सिख व जाट, 6 घर राजपूत, 4 घर झीमर, 20 घर हेड़ी (नायक), 25 घर बाल्मीकि कुल 410 घर हैं। सरदार तेगबीर सिंह सिबिया, हवासिंह, लखीराम तीन नम्बरदार, हवासिंह चौकीदार है। जनसंख्या 1888, मतपत्र 1228, एक सरपंच, 9 पंच हैं। श्री मांगेराम पुत्र श्री कन्हाराम सबसे बड़ा पुरुष है। 14 हजार एक कुल जमीन में 350 एकड़ गोविन्द पुरा में है जिसमें से बहुत ही कम कीमत पर गांव में बसने वालों को प्रत्येक को पांच-पांच एकड़ दे दी। 250 एकड़ गाँव धिमाना, 200 एकड़ बिशनपुरा को, 100 एकड़ लाला जीवनदास को 100 एकड महेन्द्रा फार्म के नाम हो गई। नई अनाज मण्डी भिवानी रोड बुढ़ा बाबा के पास की मार्किट इसी गांव की जमीन में है।

ग्राम पंचायत का ब्यौरा :-

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	जाति	अवधि
1.	स० तेगवीर सिंह सिबिया	स० गुरबक्श सिंह	जट्ट सिख	1952-1972
2.	श्री कूड़ाराम	श्री जगुराम	चमार	1972-1978
3.	स० तेगवीर सिंह सिबिया	स० गुरबक्श सिंह	जट्ट सिख	1978-1983
4.	श्री रामचन्द्र	श्री धनसिंह	अहीर	1983-1988
5.	श्री सिंघराम	श्री मामचन्द	सैनी	1988-1991
6.	श्री रामसिंह	श्री हरीदयाल	सैनी	1991-1994
7.	श्री सिलकराम	श्री पूर्णमल	चमार	1994-1996
8.	श्री सतबीर नागर	श्री सुखलाल	धानक	1996-2000
9.	श्रीमती अंगूरी देवी	पत्नी श्री भीमसिंह	चमार	2000-2005
10.	श्री बनवारी	श्री चन्दूराम	अहीर	2005-2010
11.	श्री धर्मसिंह	श्री बिच्छाराम	चमार	2010-2015

12. श्री सुरेश यादव श्री मोलाराम अहीर 2015 से .....

गाँव की जमीन उपजाऊ है। लोग खेती-बाड़ी करना, सब्जी उगाना, दूध बेचने आदि का काम करते हैं। गांव में मिडल स्कूल, 4 चौपाड़, दो मन्दिर, दादा खेड़ा, अम्बेडकर भवन, राजीव गांधी युवा केन्द्र, 2 आगनबाड़ी, बूढ़ा बाबा का बुढ़ा बस्ती में पुराना मन्दिर, सभी गलियां पक्की, 90 घरों में शुलभ शौचालय है, सरकारी नौकरियों में बहुत कम लड़के हैं। श्री सीताराम बैंक मैनेजर है। स० गुरबक्श सिंह सिबिया पूर्व मन्त्री, बिशना राम, मामचन्द सैनी, पुराने पंचायती रहे हैं। स० तेगबीर सिंह सिबिया नम्बरदार, लखीराम, हवासिंह, सिंगराम सैनी, धर्मसिंह पूर्व सरपंच नये पंचायती हैं, जो नौगामा खाप की पंचायतों में जाते हैं।

सरदार गुरबक्स सिंह सिबिया (पूर्व मंत्री पंजाब)

इनका जन्म 11 अक्तूबर 1921 को सिबिया हवेली संगरूर (पंजाब) में सरदार शेरसिंह सिबिया सैशन जज जीन्द रियासत एवं माता बसन्त कौर के घर हुआ। शिबि (सिबिया जाटों) को तो यूनानी भी जानते हैं और भारतीय भी। पंजाब में तथा चित्तौड़ (मेवात) जहां खुदाई के दौरान इनके सिक्के उपलब्ध हुए हैं वे भी जानते हैं। (लेख जाट समाज पत्रिका मास अगस्त 2015 से) माता बसन्त कौर धर्म-कर्म में विश्वास रखती थी, वह हर रोज गुरुद्वारा जाना समय-समय पर घर में गुरुवाणी का अखण्ड पाठ भी करवाती थी तथा हृदय से बड़ी दयालु थी। इनके भाई रणधीर सिंह गांव नारंगवाला बड़ा देशभक्त व क्रान्तिकारी था जैसे वीर सावकर थे जो आजादी की लड़ाई मे कई वर्ष काला पानी, मुलतान व लाहौर आदि जेलों में रहा। आपका बचपन रजवाड़ों के बच्चों की तरह गुजरा। आपके दादा सरदार महासिंह व पड़दादा सरदार दयासिंह जीन्द रियासत में नाजम रहे। आपकी प्राईमरी व हाई स्कूल की शिक्षा सरकारी स्कूल संगरूर, एफ.ए. खालसा कॉलेज, अमृतसर से पास की। आपका विवाह गांव कोटशेरा जिला गुजरावालां पंजाब (अब पाकिस्तान) के संयुक्त पंजाब के सबसे बड़ जमींदार स० मंगल सिंह मान की पुत्री बेअन्त कौर के साथ हुई। इनकी कोख से दो पुत्र सरदार तेगवीर सिंह व सरदार करणवीर सिंह तथा चार पुत्रियां पैदा हुई। इस परिवार पर जीन्द रियासत के जितने भी राजा हुए सभी का पूरा भरोसा रहा। इन्होंने अपने सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाकर उनके रिश्ते उच्च एवं खानदानी परिवारों में कर रखे हैं। जीन्दरियासत के लोगों को आजादी 9 मई 1948 को मिली, रियासत जीन्द के अन्तिम राजा रणवीर सिंह न इस परिवार को गांव शादीपुरा के अन्दर

14 हजार बीघा जमीन दे दी। जीन्द के आसपास के लोग सरदार गुरबक्श सिंह सिबिया को शादीपुरा फार्म वाले के नाम से पुकारते थे। यह परिवार सिक्ख धर्म से सम्बन्ध रखता है, इसलिए वर्ष 1950 में गांव का नाम शादीपुरा से गुरु गोविन्दसिंह के नाम से गोविन्दपुरा रख दिया। आजादी के बाद आपने वर्ष 1955 में सफीदों विधानसभा क्षेत्र से अकाली दल पार्टी से चुनाव लड़ा परन्तु मात्र कुछ वोटों से चुनाव हार गए। वर्ष 1958 में आप मार्किट कमेटी जीन्द के चेयरमैन रहे तथा अनाज मण्डी व सब्जी मण्डी में काफी काम करवाए। वर्ष 1962 में चेयरमैन जिला परिषद् संगरूर, वर्ष 1969 में कांग्रेस के टिकट पर संगरूर से विधायक बने। 1972 में संगरूर से फिर विधायक बने और उस समय पंजाब के बिजली व सिंचाई मंत्री बने। इस काल में जमींदारों को पानी व बिजली पूरी तरह मिलती थी। इनके काल में काफी रजवाहों को पक्का करवाया गया। यह भारत की आजादी के लिए भी लड़े तथा फरीडम फाईटर रहे। वर्ष 1945 के भारत छोड़ो आन्दोलन में इन्होंने बढ़-चढ़करभाग लिया, जमीन की किलाबंदी (मुरब्बाबंदी) भी इनकी देन है। आपने काफी लड़कों को सरकारी नौकरी भी बिना भेदभाव के दिलवाई। आप गांव के नम्बरदार भी थे। आज आपके दोनों पुत्र आपके कदमों पर चलकर अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभा रहे हैं। आपकी चण्डीगढ़, संगरूर तथा गांव में बड़ी हवेलियां हैं। काफी सम्पत्ति व बड़ा जमींदारा होने पर आपने कभी घमण्ड नहीं किया। जब भी गांव आते थे हर छोटे-बड़ों को बड़े प्यार से मिलते थे। इलाके के उन्नतिशील कृषक, अति प्रभावशाली, व्यक्तित्व दानवीर हमारे संरक्षक मार्गदर्शक सतत सहयोगी कुलीन परिवार, अनेक सामाजिक संस्थाओं के नि:स्वार्थ सहयोगी रहे हैं। कुछ समय बीमार रहने के बाद 10 मार्च 1980 को आप इस संसार को छोड़ कर चले गए। मैं अन्त में वाहेगुरु से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए अरदास करता हूँ।

इनकी वंशावली : स० कंवरवीर सिंह सुपुत्र सरदार तेगवीर सिंह, सरदार गुरु सिमरण सिंह पुत्र स० करणवीर सिंह सुपुत्र स० गुरबक्श सिंह सुपुत्र स० शेरसिंह सुपुत्र स० महासिंह सुपुत्र स० दयासिंह सिबिया।

(सरदार करणवीर सिंह सिबिया के सौजन्य से)

❑❑❑

17. रामराय खेड़ा

यह भी एक छोटा सा गांव, खण्ड जीन्द विधानसभा क्षेत्र जुलाना, नौगामा खाप में हांसी रोड ईक्कस-भिवानी रोड बाईपास के साथ रामराय से पूर्व में 3 किलोमीटर ढाणी से 2 किमी, ईक्कस से 2 किलोमीटर तथा रामगढ़ से 3 किलोमीटर दूरी पर इन सभी गांव के मध्य में आबाद है। पहले यहां रामराय गांव से चौ० श्योलाराम पुत्र श्री रूघा व चौ० गणेशीराम पुत्र श्री रूहला अपने खेतों में मकान बनाकर विक्रमी संवत् 1992 सन् 1935 में रहने लग गए क्योंकि इनके खेत गांव रामराय से काफी दूरी पर थे। यहां पर पहले छोटी सी ढाणी बनी थी, बाद में गांव का रूप ले लिया। कुछ समय बाद रामराय से और भाई भी आकर बस गए। आज इस गांव में 115 के करीब घर केवल जाट जाति और ढुल गोत्र ही बसते हैं। अन्य जातियों से काम करवाने के लिए रामराय गांव जाना पड़ता है। रामराय गांव से निकासी होने के कारण पहले इसे खेड़ा कहा जाता था फिर सरकारी रिकार्ड में इसका रामराय खेड़ा हो गया। इस वर्ष से पहले रामराय व खेड़ा की एक पंचायत बनती थी और यहा से दो पंच बनते थे। निवर्तमान पंचायत में श्री रणधीर सिंह व श्री नरेन्द्र सिंह पंच थे। इस वर्ष से गांव की पंचायत का अलग गठन कर दिया गया है और 6 वार्ड बना दिये हैं। अब एक सरपंच व 6 पंच चुने जाएंगे।

गांव में जोत भूमि बहुत ही उपजाऊ है। गांव की जनसंख्या 524, मतपत्र 390, कुढिया 115 है। डॉ० धर्मसिंह ढुल पुत्र श्री गणेशी राम ढुल सबसे बड़ा बुजुर्ग व्यक्ति है। चौ० दीवान सिंह ढुल सबसे बड़ा जमींदार है। फूलसिंह पुत्र श्री रामजी लाल का संयुक्त परिवार है। स्व० मुख्याध्यापक धर्मपाल ढुल पुराना पंचायती रहा है, गांव में प्राईमरी स्कूल, गलियां पक्की, दादा खेड़ा चौपाड़, तालाब है। आज के प्रमुख लोगों में डॉ० धर्मसिंह ढुल, श्री तिजेन्द्र सिंह ढुल वकील जिला प्रधान किसान सैल भाजपा, श्री रणधीर सिंह ढुल व श्री हितेन्द्र सिंह ढुल, भरतसिंह ढुल, श्री रामकुमार ढुल उप निरीक्षक रोडवेज है। गांव का भाईचारा बढ़िया है, रामराय व रामराय खेड़ा की जमीन का रकबा इकट्ठा है। सभी मकान पक्के और गलियां खुली-खुली तथा काफी चौड़ी हैं। सभी घरों में शुलभ शौचालय बने हुए हैं।

❑❑❑

18. ढाणी (रामगढ़)

इस गाँव को बीड़ वाली ढाणी के नाम से जाना जाता है। सरकारी रिकार्ड जमाबन्दी में आज भी इसका नाम रामगढ़ ढाणी है। यहां पर सरदार प्रताप सिंह कैरों पूर्व मुख्यमन्त्री पंजाब को रियासत के समय राजा ने 2400 बीघा जमीन अलाट कर रखी थी। आजादी से पहले कैरों साहब की जमीन को मुजारों ने खेती-बाड़ी के लिए ठेके पर ले रखा था तथा कुछ लोग यहां पर ढाणी बनाकर रहते थे। यह गाँव जीन्द हाँसी मार्ग पर पुराने हाँसी रोड मेसर पुल नहर के साथ जीन्द मुख्यालय से 5 किलोमीटर की दूरी पर बड़ाबीड़ वन के साथ दक्षिण में स्थित है। यह नौगामा खाप जुलाना विधानसभा क्षेत्र जीन्द ब्लॉक में है। यह गाँव ठेके का कहलाता था। विक्रमी संवत् 1956 सन् 1900 में कुछ अन्य गांव व जातियों के लोग यहां पर रहने लग गए। आज गांव 1020 मतपत्र, 8 वार्ड एक सरपंच, एक चौकीदार प्रेम सिंह, श्री बलवीर सिंह नम्बरदार है। गांव की जनसंख्या 1604 तथा 304 कुटियों का छोटा सा गांव है। जिसमें 202 घर चमार (काजल, महल, सिंहमार, मेहरा, रंगा) जो अलग-अलग जगह से आए हैं। 12 घर धानक (खटक, खन्ना), 26 घर कुम्हार, 35 घर सैनी (सिंहमार), 28 घर जोगी (कटारिये), 1 घर जाट (सिंहमार) झांजकला से आकर बसा है। सरदार कैरों ने एक अपना व्यक्ति को जमीन का ठेका लेने के लिए छोड़ रखा था। वह जमीदारों (मुजारों) को काफी तंग करता था तथा काफी दंगे फसाद होते रहते थे। वर्ष 1962 में कैरों साहब ने एक सोसायटी बनाकर 800 बीघा जमीन मुजारों (जो काश्तकार थे) को कम रेट पर तथा 1600 बीघा जमीन भिन्न-भिन्न गांवों से आए लोगों को बेचकर उनके नाम करवा दी। इस गांव की पंचायत 1982 तक रामगढ़ के साथ बनती रही, और सरकार ने वर्ष 1983 में अलग पंचायत का गठन कर दिया है। पंचायत का ब्यौरा निम्न प्रकार है:-

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	जाति	कार्यकाल
1.	श्री वेदप्रकाश	श्री मुगलाराम	कुम्हार	1983-1988
2.	श्री हरिसिंह	श्री रतीराम	सैनी	1988-91
3.	श्री सदाराम	श्री मोलूराम	चमार	1991-94
4.	श्री टेकराम	श्री हरद्वारी	चमार	1994-2000
5.	श्री राजबीर सिंह	श्री देवीराम	जोगी	2000-2005
6.	श्री बिमला देवी	पत्नी श्री रामचन्द्र	चमार	2005-2010
7.	श्री फूलकुमार	श्री हरद्वारी	चमार	2010-2015

8. श्रीमती मैनादेवी पत्नी श्री मुन्नाराम कुम्हार 2015-....

इस गाँव का सबसे बड़ा जमींदार श्री मोलूराम पुत्र श्री झण्डूराम जाति चमार 25 एकड़ जमीन व नम्बरदार था। गांव के लगभग 21 पुरुष सरकारी नौकरियों में हैं या कुछ सेवानिवृत्त हो चुके हैं जिनमें कुछ राजपत्रित अधिकारी भी हैं। गांव में पाण्डवों के समय का प्राचीन ईगराही देवी का मन्दिर है जिसके नाम 12 एकड़ जमीन है। लोग यहां पूजा करते हैं। बाबा सुखदेव मुनि गौशाला ढाणी (रामगढ़) के नाम नौगामा के 21 गांवों की एकमात्र गौशाला है जिसका निर्माण बाबा सुखदेव मुनि ने भूमि खरीद कर करवाया है। बाद में नौगामा खाप के बहुत बड़ी सहयोग धनराशि के रूप में मिली है। गांव में 2 चौपाल, 2 मन्दिर, प्राईमरी स्कूल, गांव में तालाब नहीं है। गांव के सरकारी सेवा के अधिकारी व गणमान्य व्यक्ति :-

1. स्व० मोलूराम पुत्र श्री झण्डूराम महल नम्बरदार
2. चौ० भीमसिंह सिंहमार (आई.पी.एस.) पुलिस अधीक्षक (रिटायर्ड)
3. चौ० रामचन्द्र महल, मुख्याध्यापक (रिटायर्ड)
4. श्री भीमसिंह काजल, ए.एफ.एस.ओ. (रिटायर्ड)
5. श्री फत्तेसिंह, मुख्याध्यापक (रिटायर्ड)
6. श्री धर्मबीर मुख्याध्यापक (रिटायर्ड)
7. श्री प्रवीन महल, असिस्टेंट अधीक्षक जेल (देहली)
8. श्री रामसिंह, असिस्टेंट मैनेजर बैंक
9. श्री अशोक कुमार प्राध्यापक
10. श्री सतीश कुमार, मुख्याध्यापक
11. मा० गोपीराम
12. मा० लखमीचन्द
13. सूबेदार जागरसिंह
14. श्री धनसिंह पूर्व सैनिक

गांव में 85 प्रतिशत शुलभ शौचालस हैं। सरकार द्वारा घोषित हवाई पट्टी निर्माणाधीन है। गांव की जमीन बढ़िया है। गेहूं व जीरी मुख्य फसल हैं। श्री मोलूराम पुराना पंचायती व्यक्ति था। आजकल मा० रामचन्द्र, श्री फूल कुमार गांव के नये पंचायती हैं जो खाप की पंचायतों में जाते रहते हैं। गांव का भाईचारा बढ़िया है। सभी मिल जुलकर रहते हैं। गांव की गलियां व फिरनी पक्की बनी हुई हैं।

❑❑❑

19. बागनवाला

यह गाँव रामराय से पश्चिम दिशा में 4 किलोमीटर की दूरी पर खण्ड जीन्द विधानसभा क्षेत्र जुलाना में पड़ता है। यह एक छोटा सा गांव बिना पंचायत का है क्योंकि आबादी में केवल करीबन 86 घर ही हैं। गांव से दो पंच बन कर गांव रामगढ़ की पंचायत में शामिल होते हैं। गांव मतपत्र 290 के लगभग हैं। जनसंख्या 431 है। इस गांव में 46 घर खाती जाति के धामू, लेण्डीवाल, बोन्दवाल व जाले गोत्र के हैं तथा 40 घर बैरागी सांगवान गोत्र के हैं। जानकार लोगों अनुसार आज से लगभग 130 वर्ष पूर्व यानि सन् 1885 में एक वरिष्ठ श्री श्यामसुख पुत्र श्री धनिया जांगड़ा ने गांव बागनवाला (तोशाम) से आकर गांव पौकरी खेड़ी के टक से 1600 बीघे जमीन मोल लेकर बस गया था। इसके साथ सांगवान बैरागियों का बुजुर्ग भी बागनवाला से साथ आकर बस गया था। यह लोग बागनवाला से आए थे इसलिए गांव का नाम बनगवाला ही रख दिया। परन्तु अन्य जानकारों के अनुसार गांव का नामकरण राग बागेश्री थाट पर आधारित है जिसका नाम बागे राग पर आधारित राजा जीन्द ने बागनवाला रखा था। जो तीसरे पहर में गाया जाता है। श्री धनीराम जांगड़ा के दो पुत्र थे जिनमें जमना राम के छः पुत्रियां थी परन्तु प्रभुराम निःसंतान था। श्री जमनाराम ने पुत्र न होने के कारण अपने जमाइयों को घर जमाई के रूप में अपनी जमीन देकर यहां बसाया था। अन्य जांगड़े भी कम रेट पर जमीन लेकर बस गए और कुछ बैरागी भी कम रेट पर जमीन लेकर मुजारे बन गए, इनका अब तक कोर्ट में मुकदमा चल रहा है जिसमें जांगड़े जीत चुके हैं परन्तु जमीन पर कब्जा बैरागियों का ही है। गांव में श्री रामकुमार पुत्र उदमीराम व श्री कृष्ण पुत्र श्री बालूराम जांगड़ा नम्बरदार है। मिनी बैंक राजपुरा (भैण) में, कानूनगो गुनकली में चौकीदार पोकरी खेड़ी वाला है। चौ० धनीराम राजा जीन्द का खास आदमी था तथा पुराना पंचायती था। आज गांव में श्री फूलाराम जांगड़ा सबसे बड़ा बुजुर्ग है। गांव के लोग खेती बाड़ी, मिस्त्री कार्य, दूध बेचने का काम भी करते हैं। जमीन उपजाऊ है। गांव की गलियां पक्की हैं। 90 प्रतिशत घरों में शुलभ शौचालय है। दो तालाब, प्राईमरी स्कूल, दादा खेड़ा भी है। श्री रमेश सांगवान प्रोफेसर, श्रीमती सुमन सांगवान प्रोफेसर तथा श्री रामनिवास जांगड़ा सहायक निर्देशक पी.डब्ल्यू.डी. बी. एण्ड आर. है। श्री राकेश जांगड़ा स्नातक है। श्री जयवीर बस स्टैण्ड रामराय पर डॉक्टरी की दुकान भी चलाता है। नये पंचायतियों में कृष्ण पुत्र श्री बालूराम, श्री रामसिंह, रामराजी, मनीपाल जांगड़ा, श्री रणजीत सिंह अध्यापक है जो नौगामा खाप की पंचायतों के सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेते हैं। ❑❑❑

20. कर्मगढ़

यह एक छोटा सा गांव खण्ड जीन्द विधानसभा क्षेत्र जुलाना, जीन्द-भिवानी रोड पर गांव धिमाना से थोड़ा सा पहले लिंक रोड पर आधा किलोमीटर पश्चिम की ओर स्थित है, इसके पश्चिम में रामगढ़ गांव है। इसका नामकरण के बारे में पता चला है कि पहले यह गांव ठेके का था। लाला कर्मचन्द ने राजा रणबीर सिंह से 150 एकड़ जमीन को मुजारे पर ली थी। लाला कर्मचन्द भूमि का मालिक होने के कारण इसका नाम कर्मगढ़ पड़ गया। सन् 1915 में चौ० ख्याली राम यादव ने यहां दादा खेड़ा बनाया था। यह कलवाड़ी (रिवाड़ी) से चलकर पहले छपर उसके बाद ढाणा, किशनपुरा बसने के बाद यहां लाला कर्मचन्द की भूमि मोल लेकर रहने लग गए। यह जमीन इनके नाम वर्ष 1948 मे चढ़ी।गांव में 45 घर अहीर, 16 घर सैनी (बागड़ी), 25 घर धानक (दुग्गल), 20 घर चमार, 1 घर बनिया, 1 घर लोहार, 1 घर कुम्हार, 1 घर झिमर कुल 110 घर, 552 जनसंख्या, 444 मतपत्र, वार्ड 2, पंचायत गांव धिमाना के साथ बनती है। गांव से 2 पंच चुने जाते हैं। गांव में एक नम्बरदारचौ० राजेन्द्र यादव है। श्री शेरसिंह यादव 80 वर्ष के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति हैं तथा चौ० मनफूल यादव बड़ा जमींदार है। गांव की आठों जातियों के लोग एक परिवार की तरह रहते हैं। गांव में कोई भी व्यक्ति अच्छी सरकारी नौकरी में नहीं है। केवल सुरेश कुमार यादव बी.ए., बी.एड. सरकारी अध्यापक है।

गांव की सभी गलियां पक्की व नालियां बनी हुई हैं। सभी मकान पक्के तथा हर घर में शुलभ शौचालय है। दो चौपाल, एक मन्दिर (भगवान श्री कृष्ण), प्राईमरी स्कूल, एक आंगनबाड़ी केन्द्र है। सभी बच्चे स्कूल जाते हैं। गांव की जमीन कम होने के बावजूद बहुत ही उपजाऊ है। लोग खेती बाड़ी, मजदूरी, सब्जी की खेती, दूध बचने आदि कार्य बड़े लगन लगाकर करते हैं। सभी का गुजारा बढ़िया हो रहा है। चौ० शेरसिंह यादव, श्री रामदास यादव व श्री कृष्ण चन्द्र पंचायती हैं, जो गांवों के कार्यों व नौगामा खाप की पंचायतों में भाग लेते हैं। इस गांव में किसी प्रकार का कोई मामला कोर्ट या थाने में दर्ज नहीं है।

❑❑❑

21. बस्ती सिरसाखेड़ी

सिरसा खेड़ी सरकार के रिकार्ड में गांव नहीं है परन्तु नौगामा खाप में उसकी गांवों में गिनती की जाती है। वैसे यह बस्ती सिरसा खेड़ी पोकरी खेड़ी गांव का भाग सरकार द्वारा माना जाता है। इसे गामड़ी के नाम से भी जाना जाता है। यह बस्ती रामराय-ईगराह लींक रोड पर रामराय से 4 किलोमीटर की दूरी पर है। यह बस्ती पूर्वज माईधन सैनी ने विक्रमी संवत् 1932 सन् 1876 ई० में सिरसा से यहां आकर जमीन मोल लेकर रहने लग गया था। यह जमीन पोकरी खेड़ी के टक में पड़ती है तथा एक बनिया से भी खरीदी थी। इसी कारण बस्ती का नाम चौ० माईधन सैनी ने सिरसा से आने के कारण सिरसा खेड़ी रख दिया। इसके बाद एक रामसिंह बड़सर गोत्र जाट गैली (महेन्द्रगढ़) से एक पुरुष पुनिया गोत्र खरक पुनिया से आकर बस गया। वह बाद में एक जाट राठी जिन्दराण (रोहतक) से अहीर रिवाड़ी से सैनी नरवाना से सिसवाल गोत्र के भी आकर बस गए। आज बस्ती में जाट, सैनी, अहीर, पण्डित, नाई आदि 69 घर हैं। जनसंख्या 809 मतपत्र 263 हैं। इस बस्ती से दो पंच चुने जाते हैं जो पोकरी खेड़ी की पंचायत में शामिल होते हैं। गांव में जोत भूमि 1600 बीघा उपजाऊ है। श्री सुरेश कुमार चौकीदार श्री बलवान सिंह सैनी नम्बरदार हैं। आज गांव में श्री मनीराम सैनी का संयुक्त परिवार है जिसमें एक छत के नीचे बैठकर 28 सदस्य खाना खाते हैं। आज के समय में यह एक बहुत बड़ी बात है। चौ० स्व० हरनारायण राठी बड़ा जमींदार है। चौ० नामराथ सैनी सबसे बड़ा बुजुर्ग पुरुष है। इस बस्ती में प्राईमरी स्कूल, चौपाड़, दादा खेड़ा, 2 तालाब, एक मन्दिर, कुआँ, सभी गलियां पक्की, 90 प्रतिशत घरों में शुलभ शौचालय है। यहां के लोग मेहनती हैं तथा मन लगाकर खेती बाड़ी व पशु पालन करते हैं। गेहूं,जीरी की मुख्य फसल है। श्री रामचन्द्र, श्री हेमचन्द, श्री हरनारायण आदि पुराने पंचायती रहे हैं। श्री वजीर बड़सर, डॉ० कश्मीर सैनी, श्री संदीप पुनिया, श्री महेन्द्र सिंह सैनी, श्री शमशेर सिंह बड़सर आदि नये पंचायती व समाज सेवी हैं जो इस बस्ती के हर सामूहिक कार्यों में भाग लेते हैं। इस बस्ती में उच्च शिक्षा प्राप्त व अच्छी नौकरियों में कोई नहीं है। केवल तीन लड़के सेना में देश की सेवा कर चुके हैं। इस बस्ती के भाइयों को जब भी नौगामा खाप की पंचायत की जानकारी दी जाती है तो यहां से दो तीन भाई जरूर जाते हैं। इस बस्ती के लोगों को चाहिए कि सरकारी अधिकारियों से मिलकर इस बस्ती को गांव के रूप में मान्यता प्राप्त करवाई जाए क्योंकि इस बस्ती में गांव की हर सुविधा है। मैं इस बस्ती के लोगों को बढ़िया मानता हैं। इनका भाईचारा बढ़िया व आपसी मेलजोल अच्छा है।

❑❑❑

22. जेलाखेड़ा (थेह)

यह जेला खेड़ा गांव उन नौगांवों (नौगामा) में शामिल था जो आजकल थेह रह गया है। श्री जैलाराम सैनी नामक व्यक्ति अपने परिवार के साथ बरवाला में रहता था। बरवाला शहर में रांगड़ो (मुसलमानों) का पूरा दबदबा था। वह हिन्दुओं को बहुत तंग करते थे। जैलाराम सैनी का परिवार इन रांगड़ों के जुल्मों से तंग रहता था। विक्रमी संवत् 1800 ई० के करीब जैलाराम सैनी का परिवार इस स्थान पर छोटी सी झोपड़ी बनाकर रहने लग गया। एक रांगड़ों का अत्याचार और दूसरा बरवाला का बरानी इलाका भी वहां से आने का कारण बना। इस स्थान पर बहुत बड़ा जंगल था। इस क्षेत्र का नाम का बन प्राचीन वन आधुनिक बराहवन या बीड़ के साथ चितंग नदी है। जैलाराम सैनी ने जंगल तोड़कर जमीन में फसल उगानी शुरू कर दी। जीन्द रियासत की स्थापना सन् 1763 में हुई। उस समय इस क्षेत्र की खाली पड़ी जमीन जिसका कोई मालिक नहीं था अपने कब्जे में लेकर अपने मुजारों को बसाना शुरू कर दिया और जैलाराम सैनी बुढ़ापे में राजा जीन्द से 65 एकड़ जमीन मोल मे ले ली जिसको बाद में राजा ने इसके नाम कर दिया। जैलाराम सैनी पंचायती व दिलदार आदमी था। जिसका नौगामा खाप में हर प्रकार का सहयोग होता था। वैसे इसके समय में खाप का गठन व खाप का चबूतरा नहीं बनाया गया था। इन नौगामों व इनमें से बसे छोटे-छोटे गांवों की पंचायत होती रहती थी। वह थेह के पास प्राचीन अजगराही देवी का स्थान है। इस देवी ने इस परिवार को श्राप दिया और श्राप के कारण इस परिवार की वृद्धि बहुत ही कम हुई। यह गाँव कुछ घरों में ही सीमट गया। विक्रमी संवत् 1928 सन् 1871 ई० के आसपास जब रामगढ़ गांव आबाद हुआ तो यह लोग इस जगह को छोड़कर गांव रामगढ़ में बस गए। आज रामगढ़ में इस खानदान के सैनियों का एक ठोला है जो पशुपालन व खेती बाड़ी से जुड़े हुए हैं। इनकी कुछ भूमि आज भी जंगलात महकमें के कब्जे में है। जैलाराम सैनी के वंशज आज गांव में बड़ी इज्जत के साथ सभी के साथ भाईचारा बनाकर रहते हैं। जैलाराम के नाम से इसे जैलाखेड़ा तथा जैले वाला गांव का नाम से पुकारते हैं। इस गांव (थेह) के बारे में खाप के लोग कम ही जानते हैं।

(श्री जिलेसिंह पूर्व सरपंच रामगढ़ के सौजन्य से)

❑❑❑

नौगामा खाप के वीर शहीदों की सूची

1. शहीद किसान गंगा नन्द ढूल ईक्कस, हिन्दी आन्दोलन निजाम हैदराबाद 1939
2. शहीद सिपाही सूरतसिंह ढुल, ईक्कस, जाट रेजिमेंट द्वितीय विश्वयुद्ध
3. श्री किसान पोहलूराम जागलान, जलालपुर कलां, मोठ लुहारी, 1947
4. किसान भूराराम जागलान (खाती), जलालपुर कलां, मोठ लुहारी, 1947
5. श्री हरिजन भलेराम खटक (धानक), जलालपुर कलां, मारकाट बक्सी हवेली, जीन्द, 1947
6. किसान राजमल ढुल, ईक्कस, मारकाट बक्सी हवेली, जीन्द, 1947
7. किसान कालूराम ढुल, पोकरी खेड़ी, मारकाट बक्सी हवेली, जीन्द, 1947
8. किसान मांगेराम खोखर धिमाना, मारकाट बक्सी हवेली, जीन्द, 1947
9. श्री गोपालराम हिन्दू लौहार धिमाना, मारकाट बक्सी हवेली, जीन्द, 1947
10. श्री अमरसिंह लोहान, राजपुरा भैण, हिन्दी आन्दोलन पंजाब, 1957
11. श्री स्वर्णसिंह लोहान, गुलकनी, हिन्दी आन्दोलन पंजाब, 1957
12. श्री सिपाही बिजेसिंह रेढू, ईगराह, इण्डो-पाक वार 1965
13. श्री नफेसिंह रेढू, ईगराह, जाट रेजिमेंट 1971
14. श्री दिलबाग सिंह रेढू, ईगराह, बी.एस.एफ., 1998
15. श्री दिलबाग सिंह खोखर, धिमाना, बी.एस.एफ. सांभा सैक्टर
16. हवलदार राजकुमार रेढू, ईगराह, अर्टालरी रेजिमेंट, आसाम 1998
17. श्री लासनायक आशीष महला घिमाना, राज राईफल कारगिल युद्ध 1999
18. किसान महासिंह लोहान, राजपुरा भैण किसान आन्दोलन 29-5-2002
19. श्री प्रकाश लोहान, राजपुरा भैण किसान आन्दोलन 29-5-2002
20. श्री दिलबाग सिंह लोहान, राजपुरा भैण किसान आन्दोलन 29-5-2002
21. श्री राजा लोहान, राजपुरा भैण किसान आन्दोलन 29-5-2002
22. श्री राजबीर (किसान आन्दोलन 29-5-2002)
    पुत्र शहीद स्वर्णसिंह लोहान, गुलकनी (हिन्दी रक्षा आन्दोलन 1957)
23. श्री नरेश लोहान पुत्र देवीराम लोहान, गुलकनी, किसान आन्दोलन 29-5-2002
24. श्री बिजेन्द्र शर्मा पुत्र सरदारा शर्मा, गुलकनी, किसान आन्दोलन 29-5-2002
25. हरिजन रामगोपाल पुत्र मंगल चमार, गुलकनी, किसान आन्दोलन 29-5-2002
26. श्री सिपाही धूपसिंह गांव जाजवान, आप्रेशन वर्ष 2003

❑❑❑

नौगामा खाप के नव-निर्वाचित सरपंचों की सूची

1. श्रीमती सुदेश देवी सरपंच रामराय मो. 9466771400
2. श्रीमती दीपिका साहू, सरपंच बीबीपुर मो. 9466554670
3. श्रीमती ममता खोखर, सरपंच घिमाना मो. 9466765050
4. श्रीमती राजवन्ती ढुल, सरपंच ईक्कस मो. 9996620250
5. श्रीमती सुमित्रा जागलान, सरपंच जलालपुर कलां मो. 9812378575
6. श्रीमती कृष्णा अहलावत, सरपंच ईटल कलां मो. 9992132141
7. श्रीमती सविता मोर, सरपंच जाजवान मो. 8684990111
8. श्रीमती मैना देवी, सरपंच ढाणी मो. 9813135820
9. श्री राममेहर ढुल, सरपंच पोकरी खेड़ी मो. 9991176989
10. श्री दलशेर बाल्मीकि, सरपंच ईगराह मो. 9467465979
11. श्री देवेन्द्र दूहन, सरपंच बहबलपुर मो. 9416774684
12. श्री रामफल सैनी, सरपंच रामगढ़ मो. 9813615920
13. श्री सुखविन्दर ढुल, सरपंच रामराय खेड़ा मो. 9997628266
14. श्री ज्ञानचन्द सैनी, सरपंच जलालपुर खुर्द मो. 9253040727
15. श्री विकास बूरा, सरपंच ईटल खुर्द मो. 9466735583
16. श्री जयवीर लोहान, सरपंच राजपुरा मो. 9991943424
17. श्री जयदीप लोहान, सरपंच गुलकनी मो. 9466644000
18. श्री सुरेश यादव, सरपंच गोबिन्दपुरा मो. 9999351042
19. गांव कर्मगढ़, बागनवाला व सिरसा खेड़ी में पंचायत नहीं है। केवल हर गांव से एक या दो पंच बनते हैं।

नौगामा खाप की प्राईवेट शिक्षण-संस्थाएँ

1. ब्राह्मण संस्कृति महाविद्यालय, गांव रामराय (1904 से संचालित)
   प्रधान-ऋषिकान्त शर्मा, दूरभाष 01681-282255
2. यदुवंशी शिक्षा निकेतन, गांव ईगराह। निदेशक : एस.डी. शर्मा, मो. 9813168486
3. आर.बी.एम. सी. सै. स्कूल, गांव ईगराह
   सुधीर रेढू, एम.डी.। मो. 9466735235
4. के.डी.एम. हाई स्कूल, गांव बीबीपुर। नरेन्द्र शर्मा, एम.डी.
5. ओशिष इन्टरनेशनल स्कूल, गांव बीबीपुर।
   सुनीता श्योराण एम.डी.। मो. 9812310999
6. विद्या विहार सी. सै. स्कूल, गांव राजपुरा।
   दलशेर लोहान, एम.डी.। मो. 9416556455
7. पी.आर.एम. सी. सै. स्कूल, गांव राजपुरा।
   सुखबीर लोहान एम.डी.। मो. 9466584125
8. ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल, गांव राजपुरा। महेन्द्र सिंह एम.डी.। मो. 9896414484
9. हर्ष इन्टरनेशनल स्कूल, गांव राजपुरा। धर्मपाल लोहान, एम.डी.। मो. 9416661213
10. दयानन्द पब्लिक स्कूल, गांव राजपुरा। सतबीर सिंह मुख्याध्यापक
11. एस.के. मैमोरियल स्कूल, गांव गुलकनी।
    हरीराम शर्मा, एम.डी.। मो. 9812512232
12. एस.डी. सी. सै. स्कूल, गांव घिमाना। सुखबीर नेहरा प्रधान। मो. 9812214865
13. सरस्वती हाई स्कूल, गांव घिमाना। रमेश शर्मा, मुख्याध्यापक।
14. आर्य विद्या मन्दिर सी. सै. स्कूल, गांव घिमाना।
    सुनील खोखर, एम.डी.। मो. 9416142990
15. बाल विकास सी. सै. स्कूल, गांव जलालपुर कलां रोड, जीन्द जंक्शन
    प्रदीप गिल एम.डी.। मो. 9050006860
16. हरीभूमि सी. सै. स्कूल, सोहलू कालोनी, जीन्द जंक्शन।
    दुलीचन्द एम.डी.। मो. 9416617054
17. सरस्वती सी. सै. स्कूल, गांव जलालपुर खुर्द।
    सुनील शर्मा, एम.डी.। फोन : 01681-225434
18. पहल आई.टी.आई., गांव जलालपुर खुर्द।
    नरेश पहल एम.डी.। मो. 9896084333

❑❑❑

चितंग, हाँसी शाखा, उगलखानी नहर

एक नहर आज की पश्चिमी यमुना नहर, हांसी ब्रांच-कल की चितंग व प्राचीन दृष्टिवत जल प्रवाह व स्वतन्त्र रहे सरस्वती जनतन्त्र का एक भाग यह नहर फिरोजशाह द्वारा हरियाणा प्रदेश में निकाली नालों का पानी सफीदों से बहकर आ रहे इन्हीं में एक में डाल कर नहर का रूप दिया गया था। इन्हीं में से एक प्रमुख चितंग या चतंग पुराना दृष्टवत् राजौद व अलेवा के बीच से वह इधर जाता था। यह उलगखानी सफीदों, जीन्द, हाँसी तक खेतों के लिए व आगे नये बसाये गये शहर हिसार-ए-फिरोजा के लोगों को पीने का पानी देने व नये शहर के बागों, उद्यानों, पार्कों, लानों को हरा-भरा रखने के लिए थी। फिरोजशाह ने अपने चचेरे भाई मोहम्मद तुगलक के वक्त यहां भयानक अकाल व उसकी कुनीतियों के कारण कृषि व कृषक को बर्बाद होते देखा था। फिरोजा सुलतान बनने से पहले वर्षों वर्ष हाँसी का गवर्नर रहा व यही रहते दिल्ली का सुलतान बना। वह दिल्ली के स्थान पर हिसार को भारत की राजधानी बनाना चाहता था। यह जबरपुर में उसके मामा थे, थानेसर खुद विवाहित था, फतेहाबाद में उसका बेटा फतह मुहम्मद चांखा विवाहित था। उसका पिता रजब यही का नागरिक व वासी था। सुलतान सहित उसकी तीन चार पीढ़ियां यहां रहती थी। हालांकि नहरों का निर्माण पूरे देश की अर्थव्यवस्था के उत्थान में था फिर भी सुलतान का यह काम जीन्द, सफीदों, हांसी, हिसार व शेष प्रदेश को एक विशेष उपहार या मेहर व हिमायत थी।

(यह इतिहास तारीख-ए-फिरोजशाही पर विशेषकर आधारित है)

इस नहर का पुराना नाम चितंग नहर है, इस बारे बहुत कम लोगों को जानकारी है क्योंकि सरकार के रिकार्ड में इसको हाँसी शाखा के नाम से जाना जाता है। इस नहर का चितंग नहर क्यों पड़ा, क्योंकि यह नहर पंडित चेतन ने निकलवाई थी जो जीन्द शहर का रहने वाला बहुत बड़ी भूमि का मालिक था। उसकी दादरी में भी काफी जमीन थी। चितंग नहर काफी पुरानी है। जानकार सूत्रों के अनुसार यह नजर जीन्द के राजा भागसिंह के समय निकाली गई है। अंटा हैड से निकल कर हिसार के बीड़ में खत्म हो जाती है। इस नहर से जीन्द जिले के सफीदों, पिल्लूखेड़ा व जीन्द खण्ड में सिंचाई की जाती है। एक शेख (मुसलमान) जो बरवाला का रहने वाला था उसकी काफी भूमि जीन्द व बरवाला में थी। पंडित चेतन व शेख महाराजा जीन्द के काफी करीब माने जाते थे। जीन्द रियासत की भूमि वर्षा के पानी पर निर्भर रहती थी, अगर वर्षा समय पर हो जाती तो फसल बोई जाती अन्यथा सारी भूमि मारू रह जाती थी। जमीन में पानी काफी गहरा व अच्छा नहीं था। यह नहर नौगामा खाप के गांवों के लिए जीवन रेखा है तथा यह नौगामा खाप के गांवों के बीच से गुजरती है। उसकी पूर्व दिशा में 13 गाँव तथा पश्चिम दिशा में आठ गाँव पड़ते हैं और सभी गांवों में इसका पानी लगता है। पंडित चेतन काफी समझदार व्यक्ति था, ने इस इलाके में नहर लाने का मन बनाकर यह नहर अंटा गांव से खुदवानी शुरू करवा दी। शेख नहर को बरवाला ले जाना चाहता था तथा पंडित चेतन नहर को जीन्द में लाना चाहता था। शेख हमेशा शराब के नशे में रहता था, जब शेख का नशा उतर जाता वह नहर की खुदाई का रूख बरवाला की ओर करवा देता तथा जब पंडित चेतन का जोर चलता वह नहर की खुदाई का रूख जीन्द शहर की ओर करवा देता था। इसलिए इस नहर में काफी मोड़ हैं। काफी समय बाद नहर के छोटे-छोटे मोड़ों को ठीक भी किया गया है तथा जो जमीन पुरानी नहर की बच गई थी उसको वर्ष 1959 से 1962 तक की किले बन्दी में जमींदारों के जमीन खातों में जोड़ दिया है। आखिर पंडित चेतन के अथक प्रयासों से नहर खुद कर जीन्द पहुँच गई तब शेख को पता चला फिर दोनों का झगड़ा भी हुआ तथा मुकदमा राजा की कचहरी में डाल दिया, कई वर्ष तक मुकदमा चला। राजा जीन्द ने अन्त में मजहबी फैसला करने के आदेश दे दिए। दोनों पक्षों के काफी लोगों की पंचायत हुई अन्त में फैसला डोला (शाक) देने पर हुआ जो अपनी लड़की का डोला दूसरे को देगा और उस लड़की से पैदा होने वाली सन्तान सारी जमीन जायदाद की मालिक होगी। पंडित चेतन ने शेख की लड़की से शादी करने का फैसला मान लिया।

पंडित चेतन ने शेख की लड़की से धर्म बदलकर निकाल कर लिया। जीन्द का बड़ा जमींदार बक्शी इसी परिवार की तीसरी पीढ़ी का था, जिसको वर्ष 1947 के हिन्दू-मुसलमान के झगड़े में लोगों ने मार डाला था।

इस नहर की लम्बाई जीन्द जिले के अंटा हैड से 0 बुर्जी से 238.5 बुर्जी (एक बुर्जी=1000 फुट) तक है, जीन्द जिले की सीमा खत्म होते ही गाँव राजथल के पास यह नहर दो भागों में बंट जाती है। एक का नाम हिसार शाखा व दूसरी का नाम पेटवाड़ शाखा हो जाता है, इन दोनों नहरों का अन्त हिसार में ही होता है। आज कल यह नहर पक्की बन गई है। जीन्द जिले में इस नहर पर 35 पुल हैं तथा इसमें से 10 माईनर (रजबाहे) निकले हुए हैं। इस नहर में आजकल 32 दिन के बाद पानी आता है, जो केवल सात दिन ही चलता है। जीन्द जिले के जमींदारों के लिए इस नहर का काफी महत्त्व है तथा लोगों के यह नहर जीवन रेखा है। इस नहर के निकलने से पहले इस इलाके में पानी काफी गहरा था। इस नहर के निकलने के बाद अंटा हैड से हिसार तक नहर के दोनों ओर पांच-पांच किलोमीटर तक जमीन का जल स्तर काफी ऊपर आ गया है।

इस नहर पर कैनाल विभाग के अन्टा, जामनी, खुँगा कोठी, जीन्द (राजा की कोठी), राजस्थल, नारनौंद व हाँसी के विश्राम गृह हैं। जयन्ता देवी मन्दिर से राजा की कोठी तक नहर की पटड़ी पर सड़क बनी हुई है और इस क्षेत्र में आज भी हजारों की संख्या में विशाल जामुन के पेड़, नहर के किनारे खड़े हैं जिनके जामुन बहुत ही स्वादिष्ट हैं।

❑❑❑

खाप के सज्जनों से सम्पर्क करने हेतु नाम, गाँव मोबाइल नम्बर सहित

1. गाँव रामराय

१. श्री कुलदीप सिंह ढुल	9416115460
2. श्री राजेन्द्र सिंह पूर्व सरपंच	9416946567
3. पं0 पूफलकुमार शास्त्री	9416365479
4. पं0 राममेहर अत्री, पूर्व सरपंच	9416854476
5. श्री हजारा सिंह	9896485833
6. श्री राममेहर ढुल	9466406515
7. पं0 पवन कुमार भारद्वाज	9050953088

2. ईगराह

1. प्रो0 दलबीर सिंह रेढू	9466075401
2. श्री अजमेर सिंह पूर्व सरपंच	946611695
3. कै0 राममेहर रेढू	9466962145
4. श्री नपफेसिंह प्रधन	8059357025
5. श्री बदन सिंह रेढू	8930091784
6. श्री महेन्द्र सिंह आर्य	9467656496
7. श्री मेहर सिंह पूर्व सरपंच	9812362066

3. बीबीपुर

1. डॉ0 दलबीर सिंह बीबीपुर	9416663566
2. श्री पालाराम बीबीपुर	9416556957
3. श्री नानूराम जागलान	9466011088
4. श्री ध्र्मसिंह साहू	9416719254
5. श्री आजाद सिंह पंवार प्रधन	9540519001
6. प्रो0 दयासिंह जागलान	9467566994
7. मा0 चन्द्रभान जागलान	9416424035

4. गांव राजपुरा ;भैणछ

1. श्री टेकराम लोहान	9416389357

2. श्री ओम प्रकाश पुत्रा प्रभुराम	9034731204
3. श्री ओम प्रकाश पुत्रा गणेशीराम	8053477003
4. श्री राजेन्द्र सिंह पुत्रा ध्र्मसिंह लोहान	9466629021
5. श्री रामपफल पुत्रा श्री अमरसिंह	09416948488
6. श्री रामस्वरूप मैनेजर	9068295808
7. श्री संदीप पुत्रा राजा राम ;युवाद्ध	9466825923

5. धिमाना

1. श्री ध्र्मपाल सैक्रेटरी	9896306563
2. श्री मामराज कालीरामणा	9729277694
3. श्री सुरेश खोखर	9729203800
4. श्री टेकराम नाई	9896427171
5. श्री वजीर सिंह	9991236899
6. श्री बलजीत सिंह सुपुत्रा श्री मौजीराम	9992060106
7. श्री औष्ण सैनी जिलेदार ;रि0द्ध	94169334627

6. जाजवान

1. श्री अजायब सिंह चहल पुत्रा बसाऊ	9034683533
2. श्री सतबीर सिंह पुत्रा बसन्ताराम	9729044514
3. मा0 बदन सिंह मोर	9466847075
4. श्री विजय सिंह मोर ;चालकद्ध	9728784701
5. श्री राजा पटवारी	9466592163
6. श्री ओमप्रकाश पटवारी	9467121945
7. श्री राजेश मोर	9896088282
8. श्री मानक शाह मोर	9466321862
9. श्री शिव कुमार	8571851511
10. श्री सतपाल पुत्रा जगन्नाथ	9896188835
11. श्री पूफलकुमार मोर भाजपा नेता	9813041355

7. पोकरी खेड़ी

1. श्री चन्द्रभान नम्बरदार	9812090317
2. श्री मेहर सिंह सुपुत्रा श्री माईराम	9813835684
3. श्री रणधीर सिंह प्रधन	9466254565
4. श्री रामदिया पुत्रा श्री अमरसिंह	9416947599
5. श्री जयभगवान नम्बरदार	94167242202
6. श्री मुकेश पुत्रा श्री दलीप सिंह	9896722278
7. श्री जगननाथ	9416947599
8. श्री राममेहर सरपंच	9991176989

8. ईटल कलां

1. श्री हरदेव सिंह दरोगा	9671805193
2. श्री दिलबाग सिंह पुत्रा दीवान सिंह	9466055510
3. श्री हवा सिंह नेहरा दरोगा	9467752633
4. श्री राजकुमार अहलावत	9467353285
5. श्री काला पुत्रा महाबीर मान	9466346783
6. श्री बलवान सिंह अभेराम	9992197226
7. श्री रमेश खटक पूर्व सरपंच	
8. श्री बारूराम जागलान	9813126739

9. जलालपुर कलां

1. श्री बलवीर पुत्रा ज्ञान सिंह	9416847099
2. श्री राजसिंह पुत्रा श्री विजय सिंह	9729900264
3. श्री राजकुमार पुत्रा सुनहरा सिंह	9728508807
4. श्री बिजेसिंह पुत्रा श्री श्यामसिंह	9996383106
5. डॉ0 सतपाल पुत्रा रामकिशन	9812627056
6. श्री वेदसिंह पुत्रा श्री रामदिया	9812503618
7. श्री सुभाष चन्द्र पूर्व सरपंच	8930864884
8. श्री मनपूफल जईया ;हाजीद्ध	9416548130

10. जलालपुर खुर्द

1. श्री पवन राठी 9991436819
2. श्री ध्यान सिंह पहल 9416193143
3. श्री मोहन प्रकाश सैनी 9816386971
4. श्री रायसिंह सैनी 9728289150
5. श्री नरेश पहल पुत्रा डॉ0 ओमप्रकाश पहल 8996084333
6. श्री सतपाल पहल 9812271434

11. श्री बहबलपुर

1. श्री बलबीर सिंह पूर्व चेयरमैन 01681-248400
2. श्री सुरेश बाल्याण 9416934616
3. श्री संजीव दूहन 9466592873
4. श्री कर्मवीर दुहन 9416560691
5. श्री रामानन्द पूर्व सरपंच 9812874930
6. श्री जसबीर अहलावत 9034466100
7. श्री लालचन्द लाठर

12. ईक्कस

1. श्री रणधीर सिंह प्रधन 8950895513
2. श्री धूपसिंह मैनेजर 9996682540
3. श्री वीरभान ढुल पूर्व कर्मचारी नेता 9416560090
4. श्री सतबीर सिंह कोच 9996508565
5. श्री जयबीर सिंह 9812868603
6. श्री गजेसिंह पीटीआई 9416661924
7. श्री मोहित ढुल युवा नेता 8976737100
8. श्री सतबीर सिंह पफौजी 9466744060

13. गुलकनी

1. मा0 राजसिंह लोहान 9466583354
2. श्री छोटूराम शर्मा 9671225572
3. श्री रामपफल नम्बरदार 9813871487

4. श्री ओमप्रकाश लोहान 9467054032

14. रामगढ़

1. श्री औष्ण चन्द पुत्रा श्री भरथसिंह 9416775122
2. श्री महाबीर सिंह यादव 9416606133
3. श्री जिलेसिंह पूर्व सरपंच 96713391542

15. ईटल खुर्द

1. श्री सूरजमल पहलवान 9416140772
2. श्री ध्नराज गिल 9729461257
3. श्री प्रदीप गिल9050006860
4. श्री प्रकाश चन्द्र बूरा 9466205999
5. श्री रामचन्द्र रोहिल्ला

16. गोविन्दपुरा

1. स0 तेगवीर सिंह सिबिया 9414100569
2. श्री अशोक पुत्रा श्री जयसिंह 9416170390
3. श्री आजाद पुत्रा श्री लखीराम नम्बरदार 9812483122
4. श्री हवासिंह चौकीदार 8053530436

17. श्री रामराय खेड़ा

1. श्री भरथसिंह ढुल 9991063170
2. श्री तिजेन्द्र सिंह ढुल वकील 9355215000
3. श्री राहुल ढुल ;युवाद्ध 8396901002

18. ढाणी

1. मा0 रामचन्द्र महल 9729001196
2. श्री पूफल कुमार पूर्व सरपंच 9466657210

19. बागनवाला

1. श्री रामराजी पुत्रा श्री पूफलाराम	9416603108
2. श्री राकेश जांगड़ा	9466606040
3. श्री मनीपाल पुत्रा ध्नपतसिंह	9896449308
4. श्री औष्ण पुत्रा बालूराम	

20. कर्मगढ़

1. श्री रामदास यादव	9466394214
2. श्री औष्ण यादव	9416184563
3. श्री राजेन्द्र सिंह नम्बरदार	

21. सिरसा खेड़ी ;बस्तीद्ध

1. श्री शमशेर सिंह बडसर	9416133685
2. श्री बलवान सिंह सैनी नम्बरदार	9466329336

❑❑❑

नौगामा खाप पर गीत

म्हारी नौगामा खाप की अजब कहानी है।
म्हारी विरासत म्हारी धरोहर बहुत पुरानी है।।

1. पहले 9 गामा होया करदे, अब म्हारे 21 गाम हैं।
रामराय का रामह्रदय तीर्थ पवित्र धाम है।
इक्कसवां तीर्थ से ईक्कस गांव का खेलों में बड़ा नाम है।
पोकरी के पुष्कर तीर्थ ने भी जाणे लोग तमाम हैं।
ईगराह की ईगराई देवी नहीं होण दे हाणी है
म्हारी विरासत, म्हारी धरोहर.....

2. बीबी वाला गाम बीबीपुर की पंचायत हाईटैक कहलाई है
भाईचारे की मिसाल बहबलपुर ने खूब निभाई है
माना होए घी के कारण घिमाना ने सबसे ली भलाई है
शादी जाट ने बसाया शादीपुरा इब गोविन्दपुरा होरा हवा हवाई है।
कर्मा सेठ की जमीन में बसा कर्मगढ़ की अभी नई जवानी है
म्हारी विरासत, म्हारी धरोहर.....

3. रामजस राठी के नाम से बसे रामगढ़ गांव भी नक्शे पे आया है
बाबा सुखदेव मुनि गोशाला से ढाणी मन को भाया है
ईटल गांव का अटल तीर्थ महाभारत के समय का बताया है
बूरे और गिलों ने मिलकर सीसर नाम अपनाया है
जोजू जाट के जाजवान में पानी की बड़ी परेशानी है
म्हारी विरासत, म्हारी धरोहर.....

4. माणो बहन का गांव भैण राजा ने राजपुरा लिखवाया है
राग थाट बिलावल पर बसा गांव गुलकनी कहलाया है
बागों की जगह बसा गाम बागनवाला नया-नया नक्से पर आया है

जैला वाला खेड़ा (थेह) टोहे से बड़ी मुश्किल ते पाया है
सिरसा खेड़ी ने भी पोकरी से अलग पंचायत बनाने की ठानी है
म्हारी विरासत, म्हारी धरोहर.....

5. नौगामा खाप के 26 वीर शहीद अमर होरे हैं
गामा के युवा क्लबों में सभी बड़े मेहनती छोरे हैं
श्योलाल अर गणेशीराम ने रामराय ते आगे खेतों में डाले डेरे हैं
चिराग जला के बसा छोटा जलालपुरा में फैक्ट्रियां के वारे न्यारे हैं
छान घाल के बसा बड़ा जलालपुरा,
महेन्द्र जागलान ने लिखी इसमें अपने मन की वाणी है
म्हारी विरासत म्हारी धरोहर बहुत पुरानी है।।

❑❑❑

बदलते समाज की रागनी

वा पहले आली हवा रही ना, पहले आला पानी।
होगी खत्म कहानी, ना मिलती कोई भी चीज पुरानी।।

पहले आले कोई भी, इब कोई ठाठ ना रहे,
जोहड़ के ऊपर नाहा करते, घाट ना रहे।
घी तोला करदी दादी, वे बाट ना रहे।
धोती खंडके आले, जाट ना रहे।

पैदल चल कै जाया करते, बाट ना रही
बालकाँ पै पड़ा करती, डाट ना रही।
दरवाजाँ मैं घला करती, खाट ना रही।
गामाँ के में बाणिया की, हाट ना रही।।

पत्तल ऊपर बैठ कै वो खाना ना रहा,
पाटड़े पै बैठ कै, वो नहाना ना रहा।
घूंघट भीतर बीर का शर्माना ना रहा,
टोलियाँ मैं बैठ कै, वो गाना ना रहा।।

दामन पहर के चाला करदी, बीर ना रही,
हारे ऊपर बना करती, खीर ना रही।
बाहण और भाई आली, धीर ना रही,
पहले आले रांझे, और हीर ना रही।।

दरवाजे पै लाग्या करते, वे कवाड़ ना रहे,
बैल गाड़ी और जूवे आले, नाड़ ना रहे।
पहले आले बोझड़े और झाड़ ना रहे,
चोर जो लगाया करते, पाड़ ना रहे।।

पहले आला कोई भी, खेल ना रहा,
आपस के मैं भाई का मैल ना रहा।
दीये के म्हा घल्या होया, तेल ना रहा,
बहुत कम रहगे मानस, मेल ना रहा।।

पहले आली, इब पढ़ाई ना रही।,
ढाँऊ-ढाँऊ पौना, और सढ़ाई ना रही।
आदर मान, और वा बड़ाई ना रही,
हांगे और जोर की, लड़ाई ना रही।।

डांगरा के इब, कोई पाली ना रहे,
चार बजे जोड़ा करते, हाली ना रहे।
बाग की रूखाली करते, माली ना रहे,
पहले आले जीजा, और साली ना रहे।।

पहले आला जोर, और शरीर ना रहे,
साधु संत पक्के, फकीर ना रहे।
राह चलते रूक जाया करते, वे राहगीर ना रहे,
औरत के सिर पै, वे चीर ना रहे।।

कट्ठै बैठ कै, वो बतलाना ना रहा,
बालकाँ नै, वो समझाना ना रहा।
कुणबे का खेताँ मैं, जाना ना रहा,
हांसिया मै देते थे, उल्हाना ना रहा।।

कष्ट की कमाई के, वे दाम ना रहे,
पहले आले शहर, और गाम ना रहे।
काम करकै आया करदे, वे आराम ना रहे,
पहले आले बालकाँ के, नाम ना रहे।।

पहले आले वैद्य और दवाई ना रही,
होया करते ब्याह और सगाई ना रही।
बालकाँ नै पैदा करदी, वे दाई ना रही,
लिया दिया करते, वो बधाई ना रही।।

लावैं थी सन्देश चिट्ठी, वे तार ना रहा,
पहले आले बीरां के, सिंगार ना रहा।
धर्मपत्नी और भरतार ना रहा,
साच्ची कहूं पहले आला प्यार ना रहा।।

पहले आले दानी, और दान ना रहे,
पंडित लोग जो दिया करदे, वे ज्ञान ना रहे।
बात ऊपर मर जाया करदे, वे यार ना रहे,
योगी जो लगाया करते, वे ध्यान ना रहे।।

पहले आले कुएं, और जोहड़ ना रहे,
सर के ऊपर सजा करदे, मोड़ ना रहे।
ब्राह्मण और नाई आले, वो जोड़ ना रहे,
बूढ़े बैठ तोड़ा करदे, वे पोड़ ना रहे,

खेत मैं बनाया करके, होल ना रहे,
सांग देखण जाया करे, वे टोल ना रहे।
गुड़ के वे मीठे मीठे, चोल ना रहे,
पहले आले राही, और डोल ना रहे।।

रेजे आले कुर्ते, और दौहर ना रही,
घाघरीं मैं लाग्यी हुई मोहर ना रही,
मन में जो उठा करदी, वा लोर ना रही,
बड़े बूढ़े मानस की, वा टौर ना रही।।

मन के वा सच्चे, इब मीत ना रहे,
सामण, फागण, कातक आले, गीत ना रहे।
पहले आले रीत और रिवाज ना रहे,
पहले आले हार और जीत ना रहे।।

माट्टी आले, अब चूल्हे ना रहे,
मटणा लगाते थे, वे दूल्हे ना रहे।
उठा कर दी गीताँ की गुन्जार ना रहे।
जोहड़ाँ ऊपर घले हुए, झूले ना रहे।।

बालकाँ कै पड़ा करदी, लार ना रही,
भाज कै लुका करदी, साल ना रही।
डंडा गुल्ली खेला करदे, वे जाल ना रही,
जीवनपुर गाम की, तो गाल ना रही।।

पहले आला प्यार, और जुदाई ना रही,
होया करदी सिलाई, व तुरपाई ना रही
दादा जगन नाथ का, तु ध्यान धर ले
रणबीर सिंह, गुरु दया आप कर ले।
सहगल जी के चरणां म्हं जाके पड़जा
खाली पड़े ज्ञान के भण्डार भर ले।।
रामकेश यूं तेरी खता, आती कलम उठानी।।

❑❑❑